एक और स्वर्ण जयंती

राजेन्द्र श्रीवास्तव

एक और स्वर्ण जयती

सुनील साहित्य सदन
3320 21 जटवाड़ा दरियागज
नई दिल्ली—1 000 (भारत)
फोन ( ) ✣

एक और स्वर्ण जयती

राजेन्द्र श्रीवास्तव

ISBN 81 88060 15 1

मूल्य एक सौ पचास रपये

प्रकाशक **सुनील साहित्य सदन**
3320 21 जटवाडा दरियागज
नई दिल्ली 110002 (भारत)

सस्करण प्रथम 2002

कलापक्ष चेतनदास

शब्द सयोजक कल्याणी कम्प्यूटर सर्विसेज
दरियागज नई दिल्ली 110002

मुद्रक अजीत प्रिटर्स
मौजपुर दिल्ली 110053

EK AUR SWARNA JAYANTI
by RAJENDRA SRIVASTAVA P R 150 00

P bl l d By **SUNIL SAHITYA SADAN**
3 20 21 J tw a, D ry g J
N w D lh 110002 (INDIA)
T l (011) 270715 3282733

केतकी पूनम
शुभाकर और भारवी को
सस्नेह

नाम मे क्या रखा है?

नाम मे क्या रखा है? एक सदी गुजरने के बाद मुझे लगा कि नाम मे बहुत कुछ है। तीन दशक से भी अधिक समय तक कलमी नाम से व्यग्य लेखन करने के बाद मेने सोचा मित्रो ने भी कहा कि अब कलमी नाम को कलम कर दो

मन उलझ गया दुविधा मे पड गया कि मे पाठक जो मेरे लिए असली समालोचक हे क्या कहेगे कुछ लोगो ने हौसला बढ़ाया कि लोग बडे बडे स्कैम करके बडी शान से सिर उठाकर चल रहे हे तुमने तो कुछ किया ही नही। उलटे पिछले दो सग्रह— अब फाइले नही रुकतीं और दास्ताने दफ्तर मे जो पिछली सदी मे छपे थे परिचय मे बता ही चुके हो कि निशिकात का वास्तविक नाम क्या है यह भी साफ करना चाहता हू कि इस नाम को छोड नही रहा हू, बल्कि अपने नाम के साथ हमेशा हमेशा के लिए जोड रहा हू।

नई सदी मे मै अपना पहला सग्रह वास्तविक नाम के साथ प्रस्तुत कर रहा हू। मुझे भरोसेमद सूत्रो ने बताया कि इन रचनाओ को लोग उसी सदर्भ से जोडकर पढ़ेगे। लेकिन इसी के साथ मै यह भी आग्रह करूगा कि ये रचनाए तीन दशक की अवधि मे अलग अलग समय पर लिखी गई हैं इसलिए पढते समय उस समय सदर्भ को भी ध्यान मे रखें तो किसी भी प्रकार की परेशानी नही होगी। इसी भरोसे के साथ तरह तरह की जयतियो के बीच प्रस्तुत है एक और स्वर्ण जयती ।

—राजेन्द्र श्रीवास्तव

अनुक्रम

हरी घास पर चितन

बकार आदमी दर्शन की ओर उन्मुख होता है यानी चितन करता है। आज तक म चितन ही कर रहा हू। चितन अब मेरी हाबी है। ओर यही मेरे चितक की लाचारी हे। वेसे तो हर आदमी चितन करता है क्याकि दुनिया मे शायद कोई आदमी ऐसा नही होगा जिसे चिता न हो। और जब चिता होगी तो आदमी चितन करेगा ही। इस तरह चिता करने वाला हर आदमी मेरी नजर मे चितक है। देखिए मुफ्त ही यह सेहरा मंन आपके सिर भी बाध दिया बहरहाल उस दिन मेने साचा कि किसी पार्क म चलकर कुछ क्षण हरी घास पर चितन करू। लोग कितने अहसान फरामाश हाते ह कि हरी मुलायम घास को कुचलते है उसके बारे मे कुछ सोचत नही। मैंने जब तय कर लिया कि हरी घास जैसी आम चीज को महत्त्व प्रदान करूगा तो यह करके दिखाऊगा भी। यह बात दीगर है कि वह महत्त्व सिर्फ दिखावा भर हो।

म चितन के उद्देश्य से जब पार्क मे घुसा तो चारो तरफ हरापन दिखाई दे रहा था। घास पर बैठकर मैंने चितक की मुद्रा बनानी शुरू की। करीब दस मिनट बाद पोज बना पाया। उसके बाद मेंने चितन की प्रक्रिया स्टार्ट की। घास को घास क्यो कहते हें? घास हरी क्यो है गुलाबी क्यो नही आदि आदि।

अभी यह चितन थोडा ही आगे बढा था कि मुझे याद आया कि घास खाने से चितन मुखर होता है। मैं घास उखाड़कर खाने लगा—यह सोचकर कि घास खाना कभी न कभी रग लाएगा ही। चितन ठोस होगा। अभी मे यह सोच ही रहा था कि पार्क मे मुझे दुनिया का सबसे बडा दार्शनिक नजर आ गया। उस दार्शनिक का चितन आज तक कोई समझ नही पाया फिर म तो इस फी ड मे बिलकुल नया था। वह दार्शनिक धीरे धीर मेरे पास आया और चुपचाप बैठ गया। उसने मुझसे कुछ नही कहा लेकिन मेगी ओर नजरे उठाकर देख जरूर लेता था।

दार्शनिक ने रेकना शुरू किया। अपना कार्यक्रम समाप्त कर वह बोला

अगर आप मदद कर तो मैं मोटा हो सकता हू।

मेंने पूछा वह कैसे?

आप इस मैदान की सारी घास उखाड डालिए। मैदान पूरी तरह साफ हो जाए।

मेने उसके आदेश का पालन शुरू कर दिया। कई दिन बीत गए। वह दार्शनिक उसी मैदान म घास चरता रहा। मैदान साफ हो चुका था। मेने यह बात बहुत बारीकी से नोट की कि दार्शनिक महोदय मोटे होते जा रहे थे।

दार्शनिक की इस रहस्यमय प्रगति के बारे मे जानने की इच्छा बलवती हो उठी। वह एक पेड़ के नीचे ब्रेक फास्ट के बाद आराम फरमा रहे थे कि उनके पास पहुच गया। पहुचते ही मेंने उन्हे प्रणाम किया और पूछ लिया प्रभु क्या आप इसका रहस्य बता सकते हे कि मैदान मे घास नही होने पर भी आप मोटे केसे हो गए जबकि पहले स्थिति बिलकुल उलटी थी।

उन्होने कहा इसका एकमात्र कारण है अहसास हा। सफाचट्ट मैदान मे मुह मारते हुए मैं आगे बढ़ता जाता हू। और थोडी देर बाद जब मुडकर मैं देखता हू तो चारो ओर सफेदी नजर आती है। इससे मुझे यह अहसास होने लगता हे कि मैदान की सारी घास में ही खा गया हू। इसी अहसास से मैं मोटा होता जाता हू, जबकि खाता नही के बराबर हू।

मै धन्य धन्य हो गया। उनको प्रणाम किया और चितन के अखाड़े से भाग निकला। सोचने लगा कि महान् दार्शनिक का मोटापा अहसास मात्र से बढ जाता है यानी घास न होने पर भी वह मोटे हो जाते हैं। और एक मै हू कि इतना खाने के बाद भी सींकिया पहलवान हू।

मेरा चितन पुन हिलोरें लेने लगा। मैं अब यह चितन करने लगा हू कि अभी तक मैं मोटा क्यो न हो सका? आखिर मुझमे और उस दार्शनिक मे फर्क क्या है?

जब मैं चुनाव लडने गया

जब किसी शरीफ आदमी की मौत आती है तो वह चुनाव लड़ता है। कहने का मतलब यह कि इस बार मुझे भी चुनाव लडने का शौक चर्राया। यह शौक भी अकारण नही जन्मा। मेरी पत्नी अकसर ताने देती रहती है कि तुम कुछ नही बन सके। कुछ नही कर सके। अरे! कुछ नही बन सकते तो एम पी एम एल ए ही बन जाओ! इसके लिए किसी योग्यता की जरूरत नही पडती!

अब वह सुनिए जो मुझ पर गुजरी। सबसे पहले मैंने सोचा कि किसी आल इडिया पार्टी का टिकट मिल जाए तो किस्मत खुल जाए।

मै एक आल इडिया पार्टी के दफ्तर मे पहुचा। वहा तो वैसी ही लबी लाइन थी जैसी राशन के लिए होती है।

मैंने देखा कि हर आदमी के हाथ मे एक एक लिफाफा था जबकि मैं खाली हाथ था। धीरे धीरे लोग आगे बढ़ते गए। मैं उनके साथ साथ खिसकता गया।

कमरे के भीतर दो मेजे और चार कुरसिया थी। सभावित उम्मीदवार एक मेज पर लिफाफा रखता फिर दूसरी मेज वी ओर बढ़ जाता। वहा उसे एक फार्म मिलता। कमरे मे तमाम लोग उसी तरह एक दूसरे से पूछ पूछकर फार्म भर रहे थे जैसे इम्तिहान मे बच्चे पूछते हैं।

जब मेरी बारी आई तो सीधे जाकर फार्म वाली मेज के सामने खडा हो गया। कुरसियो पर बैठे चारो आदमी मुझे खा जाने वाली नजरो से देखने लगे।

एक ने मूछे ऐठते हुए पूछा आपको हमारी वर्किंग नही मालूम लगता है बिलकुल नए है।

मने विनयपत्रिका स्टाइल मे कहा जी हा।

तभी। वरना पहले लिफाफा देते जिसमें नान रिफडेबल राशि पार्टी के लिए होती है।

मुझे नही मालूम था। मैने कहा।

ता किसी ज्योतिषी ने कहा है कि आप चुनाव न लडिए।

नही लकिन मैं लडना चाहता हू। मे भी अकड गया।

उस आदमी ने सोचा कि मे जरूर किसी बडे अच्छे पार्टी वाला हू, इसलिए वह विनम्र हो गया।

उसने पूछा आपको पार्टी हाईकमान ने भेजा है?

नही

आप किसी सेटल या स्टेट मिनिस्टर के नजदीकी या दूर दराज के कुछ लगते हे

नही

आपका किसी उद्योगपति से कोई कनेक्शन है

नही

एक ने चिढकर कहा आपने कभी बोफोर्स हवाला चारा जैसा कोई घाटाला किया हे

नही। म बहुत नेक और ईमानदार आदमी हू।

चारो जोर जोर से हसने लगे जैसे मैने कोई हसने वाली बात कह दी।

फिर एक ने पूछा आपकी उम्र क्या है?

मने कहा पाच ऊपर पचास।

अरे जाकर कही गुल्ली डडा खलिए। पालिटिक्स मे साठा ही पाठा होता है। हमारे हिसाब से आप अभी नाबालिग हैं।

इस मुल्क मे अठारह वर्ष का युवक बालिग माना जाता है और आप मुझे नाबालिग कह रहे हैं? मैने तर्क किया।

वाट लेने और देने मे बालिग होने का क्राइटेरिया अलग होता है। आप पॉलिटिक्स नही समझते इसलिए हमारी बात नही समझ पा रहे हे। एक ने समझाया।

मुझे बहुत बुरा लगा और मैं टिकटदाता के चमचो को समझाने लगा कि मैने राजनीतिशास्त्र मे एम ए किया है।

एम ए वेमे से काम नही चलता है। थ्योरी और प्रैक्टिकल मे बहुत अतर होता है। आप समझते है या नही

मैने सिर हिलाया। लेकिन मेरे भीतर का नेता उबाल खा बैठा। मैंने पूछा कोई चास नही दे सकते?

एक बुजुर्ग से सज्जन ने कहा आप हमारा टाइम खराब कर रहे हें और

अपना भी।

दूसरे ने कहा   अभी हम आपको पोलाइटली समझा रहे है। समझाने को तो हम और तरीके से भी समझा सकते हैं।

तीसरे ने कहा   अभी आप नाबालिग हैं बालिग होने के बाद आइएगा।

चोथ ने कुरसी से उठते हुए कहा   जाते हे या

तभी मै चीख उठा   जिन्हे टिकट नही मिला वे चले हमार साथ मैं आल इडिया घोटाला पार्टी बना रहा हू।

थोडी ही देर मे सैकडो लोग हमारे पास आ गए।

इस्तीफो का मौसम

आजकल इस्तीफो का मौसम है। हर रोज कोई न कोई नेता अपनी पार्टी से इस्तीफा देकर दूसरी पार्टी मे शामिल हो रहा है यानी अपनी आस्था और नेतृत्व बदल रहा है। कइयों की आस्था तो कुछ ही दिनो मे कई कई बार बदल गई। धन्य ह य नेता इनके सिद्धात और आस्था। मन होता है इनसे कहू कि आप किसी दिन बिना जूते चप्पल पहनकर आइए जिससे आपकी चरण रज लेकर हम अपने को धन्य कर सके।

सचमुच हमारे ये नेता जनत की सेवा करने के लिए दल बदल रहे हैं। जब एक पार्टी में रहकर इनको जनता की सेवा का अवसर नही मिलता तब दूसरे दल मे चले जाते है—शायद वहा जन सेवा का मौका मिल जाए। असल मे अब सबको जनता की याद आ रही है क्योंकि चुनाव आ रहे हैं। अब ये जनता के लिए रो रहे हैं देश के भविष्य की चिता कर रहे हैं। लेकिन पौने पाच साल तक इन्हे सिर्फ अपनी चिता थी—अपने भाइयो की भतीजो की और रिश्तेदारो की चिता थी।

मेरी समझ से तो ये सब अवसरवादी है और चुनाव के लिए टिकट के चक्कर म तीन पाच कर रहे है। उसी पार्टी में रहना चाहते है जहा इनको चुनाव के लिए टिकट मिल सके। टिकट नही मिलेगा तो बेचारे कहा जाएगे जनता की सेवा कैसे कर पाएगे।

एक बार चर्चा का बाजार तब गरम हुआ था जब बोफोर्स का गड़ा मुरदा उछालकर एक सौ से अधिक नेताओ ने ससद से त्यागपत्र दे दिया था। इन नेताओ से कोई पूछ कि जब चुनाव मे चार पाच महीने रह गए तभी इन्होने बोफोर्स को मुद्दा क्या बनाया बोफोर्स का मुद्दा तो काफी पुराना है। उस समय इन लोगो ने यह कदम क्यों नहीं उठाया? जनता की अदालत मे पहले ही जाना चाहिए था।

वैसे अब ये नेता बड़ी शान से अपने चुनाव क्षेत्र म घूम घूमकर कह सकते ह— मुझे कुरसी का मोह नही। कई महीने की तनख्वाह और भत्तों को मैने

ठोकर मार दी। म आप लोगो की सेवा करना चाहता हू मै असली सेवक हू।

मे भी इन नेताओ के त्याग से बहुत प्रभावित हुआ। सोचने लगा कि ये लोग अभी तक कहा थे जब बोफोर्स पहले उछला था तब इन लोगो ने क्यो इस्तीफा नही दिया? उसी समय इस्तीफा दे देते तो अब तक इनकी पूजा जिदा शहीदो की तरह होने लगती। लेकिन साल दो साल पहले नौकरी से इस्तीफा दना बडा मुश्किल हाता है। अगर सरकार स्वेच्छिक अवकाश ग्रहण की सारी सुविधाए इन नेताओ को देने की घोषणा कर देती तो ज्यादा अच्छा होता। आम के आम और गुठलियो के दाम। आर्थिक नुकसान भी नही होता और खून लगाकर शहीद भी हो जाते।

इन नेताओ के इस्तीफो पर आम प्रतिक्रिया जो भी हो लेकिन अचानक उस दिन एक पुराने नेता से मुलाकात हो गई। उन्होने इस्तीफा नही दिया था। मैने पूछा आपने इस्तीफा क्यो नही दिया?

मै अपने मतदाताओ से विश्वासघात नही कर सकता। उन्होने मुझे पाच साल के लिए चुना है तो पाच साल बाद ही जाऊगा। उन्होने जवाब दिया।

लोग आपकी आलोचना कर रहे है सरकारी एजेट कह रहे हैं।

कहने से क्या होता है मै जो हू, वही रहूगा।

लेकिन सबके साथ अगर आप भी त्यागपत्र भेज देते तो एकता और मजबूत होती। मैने तर्क दिया।

एकता है ही कहा उन्होने कहा एकता के नाम पर सिर्फ ड्रामे हो रहे है और ये चुनावो तक चलते रहेगे। यही इन नेताओ की नियति है।

यह कहकर वह कुछ गभीर हो गए। थोडी देर सोचने के बाद बोले रही त्यागपत्र की बात तो त्याग मेरे जीवन का आदर्श रहा। त्याग के सिवा कुछ किया ही नही लेकिन त्यागपत्र (वह कुछ शरमा गए) लिखने की अब उमर ही नही रही मेरी। सत्तर साल की उमर मे मै क्या पत्र लिखूगा? वैसे मेरी समझ मे त्यागपत्र देना कोई त्याग नही है। यह तो एक स्टट है।

किस्सा नकली साली का

साली के साथ बीते दिन याद आते ही लाग हसी खुशी मे डूब जाते हे लेकिन मरे चेहरे पर बारह बज जाते है। मै मुहर्रमी चेहरा बनाए अपनी नकली साली की याद म खो जाता हू। उसका खूबसूरत चेहरा और उसकी कारगुजारिया मन को कचाटने लगती ह। आप कहेगे कि साली की याद आते ही आदमी का मन गुदगुदा उठता हे लेकिन जब साली नकली हो तब खुशी कैसे असली हो सकती है आर जब नकली साली कुछ ऐसा कमाल कर गई हा कि चार साल बाद भी बुरा हाल हो रहा हो तो उदास न न्होऊ गाना गाऊ जो मुझ पर गुजरी वही आप पर गुजरती तो आप शायद रोते लेकिन मेरी हिम्मत दखिए कि मै केवल उदास होकर सब्र कर लेता हू। दास्ताने साली कुछ इस तरह शुरू हाली है—

एक शाम जब मे आफिस से घर पहुचा तब बीवी के अलावा उन्नीस बीस साल की एक खूबसूरत लडकी को देखकर मै अचरज मे पड गया। लेकिन उसने तपाक से हाथ जोडकर कहा नमस्ते जीजाजी

मेने शरमाते हुए नमस्ते का जवाब दिया और सिर झुकाकर अपने काम मे लग गया क्योकि उसकी तरफ देखता रहता तो बीवी के मन मे गलतफहमी हो जाती है। हालाकि उसे बार बार देखने की इच्छा हो रही थी लेकिन मेरे और उसके बीच मे पत्नी दीवार बनी थी।

न्बीवी ने कहा यह तुम्हारी छोटी साली है। मेरी बीवी को जब साडी खरीदनी होती है तभी आप शब्द से सबोधित करती हे।

लेकिन तुम्हारी तो कोई छोटी बहन है नही फिर ? मैंने पूछा।

अरे यह मेरी बचपन की सहेली लिली है। कल इसका यहा इटरव्यू है। एक दिन के लिए आई है। वैसे तो यह शाम को इटरव्यू खत्म होने के बाद जाने का कह रही थी लेकिन मैने ही इसे कहा कि एक दिन रुक जाओ।

बहुत अच्छा किया। मने कहा। मन ही मन गुदगुदी हो रही थी कि चला कम से कम एक दिन तो हसते बोलते अच्छा कट जाएगा। फिर मैंने लिली

की ओर देखकर कहा आप केसी हे

आप जबसे आए ह दीदी से ही बाते किए जा रहे है। मुझे तो लिफ्ट ही नही दे रह ह। उसकी स्पष्टता देखकर मे दग रह गया।

एसी बात नही हे। मैंने बीवी के डर स सिर झुकाए झुकाए कहा नए मह्मान के बारे म जान बूझे बिना क्या बाते करू?

वाह जीजाजी दीदी ने सब कुछ तो बता दिया फिर भी बहाने बना रहे ह। यह कहकर उसने मेरी पत्नी को कुछ इस तरह धक्का दिया कि वह बेचारी मरे ऊपर गिरती गिरती बची।

लेकिन उसका गुस्सा उतरा मेरे ऊपर अब यहा खडे खडे क्या देख रहे हो? जाओ कपडे बदलो मै चाय बनाकर लाती हू। बीवी ने कुछ इस तरह घूरा कि न चाहते हुए भी मुझे जाना पडा।

चाय और रात के खाने के बीच लिली हम लोगो से कुछ इस तरह मिली जसे वर्षों से हमारे घर म रहती हो। वह अपनी दीदी के साथ मिलकर मेरा तरह तरह से मजाक उडान और किस्से सुनाने मे लगा रही। ऊपर से गभीरता का लबादा ओढे में उसके ऊपर लट्टू होता जा रहा था। मेरा मन भी उससे मजाक करने के लिए उफान मार रहा था लेकिन बीवीनुमा तूफान मुझे रोक रहा था। मै कुढ़ उठता कि बीवी एक पल के लिए भी लिली को अकेली क्यो नही छोड़ती?

अपनी नकली साली के लिए मुझे कई कुरबानिया करनी पड़ी। बाहर बरामदे में चारपाई बिछाकर सोना पडा जहा मच्छरो का साम्राज्य था ओर लिली अपनी दीदी के साथ पखे के नीचे सोई। अब मै सोचने लगा कि यह बला जितनी जल्दी टले उतना ही अच्छा है।

मुझे अपनी दुर्गति पर कोई गिला नही। गिला इस बात का है कि एक बात ऐसी हो गई जिसके ताने आज भी सुनने पड रहे है। जब भी कोई बात होती है बीवी मुझे नकली साली लिली की याद दिला देती है और मुझ खामोश हो जाना पडता है। उस समय मुझे लिली उर्फ अपनी नकली साली पर इतना क्रोध आता है कि मिल जाए तो कच्चा चबा जाऊ।

असल मे बात यह हुई कि जाते वक्त उसने मेरी बीवी से कहा दीदी! कोई साडी हो तो दे दो पहनकर चली जाऊ। घर पहुचकर तुरत पार्सल कर दूगी।

हा हा बीवी ने कहा क्यो नही जो पसद हो ले लो। और उसने अपनी सारी साडिया बक्से से निकालकर रख दीं।

लिला को वही साडी पसद आई जो वर्षो की बचत के बाद मैने खरीदी थी और वह मेरी बीवी को जान से भी प्यारी थी।

बीवी न मरी ओर देखा। मैने कहा हा हा ले जाओ। लेकिन घर पहुचते ही भज देना।

उसन मुसकराकर कहा यह भी कोई कहने की बात है जीजाजी

जात जाते वह राहखर्च के लिए मुझसे सौ रुपये (मनीआर्डर से वापस भेजने का वायदा करके) ले गई। उसे स्टेशन पर गाडी मे बिठाकर जब हम घर लौटे तब बीवी बोली तुम्हारी ही वजह से मेरी साडी गई है। अगर वापस नही लौटी तो देखना तुम्हारी क्या गति बनाऊगी।

तुमने भी तो सारी साडिया निकालकर रख दी। एक दे देती। मैने कहा।

पत्नी बोली मैने तुम्हे हलके से इशारा भी किया था लेकिन तुम तो उसकी खूबसूरती म डूबे थे। पता नही लड़की देखते ही तुम्हारी अक्ल कहा घास चरने चली जाती है।

यह आरोप सुनकर मेरा पारा सातवे आसमान पर पहुच गया तुम्हे भी तो देखकर मेरी शक्ल घास चरने चली जाती है।

पत्नी ने धमकी दी कि अगर साडी वापस न लौटी तो अगली तनख्वाह मे ही तीन साडिया खरीदेगी।

लिली को गए आज चार वर्ष हो गए। साड़ी और रुपये की कौन कहे उसका एक पत्र तक नही आया। तब से मेरी क्या हालत हो रही है—यह मै ही जानता हू। बीवी उसकी याद दिला दिलाकर मुझे कोसती रहती है। वह सारा दोष मेरे सिर मढ देती है।

और मैं हू कि हारे हुए सिपाही की तरह सब कुछ सह लेता हू। तबसे जाने कितनी साड़िया बीवी खरीद चुकी है लकिन उसकी शिकायत ज्यो की त्यों बनी हुई है ओर शायद मरते समय तक बनी रहेगी।

चुनाव जीतने का तीन-सूत्री कार्यक्रम

मंन चुनाव जीतन क लिए तीन सूत्री कार्यक्रम तैयार किया है। यह उसी तरह से हे जस वाषिक परीक्षा से पूर्व विद्यार्थिया के लिए प्रकाशक श्योर सक्सेज इन एग्जामिनशस या परीक्षा से चौबीस घटे पूर्व आदि शृखलाए प्रकाशित करते हैं। और इनमे छप सवाल जवाबो का रट्टा लगाकर विद्यार्थी परीक्षाफल को मीठा बनाने की कोशिश करते हे।

म भी चाहता हू कि मरे तीन सूत्री कार्यक्रम का लाभ उम्मीदवार उठाए आर चुनावफल को मीठा बनाए। हालाकि इसे तैयार करने की प्रेरणा मुझे सविद या मोर्चा सरकारो स मिली हे जिनका लगभग तीन दशक पूर्व अपने देश मे एक दौर आया था। उस जमान मे कई पार्टिया मिलकर कार्यक्रम पहले बनाती थी और सरकारे बाद मे बनाती थी। जहा भी सविद या मोर्चा सरकारे बनी कार्यक्रमो पर विशष जोर दिया गया लेकिन घटको ने इतना जोर लगाया कि सरकारे चल न सकी। लेकिन निश्चित तोर पर यह नही कहा जा सकता कि सरकार न चलने की वजह से न्यूनतम कार्यक्रम लागू नही हो सके या न्यूनतम कार्यक्रम न लागू होने की वजह से सरकार नही चल सकीं। यह विवाद का विषय है। अपन इस विवाद मे नही पडना चाहते।

म तो चाहता हू कि किसी और का भला हो जाए। इस जमाने मे भला कौन लोगो से पूछ पूछकर नेकी करता है। यह तो थी पृष्ठभूमि अब आगे परदे पर देखिए—

पहला सूत्र जनतत्र मे स्वतत्र रूप से चुनाव लड़ना। इससे पहला लाभ यह होगा कि आपका टिकट के लिए पार्टी हाईकमान के आगे नाक नही रगडनी पडेगी। इसके अलावा अन्य कई अप्रत्यक्ष लाभ होगे। आपकी लाखो कैलोरी शक्ति बचगी जिसका उपयोग आप प्रचार मे कर सकत हैं। आप उस क्षेत्र मे चुनाव लडने वाली सभी पार्टियो से गुप्त समझौता कर ले कि जीतने के बाद उस पार्टी म शामिल हो जाएगे। न हो तो सभी पार्टिया की प्राथमिक सदस्यता का फार्म

भी भर दे। इसम आपका जाएगा क्या लेकिन सभी से यह कह दे कि आपके साथ हुआ समझौता गुप्त रखा जाए। इससे होगा यह कि हर दल आपको अपना आदमी समझेगा। आपक खिलाफ कुछ नही कहेगा। आपकी जीत हार के चासेज फिफ्टी फिफ्टी रहेगे।

दूसरा सूत्र उनके लिए है जो दोबारा चुनाव लड रहे है। आप कभी एक ही क्षत्र से दूसरी बार चुनाव न लडे। पहली बार जिस क्षेत्र से लडे थे उससे सौ दो सौ किलोमीटर दूर का चुनाव क्षेत्र चुने। आप प्रचार के दौरान बडे भरोस के साथ कह सकते हे कि पिछली बार मै वहा से (क्षेत्र का नाम) चुनाव लडा था। वहा की सारी समस्याए मने हल कर दी। हर आदमी खुशहाल है। चाहे तो आप लागा मे से कोई जाकर वहा दख सकता है (भला कौन जाएगा वहा देखने!) मुझ तो लोग वही से चुनाव लडने को कह रहे थे मैने खुद ही आपके क्षेत्र से चुनाव लडने का फैसला किया। मैं आप लोगो की खुशहाल बनाना चाहता हू। बस आप लोगो का साथ चाहिए।

इस भाषण वा बहुत अच्छा असर होगा। अगर एक्टिग ठीक से कर गए तो बाक्स आफिस हिट हो जाएगे।

तीसरा सूत्र मुख्यत चुनाव प्रचार के बारे म है। अपने साथियो के अलावा बीवी बच्चो और अन्य रिश्तेदारो को प्रचार मैदान मे उतारना काफी फायदेमद हो सकता है। इसके लिए उन्ह झूठ बोलना पडेगा। राजनीति मे झूठ बोलना पाप नही होता। जा जितना अधिक और बडा झूठ बोलता है वह उतना ही बडा नेता कहलाता है।

बच्चो से कहे कि वे इस प्रकार प्रचार करे— अकल! आटी! मेरे पापा अगर हार गए तो हिमाचल मे चल जाएगे। उन्हे वोट दीजिए और हमे बरबाद होने से बचा लीजिए। हमारी जिदगी अब आप लोगो के हाथ है।

आपके अन्य रिश्तेदार भी इसी तरह रिश्तो की दुहाई देते हुए प्रचार करके आपकी जीत सुनिश्चित कर सकते है।

अगर इन तीन सूत्रो का पालन आपने ईमानदारी से किया तो जीत पक्की समझिए। नुस्खे तभी कारगर हाते हैं अगर उनको ठीक से आजमाया जाए

सखि वे मुझसे कहकर जाते।

मेरे मुहल्ल म एक आफ्टरनून फोरम हे जिसमे पढी लिखी महिलाए हर सप्ताह या यू समझिए कि हर दिन किसी न किसी विषय पर गभीर चर्चा करती ह। इससे जहा उनका समय कट जाता है वही अन्य लोगो का मनोरजन भी भरपूर होता हे। पिछले दिनो एक ऐसे सामयिक विषय पर चर्चा हुई जिसकी रपट भजने का लाभ मे सवरण नही कर पा रहा हू।

रपट विश्वस्त सूत्रो से मिली है इसलिए अविश्वास का कोई कारण नही नजर आता (और फिर महिलाआ पर अविश्वास करके मुझे मुसीबत नहीं मोल लेनी है) तो बहस का विषय था कि यशोधरा ने यह क्यो कहा कि सखि वे मुझसे कहकर जाते

मिसेज चोपडा ने बहस की शुरुआत करते हुए कहा बहनो उस समय की परिस्थितिया के अनुरूप यह कहा जा सकता है कि यशोधरा ने नारी की कमजोरिया को उजागर किया लेकिन सिद्धार्थ तो पुरुष था यह उसकी ड्यूटी थी कि बताकर जाता हमे उसके आचरण पर आपत्ति है। अब आप लोग बताइए कि क्या होना चाहिए?

कुछ देर सुई पटक सन्नाटे के बाद मिसेज चपाकली ने बोलना शुरू किया मेरे खयाल से जाने वाले को कोई रोक नही सकता। वह उस दिन नही जाता तो किसी और दिन भाग जाता। लेकिन यशोधरा को इतना निधडक नही सोना चाहिए था कि पति उठकर चला जाए और पता ही न चले।

इसी बीच एक अधेड महिला ने आपत्ति की मुझे चपाकली बहन की बात पर आबजेक्शन हे। बेचारी यशोधरा भी दिन भर कामकाज करके सोई होगी। फिर सिद्धार्थ ने कोई इडीकेशन भी तो इस तरह का नही दिया। वह बिलकुल सामान्य था।

मिसेज चोपडा ने आर्डर आर्डर कहा और बोली जो भी बहनें मेरी परमिशन के बिना बोलेगी उनकी बात रिकार्ड नही की जाएगी और कल अखबार

मे उनका नाम नहीं छप पाएगा। अब मै मिसेज रोशन को आमत्रित करती हू।

मिसज रोशन ने अपनी जुल्फे झटकते हुए पहले खुद को सामान्य बनाया फिर बाली यशोधरा ने इतनी गलती जरूर की कि पुलिस मे रिपोर्ट नही लिखाई। ऐसा कर देती तो शायद सिद्धार्थ को पकडकर लाया जा सकता था।

यह सुनते ही मिसेज धोतीवाला खिलखिला उठीं। मिसेज रोशन के पूरे तन मे आग लग गई। दोनो मे बहुत दिनो से लगती थी। मिसेज रोशन बोली अरे तुम क्या समझोगी कि मै कितनी ऊची बात कह रही हू।

अरे मे सब समझती हू। जब आपको यह नही मालूम कि उस समय पुलिस व्यवस्था नही थी तब आप डिस्कस क्या करेगी। मिसेज धोतीवाला ने उन्हे समझाने की कोशिश की।

मिसेज चपाकली ने मिसेज रोशन का पक्ष लिया बहन आप ठीक कहती हैं। उसे खोए हुए व्यक्तियो के सेल मे सिद्धार्थ की सूचना देनी चाहिए थी। आखिर कोई न कोई तो सिस्टम रहा होगा।

जब तुम्हारा पति दफ्तर की परकटी टाइपिस्ट के साथ भागा था तब तुमने पुलिस मे रपट लिखवाई थी? दूसरे को उपदेश सब देते है। मिसेज धोतीवाला ने कहा।

फोरम का टेप्रेचर बढ़ता जा रहा था।

मिसेज रोशन की यह दुखती रग थी। क्षुब्ध स्वर मे बोली यहा बात सिद्धार्थ की हो रही है तुम मेरे पति को क्यो घसीट रही हो? जब तुम्हारे यहा छापा पड़ा था तब तुम्हारा मरद भी महीनों गायब था। अब क्यो अपनी पोल खुलवाती हो।

मिसेज धोतीवाला ने कहा खबरदार मेरे पति के बारे मे कुछ कहा तो

तो क्या कर लोगी एक नही सौ बार कहूगी। मिसेज रोशन का चेहरा लाल होता जा रहा था। वह मिसेज धोतीवाला की ओर लपकीं।

यह देखकर मिसेज चोपड़ा बोलीं मै देख रही हू कि गोष्ठी में बहुत कटुता आ गई है। आप लोगो को व्यक्तिगत आरोप नही करने चाहिए। मैं चाहती हू कि आज फोरम की बैठक यही समाप्त की जाए। लेकिन इससे पहले मैं यह बता देना चाहती हू कि इस बारे मे मेरे विचार बिलकुल अलग हैं।

क्या सभी ने एक साथ कहा।

वह बोलीं अगर मेरा पति इस तरह भागता तो मै उसकी टाग तोड देती।

वह ता मुझसे पूछे बिना पानी भी नही पीता।

लकिन रोकती ता तभी न जब वह बताकर जाता। मिसेज चपाकली ने तर्क दिया।

मिसेज चोपडा कुछ गभीर हो गई मेरी नीद तो कुत्तो की सी हे चूहा भी बगल से गुजर तो मेरी नीद खुल जाती ह आदमी की क्या बात है

उसी समय मिसेज चापडा की लडकी दौडी दौडी आई और उसने अपनी मा के कान मे कुछ कहा।

मिसज चोपडा ने अपना माथा पीट लिया। हाय! म तो लुट गई।

सभी महिलाए उनके इर्द गिर्द जुट गई और पूछने लगी कि क्या हो गया। क्या उनके पति भी बुद्ध की तरह चल दिए

वह बोली मेरे वो अभी अभी घर से बिना बताए किसी अन्य महिला के साथ चले गए। अब मै क्या करू?

अब जाओ उसकी टाग तोडो। सबने एक साथ कहा।

मिसेज चोपडा चिल्लाती हुई अपने घर की ओर चल पडी। वह बार बार यही कह रही थी अरे कम से कम कहकर तो जाते। मे क्या गले पड रही थी उनके

और माडर्न यशोधरा चल पडी अपने पति की तलाश मे।

अपना-अपना एवरेस्ट

मेरी बीवी बहुत ही लेट लतीफ है। हर काम देर से करती है।

पता नही उसकी शादी जल्दी कैसे हो गई मै घर के कामकाज के बारे मे कोई टिप्पणी करके कोई मुसीबत मोल नही लेना चाहता क्योकि घरेलू मामलो मे दखलदाजी करने की मेरी आदत उसने छडा दी है।

हा मरे पर्सनल मामलो मे हस्तक्षेप का उसके पास वीटो है।

खेर मै उसकी लेटलतीफी की बात कर रहा था।

मरे कहने का मतलब यह है कि जब कोई खबर बासी पुरानी हो जाती है तब वह उस पर बहस करती है। और बहस भी खूब जमकर करती है। बिना सिर पूछ की बाते करने मे वह अपना सानी नही रखती। बेकार का तर्क होगा लेकिन उस पर घटो जमी रहेगी।

इसी लेट लतीफी का नतीजा यह है कि एवरेटस्ट विजय करने वाली महिला की आजकल मेरे दौलतखाने मे चर्चा हो रही है। वैसे एवरेस्ट से मेरा कोई खास ताल्लुक नही हे। एवरेस्ट के विषय मे मैं सिर्फ इतना ही जानता हू कि वह दुनिया की सबसे ऊची चोटी है लेकिन एक खबर के अनुसार कोई दूसरी चोटी उससे भी ऊची निकल आई है यानी अब मेरी यह जानकारी भी गलत साबित हो रही है।

खेर ये तो छोटी मोटी बाते है। असली बात तो यह है कि एवरेस्ट को मै ईव रेस्ट मानता हू (कृपया अग्रेजी स्पेलिग पर ध्यान दे।) इसका मतलब यह है कि वह चोटी महिलाओ के आराम करने के लिए बनाई गई है। या यह भी हो सकता है कि एडम और ईव की ईव ने इस दुनिया मे आते वक्त उसी चोटी पर बैठकर थोडी देर के लिए आराम फरमाया हो और इसी से उसका नाम ईवरेस्ट पड गया हो। कहने का मतलब यह है कि नामकरण ही गलत हो गया है।

भगवान भी बहुत समझदार है। लेकिन उसने आदमियों यानी पुरुषो के साथ

बहुत ही अन्याय किया है। औरतो के आराम के लिए जगह भी बनाई तो इतनी ऊची इतना ऊपर वहा भला चुपचाप बेठे रहने की सजा कौन महिला भुगतने क लिए तयार होगी मेरी समझ से तो शायद ही कोई महिला वहा आराम करने जाए क्योकि घर पर ही आराम करने से उनको दो फायदे है—खुद आराम करती ह आर साथ ही पतिदेव ओर उनके चहेतो का आराम हराम किए रहती है।

काम ता हाथ से करना होता है बात करने मे कोई भी घरेलू काम आडे नही आता। नमूने क तार पर मेरी बीवी एक साथ तीन काम करती हैं—दाहिने हाथ से झाड लगाती है बाए हाथ से मेरी बिटिया को घसीटती है और मुह से मुझे उपदेश देती रहती है।

अच्छा तो मै बात कर रहा था पत्नी की बहस की लेकिन बहस खुद करने लगा। हा याद आया। उस दिन पत्नी पडोस से आई तो हाफ रही थी। मैंने पू ा क्या बात है?

वह बोली अभी बताती हू।

यह सुनते ही मै घबडा गया। सोचने लगा कि यह किस बात पर धमकी दे रही है?

कुछ सुस्ताने के बाद वह बोली अभी तक तुम बहस करते थे कि पुरुषो से महिलाओं का कोई मुकाबला ही नही लेकिन अब तुम्हारा क्या कहना है जब एक जापानी महिला एवरेस्ट पर भी पहुच गई।

यह बात तो बहुत पुरानी हो गई। मैने बात को टरकाना चाहा।

मुझे तो आज ही मालूम हुई है इसलिए मेरे लिए बिलकुल नई है। उसने एक ठडी सास भरकर कहा हाय! उसका पति कितना पत्नीभक्त होगा जब पत्नी एवरेस्ट पर गई होगी तो बेचारे ने घर सभाला होगा बच्चो को दूध पिलाया होगा स्कूल भेजा होगा और न जाने क्या क्या किया होगा?

तुम्हारा विभाग इस बात के अलावा और कुछ सोच ही नही सकता? मैने झुझलाकर कहा।

घर मे रहती हू तो बात क्या केपटाउन की करू

केपटाउन शब्द सुनकर मै चौक गया। जरूर इसने नक्शे मे एवरेस्ट ढूढा होगा और इसी सिलसिले मे केपटाउन तक पहुच गई होगी।

उसकी बात वजनी थी लेकिन मै काट गया रसोई मे सब्जी जल गई और तुम हो कि बेकार बहस मे उलझी हो।

बेकार में नही। मैं एक बात आज ही बताए दे रही हू कि अब दो चार

दिन बाद ही म मिसेज वर्मा के साथ एवरेस्ट पर जा रही हू।

मेरे हाथ से किताब गिर गई। एवरेस्ट पर तुम ओर मिसेज वर्मा?

क्यो उसने पूछा।

इसलिए कि एवरेस्ट कोई बाजार नही है कि अभी जाओगी और शाम तक लौट आओगी।

हम तो जरूर जाएगे। उसने जिद की।

ठीक हे। लेकिन पहले अपने घर की सीढिया पाच बार चढ़ उतरकर दिखाओ।

अब तो मे एवरेस्ट पर ही चढकर दिखाऊगी।

इस पर मेने कहा अब निश्चित समझो कि तुम और मिसेज वर्मा वहा नही जा सकती।

क्यो?

क्योकि तुम लोगों को पास पडोस की बातो से फुरसत कहा मिलेगी? जापानी महिला भी अगर किसी और महिला के साथ होती तो कतई एवरेस्ट पर नही पहुच पाती।

मेरी बीवी चुप हो गई। लेकिन फरमाइश कर बैठी अच्छा एवरेस्ट पर जाना तो मे कसिल कर रही हू, पर कनाट प्लेस जरूर जाऊगी—साडियो की सेल लगी है

म मुसकराया भाग्यवान! तुम्हारे लिए तो अपना कनाट प्लेस ही एवरेस्ट है।

और वह एवरेस्ट पर जाने की तैयारी करने लगी।

छदम्मीलाल चुनाव मैदान मे

लाला छदम्मीलाल को इस बार जाने क्या शौक चर्राया कि वे फिर चुनाव मे खडे हान का फैसला कर बठे। हुआ यह कि एक आदमी ने उनसे कह दिया लालाजी आपकी तोद वगैरह ऐसी है कि आप पक्क नेता लग रहे है।

छदम्मीलाल हा हा करके कह उठे भाई मजाक करने के लिए मैं ही था क्या

विश्वास न हो तो किसी और से पूछ लीजिए।

सभवत लोगो ने पहले से सलाह कर रखी थी इसीलिए जो भी उनसे मिलता कहता आप तो पक्के नेता हैं पक्के

छदम्मीलाल ने कहा तो मुझे किसी पार्टी का टिकट दिलवा दो फिर देखो कैसे मैदान मारता हू।

और एक दिन आखिर लाला छदम्मीलाल को टिकट मिल ही गया। अब उनकी खुशी का कोई पारावार न रहा। इनके पैर ही जमीन पर नही पड रहे थे। उन्हाने सोचा कि अब तो विजय लक्ष्मी अपने हाथ मे है।

लालाजी घर लौटे तो बोले अरे भागवान आज तो सचमुच किस्मत खुल गई।

क्या कोई लाटरी निकल आई है?

नही। आज मैं नेता बन गया हू।

सेठानी ने कहा किस बेवकूफ ने कह दिया कि तुम नेता हो लगता है आज तुम्हारा दिमाग चकरा गया है।

तुम तो हमेशा मेरा मजाक उडाती हो। अरे आज मैं टिकट भी लेकर आया हू।

टिकट तो तुम पिछले कई वर्षों से खरीद रहे हो लेकिन एक भी पैसा आज तक तुम्हे मिला नही। लगता है तुम सारी कमाई टिकट मे डुबो दोगे।

लालाजी आश्चर्य स अपनी पत्नी की ओर देखकर बोले तुम शरीर से

ही नही अक्ल से भी मोटी हो अरे मे इस बार लाटरी नही चुनाव का टिकट लेकर आया हू। इस बार तो चादी ही चादी समझो।

अच्छा ता बुढापे मे तुम्हे सचमुच नेता बनने का शौक चर्राया है

कौन जान इसी टिकट से अपनी किस्मत खुल जाए। लाला करोड़ीमल ने देखो कितना कमा लिया है इसी नेतागिरी के बलबूते पर मुझे तो मेरे मुहल्ले का हर आदमी वोट देने को पहले से ही तैयार हे। ओर फिर अपने घर मे ही तीन वोट हैं वे तो कही जाने वाले हैं नही।

तीन वोट से तुम कौन सा तीर मार लोगे?

बस सेठ छदम्मीलाल का रग देखती जाओ।

अब लालाजी ने अपना चुनाव प्रचार शुरू किया। पानी की तरह पैसा बहाया। खाने वालो ने खूब खाया और लालाजी को बवकूफी का जी भरकर मजाक उडाया।

लालाजी के लिए कई चुनाव सभाओ का आयोजन किया गया। तरह तरह से वक्ताओ ने लोगो से लालाजी को अपना वोट देने की अपीले की। हर चुनाव सभा म लालाजी ने एक ही घोषणा की में गरीब भाइयो की और कोई सेवा तो नही कर सकता बस इतना ही करूगा कि मेरी दुकान से जो चाहे जितना चाहे खाने पीने का सामान उधार ले जा सकता है। मै किसी से साल भर तक पैसे नही मागूगा।

लोगो ने लाला छदम्मीलाल की जय के नारो से आसमान सिर पर उठा लिया। अब तो लालाजी को पूरा विश्वास हो गया कि उनकी जीत निश्चित है। अब उनकी दुकान पर उधार लेने वालो का ताता लगने लगा।

ज्यो ज्यो चुनाव के दिन नजदीक आते गए लाला छदम्मीलाल को यह दृढ विश्वास होता गया कि वे इस बार जीतकर ही रहेगे क्योकि दिन भर मुहल्ले के नाबालिग लडके जिन्हे वोट देने का अधिकार नही था लालाजी का चुनाव प्रचार करते रहते।

हालत यहा तक पहुच गई कि वोट के दिन लालाजी ने अपने दरवाजे पर पहले से हलवाई बैठा दिया जो तरह तरह के पकवान बनाने लगा ताकि जीतते ही लोगो को अच्छी खासी दावत दी जा सके।

आखिर वोट पडे। लालाजी ने अपने चुनाव क्षेत्र का उस दिन एक खटारे पर बैठकर दौरा किया। आखिर वह वक्त आ ही गया जब इनकी किस्मत बक्से म बद हो गई। वह रात दिन देवी देवताओ की मनौतिया मनाते रहे।

किसी तरह राम राम करके सुबह हुई। वोटो की गिनती खत्म हो गई। लेकिन लालाजी के नाम सिर्फ दो वोट निकले।

अब ता छदम्मीलाल की हालत कुछ न पूछो। बडी मुश्किल से खुद को सभाला ओर घर आए। घर आते ही सेठानी पर बरस पडे। कहने लगे जब घर मे ही एकता नही है तो बाहर के लोगो से क्या उम्मीद की जा सकती है?

हुआ क्या जा इस नरह से लाल पीले हा रहे हो? सेठानी ने अपने तेवर बदलकर कहा।

हुआ वही जिसका मे अदाजा भी नही लगा सकता था। मै यह जानना चाहता हू कि जब अपने घर मे तीन वोट थे तो दो ही क्यो मिले? घर का कौन जाकर विरोधी को वोट दे आया है?

उनकी पत्नी ओर बेटे ने कहा हमने तो आपको ही वोट दिया था लेकिन आपने किसको दिया था

लाला छदम्मीलाल अपना सिर पकडकर बैठ गए मारे खुशी के मै तो यह भूल ही गया था कि मुझे भी वोट देना है।

एक चुनावी नाटक

(स्थान गाव मे एक घर के सामने एक बूढा आदमी चारपाई पर बैठ हुक्का गुडगुड़ा रहा हे। तभी एक युवक आता है।)

युवक

पाच साल बाद
नेताजी आए है
कुछ कहना चाहते है
अपने काम के लिए
दो एक दिन गाव मे
रहना चाहते है।
जाऊ ?
बुला लाऊ ?

बूढ़ा आदमी

आए हे तो क्या करू?
आरती उतारू
इतने दिनो तक कहा रहे।
अब कौन सा मुह लेकर आए है?
उनसे जाकर कहना—
अब नही हो सकेगा
उनका गाव मे रहना।

(युवक का प्रस्थान। बूढा हुक्का गुडगुडा रहा है। थोडी देर बाद युवक फिर आता है।)

युवक

बेचारे बहुत घबराए हें
पसीने से नहाए है

आर बड़ी उम्मीद लेकर आए हे।
कहते ह कि चौधरी से मिलने दो
दिल की बाते करने दो।

बूढ़ा आदमी

जाओ।
उन्हे बुलाकर ले आओ।

(नताजी का प्रवेश। नजर नीची किए हुए वह चौधरी के पैरो की ओर बढते ह।)

बूढ़ा आदमी

बस बस रहने दो
यह नाटक
वरना हमेशा के लिए
बद हो जाएगा
तुम्हारे लिए
इस घर का फाटक।
कहो कैसे हो?
आजकल
तुम क्या करते हो



नेताजी

पाच साल तक
बहुत व्यस्त रहा
समस्याओ से
त्रस्त रहा।
शर्मिंदा हू कि मैने
अपना वादा नही निभाया
बहुत कुछ करने को कहा था
कुछ भी नही कर पाया।
नाचीज को क्षमा कर दे
सिर्फ एक मौका ओर दे
इस बार भी नैया
भवर मे फसी है

सामने आधियो की
कतार खडी है
जैसे पहले उबारा था
इस बार भी उबारिए
डूबते दिल की दुआए ले
अपना लोक परलोक सुधारिए।

बूढ़ा आदमी

तुम्हे देखकर
दया आती है।
तुम्हारे बाप से
पुरानी दोस्ती
याद आती है।
जाओ तुम्हारा किया धरा
हम भूल जाते है
हमारे कारिंदे
तुम्हारे साथ जाते है।

(चुनाव होता है। नेताजी हार जाते हैं। वह आखो मे आसू लिए फिर गाव मे आते है।)

नेताजी

मैने जिदगी भर की
कमाई लुटा दी
लेकिन तुम्हारे आदमियो ने
मेरी लुटिया डुबा दी।
अब कहा जाऊ
किसको मुह दिखाऊ
मेरा चुनाव चिह्न था लालटेन
उन्होने प्रचार किया
दियासलाई का
काम बिगाडा मेरा
बनाया विरोधी का।
मैने लाख मना किया

लेकिन किसी ने
कान नही दिया।

बूढा आदमी

मुझे क्या मालूम था कि
तुमने दल बदलने के साथ
चुनाव चिह्न भी बदला है
चलो यह मौका पहला है।
कई बार जीते हो
इस बार
हार स्वीकार करो।
अब जनता का
कुछ उपकार करो
लेकिन एक बात याद रखना—
नित रग बदलने वाले
अपना नुकसान करते है।
इस बार जो हुआ
उसका गम न करना
गलतफहमी मे ही सही
तुम्हे पडा हारना।
पहले जो किया
वह इस चुनाव मे
सामने आया।
अब जो करोगे
वह आगे
सामने आएगा।

(नेताजी जान लगते ह। तभी एक आवाज आती है।)

आवाज

रग लाती है पब्लिक
धोखा खा जाने के बाद
सुर्खरू होता है नेता
चुनाव मे पिट जाने के बाद।

एक इटरव्यू—आदमी से नही

एकरसता जिदगी को बोर कर देती है। फिर किसी लेखक के लिए खासकर व्यग्यकार के लिए। वह स्थिति कितनी दर्दनाक होती है जब बार बार उसे खुद को दुहराना पड़ता हो। इस स्थिति से मुझे भी कई बार गुजरना पडा है। यानी बार बार आदमियो के ऊपर लिखना पड़ा है। लेकिन इस बार मैने तय कर लिया कि न खुद बोर होऊगा न दूसरो को बोर करूगा (देखिए जरा मेरी आ मस्वीकृति और हिम्मत!) आदमी और उसकी जिदगी के बारे मे कुछ भी नही लिखूगा।

अभी इसी बात पर सीरियसली विचार कर रहा था कि मेरी बालकनी मे फटाक से किसी चीज के गिरने की आवाज आई। अच्छा खासा चितन चल रहा था भग हो गया। झुझलाहट मे बालकनी मे पहुचा तो देखा एक उल्लू फडफडा रहा है। रोशनी से लड रहा है। आदमी अधेरे से लडता है—यह आदमी की ट्रेजेडी है। लेकिन उल्लू को उजाल से लडना पडता है—यह उल्लू की ट्रेजेडी है। यही स्थिति उलट जाए तो दोनो के लिए कामेडी बन जाएगी।

खैर किसी तरह उल्लू को उठाया। अदर करुणा उबाल खाने लगी थी। अचानक उल्लू की आवाज सुनकर मैं चांक गया। अरे यह तो बोलता है

उल्लू ने पूछा हे प्राणी तुम कौन हो?

मैं बुद्धिजीवी हू। मेरा अह बोल उठा।

उल्लू ठठाकर हस पडा क्यो मजाक करते हो? अभी तक तो मै तुम्हारे जैसे लोगो को आदमी समझता था लेकिन अब समझ मे आया कि तुम भी हमारे जैसे ही हो।

यह चोट खाकर मेरे अदर का सोया हुआ साहित्यकार कुनमुनाने लगा।

उसने कहा— उठ कागज कलम उठा आंर मार दे एक इटरव्यू। बड़ी मुश्किल से तेरे हाथ असली उल्लू आया है। नकली उल्लू तो बहुत मिल जाएगे लेकिन जिसे सचमुच उल्लू कहते हैं वह बहुत कम मिलता है।

मन की आवाज पर भला म कैसे पीछे हटता। मैंने चट उल्लू को कुरसी

पर बठाया ओर उस मक्खन लगाने लगा। मैंने दात निपोरते हुए कहा हे उल्लू महाराज मं आपका इटरव्यू लेना चाहता हू।

लकिन मं नोकरी तो नही करना चाहता। उल्लूदेव बोले मेरे पास तुम्हारी तरह फालतू टाइम नही है।

नही। मे तो बस आपक विचार आदमियो तक पहुचाना चाहता हू।

तब ठीक हे। पूछा क्या पूछना चाहते हो? उल्लूदेव अकडकर कुरसी पर बैठ गए।

आपका शुभ नाम? मैंने पूछा।

केसे आदमी हो जी मेरा नाम नही जानते! मैं उल्लू हू, उल्लू

आप नाराज न हो म यह जानना चाहता हू कि आदमी के बारे मे आप क्या सोचते है

मेरा प्रश्न सुनकर वे चकराए फिर बोले जो उल्लू होगा उसका दिमाग से क्या ताल्लुक होगा? और जब दिमाग नही होगा तो वह सोचेगा ही नही। सोचने की जरूरत क्या? फिर भी मुझे आदमी से एक ही शिकायत है और वह यह कि आदमी मुझ हरदम बदनाम करता रहता है। हर आदमी जब जी मैं आता है ~सरे को उल्लू का पट्ठा कह देता है। आखिर जो बेवकूफी करता है उसे सिर्फ मेरा ही पट्ठा क्यो कहा जाता है।

इससे तो आपका सम्मान ही बढता है।

मैंने कहा ता उल्लूजी कुछ गभीर हो गए। थोड़ी देर बाद बोले गाली देना क्या सम्मान देने का तरीका है?

उनका तर्क सुनकर मैं लाजवाब हो गया। लगा कि उल्लूदे~ का इटरव्यू लेते लेते म खुद उनके उल्लूपने के जाल मे फसता जा रहा हू। मैंने उन्हे दूसरी ओर खींचने की कोशिश करते हुए कहा अच्छा अब मै आपके प्राइवेट यानी व्यक्तिगत जीवन के बारे मे एक और सिर्फ एक सवाल करना चाहूगा।

वह भी पूछ लो। वे इस अदाज मे बोले जैसे मेरी बेवकूफी से तग आ गए हो।

आपके और लक्ष्मीजी के सबध आजकल कैसे चल रहे हैं?

मै जानता था कि तुम जरूर ऊल जलूल सवाल करोगे। उल्लू महाराज तनकर बोले खैर जब पूछ लिया है तो सुनो आदमियो को बेवकूफी। अभी तक आदमी मुझे उल्लू, बेवकूफ और न जाने क्या क्या समझता था? जो भी मुझसे मिलता है वही कहता हे कि हे उल्लूदेव! कृपया लक्ष्मी को हाईजैक यानी

किडनेप करके हमारे यहा ले आइए। मुझे तरह तरह के लालच दिए जाते हैं। मै सबको हा कह देता हू। लेकिन जब बहतो ने मुझसे यही कहा तो मै सोचने क लिए मजबूर हो गया हू कि आखिर लक्ष्मी मे ऐसी क्या बात है जो सभी लोग उसे अपने घर रखना चाहते हैं? फिर जानते हो मैंने क्या किया?

क्या?

अब मैंने अपने भक्तो क नाम सरकुलेट करने के लिए एक नोटिस साइक्लोस्टाइल करवा लिया है। तुम उसे छपवा दो।

यह कहकर उल्लूदेव ने साथ लाई अपने आफिस की फाइल से एक कागज निकालकर दिया जो मै ज्यो का त्यो प्रस्तुत कर रहा हू—

मेरे भक्तजनो

अभी तक म सचमुच उल्लू था लेकिन अब नही रहना चाहता हू। आप लोगो की हरकतो ने मुझे कुछ कदम उठाने के लिए मजबूर कर दिया है। सब लोग लक्ष्मी को चाहने लगे है। एक लक्ष्मी करोडो बीमार। मैं एक दिन सोचने लगा कि आखिर लक्ष्मी मे ऐसी क्या खूबी है जो सभी उसे प्यार करते हैं? वह तो हमेशा मेरी पीठ पर सवार रहती है फिर भी मै उसके बारे मे कुछ नही जानता।

एक दिन मैंने लक्ष्मी को अपने सामने बैठाया। निहारा तो वह मुसकराने लगी। मे भी मुसकराने लगा। आखो आखो मे बाते हुई और हम दोनो ने हमेशा के लिए एक साथ रहने का फैसला कर लिया।

अब मै लक्ष्मी को अपने घर ले जा रहा हू। अब वह हमारी और केवल हमारी है। उसको मुझसे बडा उल्लू सवारी के लिए नही मिल सकता। मै उल्लू जरूर हू, लेकिन माफ करना अब म आप लोगो को उल्लू बना रहा हू।

आप लोगो का प्रात स्मरणीय

उल्लूदेव

मैंने सामने नजर डाली तो उल्लूदेव गायब हो चुके थे।

अब मैं सोच रहा हू कि उल्लूदेव की इस मूर्खतापूर्ण नोटिस से उनके भक्तो पर क्या गुजरेगी वे यह ता जरूर साचेगे कि क्या जमाना आ गया है कि उल्लू भी इतना चट हो गया है भक्त अपने भगवान के बारे मे जो चाहे सोचे मै कौन होता हू दखल दन वाला। लेकिन कही वे यह न सोचने लगे कि मैं उल्लूदेव का पब्लिसिटी एजेट हू—यानी लट्ठमार भाषा मे कहू तो चमचा क्योकि इतनी बडी उपाधि के काबिल मै नही बन पाया हू।

दो या तीन इच्छाए बस

आदमी एक ह उसकी इच्छाए अनेक। वह अपनी हर इच्छा को पूरी करना चाहता ह लकिन अभावो के इस युग मे इच्छाआ पर भी नियोजन करना पड रहा हे। वह समझ नही पा रहा कि किन किन चीजो पर नियोजन करे। जेब मे पैसा रहता ह तब बाजार से माल गायब रहता हे आर जब बाजार मे माल आता हे तब जेब म पैसा ही नही रहता बडी बुरी मार है महगाई की।

कुछ इसी तरह की बात पिछले हफ्ते हमारे साथ हुई। मिट्टी के तल के लिए भगीरथ प्रयत्न किया लकिन बेकार। एक बूद भी नही मिला कि सूघकर ही तसल्ली कर लेते। हारकर पडोसिया की शरण जाना पड़ा। कभी इस घर से एक बातल कभी उस घर स एक बोतल। बोतल तो आप लोग जानते ही है कि कितनी महगी पडती हे इनक बदले हमे बहुत कुछ कुर्बानी देनी पड रही हे। अब जा भी पत्र पत्रिकाए पडोसियो के घर जाती है उन्ही की हो जाती है। मेरी तरफ वे भूलकर भी नही दखती। पडोसियो का प्यार देखकर मुझे अपने लोगो का प्यार फीका लगने लगा है। लोग पडोसियो के प्यार को तरसते है और एक म हू कि उनसे बचने की तरकीब ढूढ रहा हू।

मेरे घर का वतमान और भविष्य दोनो अधकारमय हैं। न मिट्टी का तेल होगा न राशनी होगी। इसी विषय म मे अपनी पत्नी के साथ उच्चस्तरीय विचार विमर्श कर रहा था कि कैसे और कहा से मिट्टी का तेल लाया जाए।

अचानक एक अजीबोगरीब सी धुधली आकृति मेरे कमरे मे प्रकट हुई आर खी खी खी करक हसने लगी।

हम दोना का सहम जाना लाजिम था। लेकिन मेने डरते डरते पूछ ही लिया आप कौन हे

बेताल हू राजा विक्रम की तलाश कर रहा हू। उसने कहा।

ता यहा क्यो आए हो राजा विक्रम के पास जाओ न पत्नी की हिम्मत अब कुछ बढ गई थी।

बेचारा विक्रम पिछले हफ्ते से राशन के चक्कर मे है और में उसके चक्कर मे

तब हम क्या करे? मैंने आश्वस्त भाव से कहा।

तुम लाग नाहक घबरा रहे हो। मै तो पिछले कुछ दिनो से तुम लोगो की परेशानी देख रहा हू, और चाहता हू कि तुम्हारी कुछ मदद कर दू। बेताल ने दार्शनिक की मुद्रा मे कहा।

पत्नी मुझसे बोली यह कोई जालसाज लगता है। इसे यहा से दफा करो।

बेताल बोला देवी! तुम मुझ पर बेकार शक कर रही हो। मैं आदमी नही हू, इसीलिए मुझमे अभी ईमानदारी बाकी है।

पत्नी ने क्रास प्रश्न मारा फिर तुमने राजा विक्रम की मदद क्यो नही की?

विक्रम को अपने पौरुष पर बडा घमड है। जब हार जाएगा तब मेरे पास आएगा। नही तो य छोटी मोटी चीजें मै अब तक उसे लाकर दे देता

बेताल की बाते सुनकर मेरा भी पौरुष फडफड़ाने लगा लेकिन कमरे से बाहर निकलने की हिम्मत नही थी।

इस पर भरोसा किया जा सकता है? पत्नी ने मुझसे पूछा।

कर लो।

अच्छा तो तुम हमारे लिए कितनी चीजे ला सकते हो? पत्नी अब कुछ खुश होकर बोली।

दो या तीन

हमें तीन चीजें चाहिए। बताऊ या

नही जब जी मे आए उन चीजों का नाम भर ले लेना घर मे अपने आप आ जाएगी। लेकिन यह ध्यान रखना कि जितना सामान राशनकार्ड पर मिलता है उतना ही मिलेगा।

ऐसे मे जो भी मिले काफी है। मैंने आह भरते हुए कहा।

एवमस्तु! अब मैं चलता हू। यह कहकर बेताल चला गया।

हम अपनी इस सफलता पर फूले नही समा रहे थे क्योकि अब हमारे कष्ट दूर होने वाले थे।

लेकिन पति पत्नी के बीच वाक्युद्ध शुरू हो गया—कौन चीजे निश्चित करे इसी बात का फैसला करने के लिए। घर का मुखिया होने के नाते मैंने

अपनी परेशानी कम हो।

आप चुप रहिए घर मे चलाती हू। आपको नही पता कि मुझे किन चीजो की जरूरत होती है। आप बस बैठे बेठे दखते रहिए कि म इस मौके का फायदा केसे उठाती हू इस बार तुम्हे मेरे दिमाग का लोहा मानना पड जाएगा।

तुम्हार दिमाग का लोहा नही मानूगा तो तुम मेरे दिमाग पर लोहा फेरे बिना नही रहोगी। मै अब झुझला उठा।

आप तो नाराज हो रहे है। पत्नी की आवाज मे अब कुछ मिठास थी।

जहा अक्ल का काम है वहा भी तुम जिद कर रही हो तो गुस्सा तो आएगा ही।

पत्नी की मुद्रा रोने वाली हो गई आप हमेशा मुझे मूर्ख समझते है। आखिर मैं भी पढी लिखी हू

पढाई लिखाई इस बात की गारटी नही कि आदमी या औरत मे अक्ल भी है

मेरी बात कुछ ज्यादा कडवी हो गई तो पत्नी ने समझौता करते हुए कहा क्यों न आपस मे हम फैसला कर ले?

नही अब तो तुम्ही अकेले यह काम करो। मैं तटस्थ होकर किनारे बैठ गया।

लेकिन पत्नी ने मेरी ओर इशारा करके कहा देखिए। होली पर मेहमान तो जाएगे ही मिठाई विठाई बनानी पड़ेगी क्यो न दो किलो का डालडा का डिब्बा माग ले?

मै कुछ न बोला। लेकिन तभी कमरे मे आवाज हुई और डालडा का डिब्बा आ गिरा। पत्नी उसे उठाकर अपने आचल से पोछने लगी और मै बेताल की ईमानदारी पर हैरान होने लगा

पत्नी ने मुसकराते हुए मेरी ओर देखा फिर बोली घी तो आ गया अब चीनी चाहिए क्योकि चीनी भी बाजार मे बड़ी महगी है।

फटाक की आवाज के साथ एक पैकेट कमरे मे फिर गिरा। मैंने दखा कि यह उतना ही बड़ा पैकेट था जितना बडा मै लाता था—यानी मुश्किल से दो किलो का। पत्नी ने उसे उठा लिया अरे यह तो चीनी है

अब तीसरी चीज की बारी थी। मैने सोचा कि पत्नी अब मिट्टी का तेल मागेगी लेकिन नही उसने कहा घी चीनी के बाद पूडी कचौडी बनाने के

लिए आटा चाहिए।

उसके इतना कहते ही एक बोरी आटा भी आ गिरा। पत्नी उसे भी सभालने लगी।

मुझ लगा असली समस्या तो ज्यो की त्यो रह गई। बोला यह सब तो आ गया पर तुम यह सब बनाओगी कैसे?

क्यो?

जलाओगी क्या?

अरे मै तो भूल ही गई। वह रोने लगी मै कितनी मूर्ख हू। मिट्टी का तेल क्यो नही माग लिया। अब यह सब कुछ बनाऊगी कैसे?

मेरी बात नही मानने का फल देख लिया न। अब जो लोग आए उनके आग यह आटा घी और चीनी ही रख देना।

भगवान के लिए मिट्टी के तेल का प्रबध कही से करो। आज से मै ऐसी कोई भूल नही करूगी।

मजबूर होकर मै मिट्टी का तेल खोजने फिर निकल पडा। लेकिन लगता है कि पडोसियो का प्यार मेरे ऊपर अब तभी कम होगा जब कोई दूसरा बेताल मुझे मिलेगा। फिलहाल तो मै खाली टिन लिए घूम रहा हू। मेरे जो दोस्त मेरे घर पर आने की इच्छा रखते हो वे भी कृपया इस बात को गाठ मे बाध लें

कुरसी महिमा

उनकी मोत हो गई जिनकी मुख्यमत्री से ठनी हुई थी। यानी विधायक शर्माजी तडक ही स्वर्ग सिधार गए। शर्माजी सिर्फ एक विधायक थे लेकिन प्रदेश की राजनाति म उनका इतना दबदबा था कि बडे बड उनके आगे पानी भरते थे। राज्य क मुख्यमत्री हमशा उनसे सशकित रहते थे कि पता नही कब शर्माजी कोई ऐसा पत्ता चल दे कि उनकी कुरसी खतरे मे पड जाए इसीलिए उन्होने शर्माजी को कइ बार मत्री बनाने की पेशकश की लकिन हर बार वह टाल गए। वह यही कहत कि कुरसी पर बैठकर मे जनता की सवा नही कर पाऊगा।

लेकिन असलियत कुछ और ही थी। शर्माजी अपने दम पर मुख्यमत्री बनना चाहते थे किसी के सहारे से नही। कई बार उनके चमचो ने इस बात का सकेत दिया लेकिन मुख्यमत्री ने परवाह न की। आखिर अपनी कुरसी को कौन छोड़ना चाहता हे फिर राजनीति मे उखाड़ पछाड तो लगी ही रहती है। असली नेता तो वही ह जो बेशर्मी से कुरसी पर बैठा दात निपोरकर सारा तमाशा देखता रहे।

नतीजा वहा हुआ जो होना था। एक दिन शर्माजी ने मुख्यमत्री को चुनौती द ही दी। वह खुलकर मैदान मे आ गए। एक मामूली विधायक ने मुख्यमत्री को ललकार दिया—राज्य मे तहलका मच गया। लोगो ने समझ लिया कि इस बार या ता मुख्यमत्री ही रहेगे या शर्माजी दोनो तरफ के चमचो ने भी ताल ठोकनी शुरू कर दी। राजनीति के पासे फके जाने लगे।

आरोप प्रत्यारोप के दौर के साथ कीचड़ उछालने का दौर शुरू हो गया। वेसे असलियत तो यह थी कि दोनो भ्रष्टाचारी थे। प्रदेश की राजनीति ठडी थी गरम हो गई। लेकिन यह तमाशा शुरू हुआ ही था कि शर्माजी की 80 साल की आयु म हृदय गति रुकने से मौत हो गई। देखने वाल अभी तमाशे का पहला दृश्य ही देख पाए थे कि परदा गिर गया।

मुख्यमत्री ने चैन की सास ली कि उनकी कुरसी बच गई। खतरा टल गया। वे मन ही मन खुश होकर अपनी पीठ खुद ही ठोक रहे थे कि बुड्ढा चला था

टक्कर लेने बीच मे ही टे बोल गया लेकिन शर्माजी उन्ही की पार्टी के थे इसलिए उन्हे दु खी होना पडा। न चाहते हुए भी शर्माजी के बगले पर जाकर मुख्यमत्री ने उनके शव पर फूलमाला चढाई।

बेचारे मुख्यमत्री की मन स्थिति का अदाजा आप लगा सकते है। अपने कट्टर प्रतिद्वद्वी पर फूल चढाना पड़ा उन्हे लेकिन मन मे एक सतोष रहा होगा कि क्लेश हमेशा के लिए कट गया। फिर राजनीति मे नाटक भी करना पड़ता है। जब विरोधी स्वर्ग सिधारें तब तो अभियान में और वास्तविकता लानी पडती है।

शाम को राजकीय सम्मान से अतिम सस्कार के लिए शर्माजी की अतिम यात्रा शुरू हुई। फूलो से सजी गाडी पर शव रखा हुआ था। उसके परिवारवालों के साथ मुख्यमत्री भी थे जो बार बार अपने आसू पोछ रहे थे। लोग हैरान थे कि मुख्यमत्री को क्या हो गया है? असलियत न जानने वाले यही समझ रहे थे कि शर्माजी की मौत से मुख्यमत्रीजी को सबसे ज्यादा दु ख हुआ है।

जब चिता को आग लगाने का समय आया तो पूरा माहौल आसुओ मे डूब गया। सभी लोग फूट फूटकर रोने लगे। मुख्यमत्रीजी ने रोते रोते कहा आपके जाने से हमारी अपार क्षति हुई है। इतनी सूझ बूझ और योग्यता वाला व्यक्ति अब कहा मिलेगा? अगर आप लौ" आए तो मै मुख्यमत्री की कुरसी छोड़ दूगा।

मुख्यमत्री की कुरसी सुनते ही शव मे हरकत हुई और वह सहसा उठकर बैठ गया। लोग इधर उधर भागने लगे और मुख्यमत्री वही बेहोश होकर गिर पड़े। लोग उन्हे सभालने लगे क्योकि उनकी कुरसी पर फिर खतरा मडराने लगा था।

टक्कर लेने बीच मे ही टे बोल गया लेकिन शर्माजी उन्ही की पार्टी के थे इसलिए उन्हे दु खी होना पडा। न चाहते हुए भी शर्माजी के बगले पर जाकर मुख्यमत्री ने उनके शव पर फूलमाला चढ़ाई।

बेचारे मुख्यमत्री की मन स्थिति का अदाजा आप लगा सकते हैं। अपने कट्टर प्रतिद्वद्वी पर फूल चढाना पडा उन्हे लेकिन मन मे एक सतोष रहा होगा कि क्लेश हमेशा के लिए कट गया। फिर राजनीति मे नाटक भी करना पड़ता है। जब विरोधी स्वर्ग सिधारे तब तो अभियान मे और वास्तविकता लानी पडती है।

शाम को राजकीय सम्मान से अतिम सस्कार के लिए शर्माजी की अतिम यात्रा शुरू हुई। फूलो से सजी गाड़ी पर शव रखा हुआ था। उसके परिवारवालो के साथ मुख्यमत्री भी थे जो बार बार अपने आसू पोछ रहे थे। लोग हैरान थे कि मुख्यमत्री को क्या हो गया है? असलियत न जानने वाले यही समझ रहे थे कि शर्माजी की मौत से मुख्यमत्रीजी को सबसे ज्यादा दु ख हुआ है।

जब चिता को आग लगाने का समय आया तो पूरा माहौल आसुओ मे डूब गया। सभी लोग फूट फूटकर रोने लगे। मुख्यमत्रीजी ने रोते रोते कहा आपके जाने से हमारी अपार क्षति हुई है। इतनी सूझ बूझ और योग्यता वाला व्यक्ति अब कहा मिलेगा अगर आप लौ" आए तो मै मुख्यमत्री की कुरसी छोड़ दूगा।

मुख्यमत्री की कुरसी सुनते ही शव में हरकत हुई और वह सहसा उठकर बैठ गया। लोग इधर उधर भागने लगे और मुख्यमत्री वही बेहोश होकर गिर पड़े। लोग उन्हे सभालने लगे क्योकि उनकी कुरसी पर फिर खतरा मडराने लगा था

एक खत—सपादक के नाम

इस बार होली पर सपादक से ठिठोली का मूड है। साल मे बाकी दिन सपादक के खिलाफ लिखना जोखिम का काम होता है लेकिन बनारसी भग के तरग के छींटे ऐसे उछाले जा सकते हैं जो कभी न छूटे। इसीलिए जुर्रत कर रहा हू फिर भी मेरा दिल धडाक धडाक कर रहा है। अगर खुदक मे आकर सपादक ने मेरी रचनाए छापनी बद कर दीं तो क्या होगा खैर जब रिस्क लिया तो डरना क्या? वह लेखक ही क्या जो सपादक से डरे। और जो डरते हैं वे सपादक बन जाते हैं।

आजकल बह रही फागुनी बयार ऐसे मे हो जाए हाथ दो चार। इस बार मै आप पर चद मीठे मीठे चार्ज लगाने जा रहा हू, जिनसे आपके मन में गुदगुदी होने लगेगी। हो सकता है कि आप यह कह बैठे हाय! जालिम तूने ये क्या किया

सपादकजी आप लोकतत्र के चौथे खभे ह। हैं न? आप सबके खिलाफ लिखते और आरोप लगाते हैं। अब अपने बारे मे सुन लीजिए। लेकिन कान मे रुई न लगाइए। मै आप पर कुछ रग उछाल रहा हू, अगर बदरग हो तो ड्राईक्लीन करा लीजिएगा और उसका खर्च मेरे पारिश्रमिक से काट लीजिएगा। हा तो तैयार हा जाइए

आप पर पहला आरोप है कि आप सिर्फ नामी गिरामी लेखको को ही तरजीह देते हैं। उनके नाम पर कूडा भी छाप देते है। और नए रचनाकारो की अच्छी से अच्छी रचना आप कचरा समझकर रद्दी की टोकरी मे फेक देते हैं। या अभिवादन और खेद सहित वापस कर देते हैं। यह सोचने की बात है कि आपका अभिवादन किस काम का जो सखेद हो। खेद है तो अभिवादन मत कीजिए। अभिवादन करते हे तो खेद मत व्यक्त कीजिए। अभिवादन मे जब आपको खेद होता है तो सपादन मे कितनी तकलीफ होती होगी—इसकी कल्पना मैं कर सकता हू

जाने मे नही अनजाने मे आपसे ऐसा अपराध हो रहा है कि हिदी साहित्य का इतिहास कभी नही माफ कर सकेगा आपको। जाने कितने भारती कमलेश्वर राकेश और नामवर से साहित्य को आप वचित कर रहे है कभी इस पर ठडे दिल से सोचिएगा। अभी भी कुछ नही बिगड़ा है यह श्रेय आप कुछ बाद मे भी पा सकत हे।

वेसे आपने जाने कितने लेखको को बनाया होगा। क्या बनाया होगा यह तो आप ही जाने। लेकिन मै किसी भी तरह आपको बनाने की कोशिश नही कर रहा हू।

आप पर दूसरा आरोप यह है कि महगाई के साथ लेखको का पारिश्रमिक नही बढवाते। आपको लेखको का हितचितक होने के कारण इस दिशा मे प्रयास करना चाहिए। माना कि यह आपके हाथ मे नही है लेकिन सिफारिश तो कर ही सकते है। जानते ही हैं कि जमाना सिफारिश का है। वैसे इसमे कुछ दोष लखको का भी होता है। कुछ सपादक पारिश्रमिक के नाम पर बिदक जाते है (आपकी बात नही कर रहा हू) और कहते हे कि छपने लायक नही थी छाप दी यही बहुत बडी बात है। कुछ तो लेखक को चक्कर लगवाने में विश्वास करते है। बेचारे लेखक का जूता घिस जाता है लेकिन उनका (सपादक का) दिल नही पसीजता। सपादकों को यह भी सोचना चाहिए कि वे भी कभी लेखक रहे होगे। अपने पर जो गुजरी हो जरूरी नही कि मौका पड़ने पर दूसरो से उसका बदला लिया जाए। सास बहू का रिश्ता नही बनाना चाहिए।

सपादको पर सबसे गभीर आरोप यह लगाया जाता है कि कन्याओं को अधिक लिफ्ट देते है। कुरसी ही ऐसी है कि कन्याए चक्कर लगाती हैं और बैठने वाले को रोमाटिक होना ही पडता है। उन लेखिकाओ की रचनाए ताबडतोड छपते देख तमाम उदीयमान लेखक आह भरकर कहते है हाय काश हम भी होते। लेकिन चाहने से क्या होता है होगा तो वही जो आप चाहेगे। यानी जिसे छापेगे वही तो छपेगा।

वेसे खूबसूरती किसे अच्छी नही लगती? मुझे भी लगती है लेकिन अपने पास लिफ्ट देने का कोई माध्यम नही। हमे आपसे जलन होती है। हमारे लिए फागुन मे एक दिन होली होती है। आपके लिए तो बारहो महीने फागुन और हर दिन होली का होता है।

लेकिन हम आपका कुछ बिगाड़ तो सकते नही फिर भी आगाह कर रहे है कि भविष्य मे हम कुछ न कुछ ऐसा करेगे कि आपकी दुकान की भीड़ हमारे

पास आ जाए। आशा है आप समय गए होगे।

नही समझे

चलिए बता दते हे—हम भी दैनिक पटाखा धमाका या फुलझडी टाइम्स जा भी नाम मिल जाए निकालेगे और कन्याओ की रचनाए आख मूदकर छापगे। तब इस मामले म आपकी मोनोपोली टटेगी। कुछ तो इधर आएगी ही। हमे दोष मत दीजिएगा क्याकि तब मुकाबला तगडा होगा। इसीलिए पहले स ही चेता रहे ह।

इतना कुछ हम लिख गए लेकिन भविष्य के बारे मे ता साचा टी नही। तब हम भी आपकी कैटेगरी मे आ जाएगे और हमारे ऊपर भी वही आरोप लगेगा जो आज आप पर लग रहा है। फिलहाल तो आप हमारे घेरे मे हैं। ¬मारी हालत आप जैसी जब होगी तब देखगे। इस समय तो हम आपको देख रहे है और कल्पना कर रहे ह कि आप पर क्या गुजर रही होगी। अच्छा हम भी जा रहे हैं होली खेलने।

इस बार इतना ही सही। अगर थोडा है तो उसे बहुत समझना और होली हे न इसलिए बुरा न मानना क्योकि मै आपके माथे पर लगा रहा हू मक्खन का टीका जिसका रग कभी नही पडता फीका।

एक और स्वर्ण जयती

बुलाकीराम जिंदाबाद

दल बदल चला करे।

बुलाकीराम अमर रहे

पडाल नारो से गूज उठा और फिर शाति शाति की आवाज सुनाई पडते ही लोग चुप हो गए।

ग्राम पचायत के सरपच पलटदास क एम पी (खीच खाच मिडिल पास) ने कहना शुरू किया भाइयो इलाका रत्न बाबू बुलाकीरामजी का सम्मान न करने का मतलब था— अपना अपमान करना सो इस सभा का आयोजन किया गया। आपको यह बताने की जरूरत नही कि बुलाकीरामजी का सम्मान हम क्यो कर रहे हैं।

आप सब लोग जानते होगे कि इन्होन पचासवी बार दल बदलकर राष्टीय कीर्तिमान स्थापित किया है। राजनीति के इतिहास मे यह अभूतपूर्व घटना है। इस वजह से न सिर्फ इनके बल्कि इनकी पार्टी और इलाके के नाम को भी चार चाद लगे है। जिस नेता ने जनतत्र की रक्षा के लिए पचास बार अपने भविष्य को खतरे में डाला उसके प्रति इतनी श्रद्धा कोई बड़ी बात नही। जिसके दल बदलते ही सरकार बदल जाए उसके रग बदलते ही इलाके का भी भाग्य बदल सकता हे। इसी दल बदल की छीना झपटी मे अगर बुलाकीरामजी को मत्री का पद मिल गया तो निश्चित ही वे इस इलाके के तमाम युवको को सतरी बनाकर बेकारी दूर कर देंगे।

(जनता तालिया बजा बजाकर नारे लगाती है।)

इसी दल बदल की वजह से बुलाकीरामजी का नाम देश के कोने कोने म खद्योत की तरह प्रकाशित हुआ है। हर प्रान के विरोधी दलो ने दल बदल की तकनीकी का राज सीखन के लिए इन्हे आमत्रित किया। सम्मान गोष्ठिया की जिनका सार था— काश बुलाकीरामजी हमारे पक्ष मे होते।

मे कहता हू— काश बुलाकीरामजी केद्र मे होते तो केद्र की राजनीि के कद्रबिदु होते। लेकिन नही हम नही चाहते कि राम कृष्ण की धरती व सम्मान दिलाने वाली यह महान् विभूति कही और जाए। बुलाकीरामजी के बारे कुछ भी कहना बहुत कुछ करने के बराबर है। अत अब हम इलाके की ओ से प्रार्थना करते हे कि बुलाकीरामजी अपने गुणो का बखान खुद करें।

(तालिया बजती हे। सीटिया बजती हैं। हा हा होती हे।)

अश्रुपूरित नयन लिए बुलाकीरामजी उठते हें। उनकी पहली आवाज मा भर्रा जाती है। वे टोपी उतारकर नयन पोछते है ओर कहते है इलाके के भाइये इलाके की बहिनो (कवल अपने पिनाकीराम की माताजी को छोड़कर)

पहले मै इस इलाके की जनता को धन्यवाद देना चाहता हू और उसक राजनीतिक सचेतनता की तारीफ करना चाहता हू, क्योकि पहली बार किस इलाके की जनता ने—देश के इतिहास म—दल बदल की राष्ट्रीय परपरा को आ बढाने वाले किसी दल बदलू का सम्मान किया है। वास्तव मे अनपढ़ और गवा जनता ही भारतीय सस्कृति की पोषक और रक्षक है यही राष्ट्रीय और धार्मि परपराओ क प्रति आदर प्रदर्शन कर सकती है। शहर के पढ़े लिखे औ अखबारवाले तो बेचार दल बदलुओ को अकसर अपमानित करते रहते हैं। उसक सिर्फ एक कारण है कि उन्हे भारतीय सस्कृति एव राष्टीय परपराओ के बारे कुछ भी ज्ञान नही।

दल बदल तो हमारी राष्ट्रीय ही नही धार्मिक परपरा भी है। मैने द बदलकर विभीषण की परपरा को ही कायम रखा है। अगर विभीषण ने दल बद न की होती तो आज देश मे अनाचार और अत्याचार का राज रहता। विभीषण मा सीता—जो धरती यानी देश का प्रतीक थी—के लिए दल बदला था अर्था देश की रक्षा के लिए। अत अगर रावण—जो अनाचार और भ्रष्टाचार का प्रती है—से देश को बचाने के लिए मैंने पच्चीस बार दल बदला तो बुरा किया य अच्छा राजनीति मे रहकर इससे बडा धर्म का काम और कौन सा हो सक है?

मै आपका आश्वासन देता हू कि धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए मै स कुछ कर गुजरने को तैयार हू। आश्वासन बहुत बड़ी चीज है। आश्वासन मिल जा तो और क्या चाहिए। लका का राज पाने के लालच में विभीषण ने राम वे आश्वासन पर दल बदला था और हमने मिनिस्टर बनने के चक्कर मे। देख आपने आश्वासन से शासन और प्रशासन चलता है। अगर आश्वासन में थोड़ी

सी कमी हो जाए तो प्रशासन को शीर्षासन करना पडता है।

तो साथिया हम आश्वासन के बल पर आगे बढ सकते है। मैंने हर विराधी दल का दल बदल लेने का आश्वासन दिया है बशर्ते वह सरकार बनाए। आर आज शासन म मरी वही हालत है जो महाभारत मे शासन की थी। अत म एक बात आर—वह यह कि आपक मान सम्मान का बदला मै सरकारी अनुदान स पूरा करने का आश्वासन देता हू।

(तभी एक सज्जन न उनक कान म कुछ फुसफुसा दिया।)

अचानक बुलाकीरामजी मूर्छित होने लगे

उन्ह कुछ लोग सहारा देते हैं।

वे राने लगे हाय मैं लुट गया। बरबाद हो गया। मेरी तो रोजी रोटी सब छिन गई। अब मै क्या करू

क्या हो गया क्या हो गया? आवाजे एक साथ उठती हैं।

अभी अभी मेरे एक मित्र ने सूचित किया है कि विधानसभा भग हो गई। राष्ट्रपति शासन की घोषणा हो गई है। विधानसभा क्या भग हुई मेरा तो शील भग हो गया शान और मान भग हो गया। मैं तो बिलकुल तग हो गया। अब मेरे भविष्य का क्या होगा मेरी नैया के अब आप लोग ही खेवैया हैं। आप ही हमारे कृष्ण कन्हेया हे। अब रोने के सिवा मेरे पास और रहा ही क्या? बस आखिरी सवाल आपसे पूछना चाहता हू कि मैंने इतने आश्वासन दिए है क्या उन सबके बदले आप लोग मुझे सिर्फ एक आश्वासन नही दे सकते?

क्यों नही क्यो नही नारा लगने लगता है।

तो आश्वासन दीजिए कि आप मध्यावधि चुनाव मे मुझे ही जरूर वोट देगे क्योकि तभी मै अपने आश्वासनो को पूरा कर पाऊगा। नही तो जानते है क्या होगा। इलाका बदनाम होगा और बुलाकीराम का नाम सर्वनाम बन जाएगा बोलिए दल बदल

नुस्खे आदमियो को टालने के

काम को टालना एक ऐसी कला हे जिससे हर आदमी परिचित है। एक काम को टालने के लिए वह हजार बहाने बना लेता है लेकिन अनचाहे आदमी को टालना बड़ा मुश्किल हे कयाकि ऐसा आदमी भी बडा उस्ताद होता है। आप डाल डाल तो वह पात पात। कभी कभी तो ऐसे आदमी मुसीबत बन जाते ह। पर असली आदमी तो वही हे जो एसी मुसीबत को टाल दे। ऐसे लोगा का टालना एक रिफाइड आर्ट हे। इस आर्ट के कुछ गुर आपकी सुख सुविधा के लिए प्रस्तुत कर रहा हू। अगर इनसे आपका कुछ भला हो तो हमारी तारीफ चाहे न करे लेकिन नुस्खा नाकामयाब होन की हालत मे हमे दो चार प्यारी प्यारी बाते जरूर कहिएगा। होली मे इन बातो का मजा ही कुछ और होता है।

पहला नुस्खा बहुत साधारण है और कारगर साबित होने वाला है। यह हम सबको मालूम हे लकिन मौके पर इस्तेमाल करने मे हम चूक जाते हे।

मान लीजिए आप घर पर बैठे अखबार पढ रहे हे साथ मे रेडियो के गाने सुन रहे ह। आपका मूड ब-ा रोमाटिक है और आप चाहते हैं कि ऐसे मे बीवी के साथ मीठी मीठी (उनके लिए जिनकी शादी नई नई हुई है) बातें करें। लेकिन ऐसे मे आ टपकता है आपका कोई परिचित या दोस्त।

औपचारिकता के नाते आप मुसकराकर उसका स्वागत करते है (मन मे कहते ह—जाने कहा से टपक पड़ा)। चाय भी पिलाते है और फिर इधर उधर की बाते करते ह। थोड़ी देर बाद आप सोचते है कि यह टले लेकिन टलने क बजाय वह बाते सुना सुनाकर जमने लगता है। इधर उधर की बेकार की बातो स व- आपको बार करन लगता है। आप ऊब जात हैं लेकिन कुछ कह नही पाते। शिष्टता के नाते आपकी जबान पर ताला लगा रहता हे। आप यह नही कह सकते कि भाई अब तो जाआ। मेरा बड़ा हर्ज हो रहा है।

ऐसे वक्त मे आपको थोडा बेशर्म बनना पड़ेगा। अपने आपको जरा गभीर बनाइए ओर कहिए यार अच्छा किया जो तुम आ गए। मैं तो अभी तुम्हार घर जाने वाला था।

इस पर वह तुरत पूछेगा क्या क्या बात है?

आप कह मुझे कुछ पेसा की जरूरत थी। अब आ गए हा तो दे ही जाओ।

निश्चित ह वह कोई न कोई बहाना करके कहेगा मुझे एक जरूरी काम याद आ गया अब चल रहा हू।

सच मानिए पैस की बात टालकर वह खुद टल जाएगा। पैस का मामला ही एसा होता है कि बडे बडे दुम दबा जाते ह।

दूसरा नुस्खा उन लोगा के लिए है जो अधिकारी है और जिनका समय बडा कीमती होता है। ऐसे लोगो को अपने पद और प्रतिष्ठा का ध्यान रखते हुए बहुत नपे तुले शब्दा आ प्रयोग करना पडता है वरना बदनामी हो जाती है कि बनता ता इतना बडा ऑफिसर है लेकिन बोलने की तमीज नही है।

अगर आप काई अधिकारी है ओर इस तरह के आराप से साफ बरी होना चाहते ह तो मेरे बताए नुस्खे का निधडक प्रयोग करे। आपका काम भी बन जाएगा और नाम भी बना रहेगा।

आपको अपने चपरासी से पूरी साठ गाठ रखनी पडेगी। उसे घटी के इशारे आदि बता दे जेस अगर मेरे कमरे मे कोई आदमी बैठा है और मै एक बार घटी बजाऊ तो समझ लना—चाय लानी है। अगर दो बार बजाऊ तो सिर्फ पानी और तीन बार बजाऊ तो समझ लो कि इस आदमी को किसी तरह टालना है।

ऐसे अवसरो के लिए आप चपरासी को सिखा दीजिए कि वह तुरत आकर आपसे कहे बडे साहब ने आपको बुलाया है। आप सारी कहकर जाने के लिए उठिए। अगर वह समझदार होगा तो पहले ही उठकर चला जाएगा।

लेकिन अगर वह बहुत हिम्मती आदमी है और आपके लौटने तक बैठा रहता है तो आपको दूसरा नुस्खा आजमाना पडेगा।

ऐसे वक्त के लिए आप चपरासी को इस तरह पटाकर रखे कि तीन घटी बजाने के थोडी दर बाद ही वह आए और मुह बनाकर कहे साहब बीबीजी ने आपको बगले पर बुलवाया है। कुछ मेहमान आए है। अभी आपका नौकर ेटे (या मोटू) आया था।

सावधानी यह चाहिए कि उस व्यक्ति को यह न लगे कि आप उसे टाल रहे है।

तीसरा नुस्खा है कि थोक व्यापारियो के लिए। ऐसे व्यापारियो के पास बहुत से

एम जान पहचानवाले भी ाते ह जा सामान खरीदन स ज्यादा उसका समय खराब करत ह। नतीजा यह हाता हे कि वह अपने काम के ग्राहको की ओर कम ध्यान द पाता है।

एसे लागा क लिए मे सेठ छुन्नूलाल द्वारा काम मे लाया जाने वाला नुस्खा बता रहा हू। (इसक लिए मे उनका आभारी हू)। जब भी छन्नूलाल की दुकान पर कोई एसा ग्राहक आता ह ता वह तुरत सडक पार वाली चाय की दुकान को आवाज लगाते ओर कहते भाई जरा चाय भेजना। इसके बाद वह ग्राहक से बातचीत करन लगत जिससे उन्हे अनुमान हो जाता कि ग्राहक खरीददारी भी करेगा कि नही।

इसके बाद वह चायवाले को फिर आवाज लगाते ओर चाय भेजने के लिए कहकर पेसिल हिलात। उनके पास दो रग की पेसिले थी—हरी और लाल। चायवाल की नजर छुन्नूलाल की पेसिल पर होती थी। अगर छन्नूलाल लाल रग की पेसिल हिलात ता चायवाला समझ जाता कि दुकान पर आया ग्राहक फालतू हे अगर वह खाली समय खराब कर रहा है—यानी चाय नही भेजनी है। हरे रग की पसिल जब छन्नूलाल हिलाते तो थोडी देर बाद ही चाय पहुच जाती।

पेसिल हिलान के पहले बीच बीच मे भी छुन्नूलाल चायवाले को आवाज लगाते रहते थे। जान पहचान वाला ग्राहक काफी देर चाय का इतजार करता और फिर फूट लेता। जब वह जाने लगता तो छुन्नूलाल सेठ चायवाले को भला बुरा कहते जिससे जाने वाल को लगता कि सेठजी चाय के बारे मे सीरियस थे। इस प्रकार वह बेकार के ग्राहको से पीछा छुडाते ओर उनकी छवि भी बनी रहती।

बहरहाल अब म नुस्खेबाजी बद कर रहा हू, वरना मुझसे पीछा छुडाने का नुस्खा आप भी साचने लगेगे।

सी आई ए हटाओ योजना

जबस मन यह सुना हे कि देश भर म सी आई ए ने अपना जाल फैला रखा है तबस बहुत ही चिंतित हू और घर से निकलते वक्त तो फूक फूककर कदम रखता हू कि कही जाल न बिछा हो। एक सावधानी मेंने अपनी अक्ल से और बरती हे—वह यह कि दिन ढलने क बाद घर से बाहर ही नही निकलता क्योकि जाल मे रात मे फसने का अदेशा ज्यादा रहता है।

घर मे रहता हू ता दरवाजा बद रखता हू। कोई दरवाजा खटखटाता है तो म डरते हुए दरवाजा खोलता हू, कही सी आई ए का आदमी जाल लेकर न खडा हो और दरवाजा खोलते ही कहे   सी आई ए प्रजेट्स ए नेट फार यू। तब इसे स्वीकार करने के अलावा मेरे पास ओर कोई चारा नही होगा क्योकि विनम्रता हमारा आदिगुण है। फिर प्रेम से दिया जहर भी पी जाना हम अपना परम कर्तव्य मानते है।

अभी म सी आई ए की गतिविधियो का मुकाबला करने की योजना बना ही रहा था कि हडबडाए हुए शेषजी आ पहुचे। शेषजी हमारे शहर के माने हुए लीडर है। कई बार एम एल ए का चुनाव हार चुके हे। बिना कुछ कहे वह हमारे सामने वाली कुरसी पर बैठ गए और पाच मिनट तक लबी लबी सासे लेते रहे। फिर माथे का पसीना पोछते हुए बोले   कुछ सुना तुमने? गजब हो गया।

क्या?   मैंने भी आखे फाड़कर पूछा।

सीआईए वालो ने पूर दश मे अपनी लाइन लगा दी है। जितनी भी गडबडिया हो रही ह सबके पीछे उनका हाथ है।

लगता तो मुझे भी कुछ ऐसा ही है।

लगता हे नही बल्कि ऐसा ही है। वे सरकार के खिलाफ सभी को भडका रहे है।

जानते हो क्या?   उन्होने अपना मुह घुमाकर सस्पेसनुमा बना लिया और जब मैंने असमर्थता मे अपना सिर हिलाया तो वह डिटेक्टिव की तरह कहने लगे

इसका कारण एक ही ह। व चाहत ह सरकार लोगो की गरीबी न हटा सके।

हमारी गरीबी आर अमरीका क बीच क्या सबध हे

भाइ फिर उनका माल कान खरीदगा बालो हे न पत की बात।

अब मुझ उनकी अक्ल की तारीफ करनी ही पडी बात ता पत की है।

खखारत हुए उन्हाने अपनी बात आगे बढाई तभी तो म कहू कि जो चीज सरकार इतन दिनो स हटा रही ह वह हट क्यो नही रही हे सीआईए वाल गरीबी को पकड बेठ हुए ह तो गरीबी हट कैसे

अब हम करना क्या चाहिए

यहा तो मे तुमसे राय लेने आया हू। मेरे दिमाग म एक याजना है। अगर पसद करा तो इसका किसी नेता से अगले हफ्ते उद्घाटन करवा दू।

मन कहा शुभ काम म दरी कैसी

किसी विद्वान् की तरह चेहरा गभीर बनाकर रुक रुककर उन्हाने कहना शुरू किया भाई हम तो गरीबी हटाने क लिए दृढ सकल्प ह। आज नही तो कल कल नही परसो चाहे लग जाए बरसो लेकिन हम गरीबी हटाकर रहेगे। मानेगे नही। लेकिन ाब यह जो नया राडा है राह का उसे हटाना हे। में सोचता हू कि क्यो न सीआईए हटाओ योजना का श्रीगणेश कर दिया जाए और तब तक गरीबी हटाओ कार्यक्रम सस्पेड रखा जाए।

कमाल है। जवाब नही आपका। काश आप प्लानिग कमीशन मे होते। मैने कहा तो वह यू फूल गए जैसे बरसाती मेढक।

भैया तुम जानो अपना शहर तो हर काम मे आगे रहा है। गरीबी हटाओ योजना का सर्वप्रथम उद्घाटन इसी शहर म हुआ था। इसीलिए म चाहता हू कि इस नई योजना का उद्घाटन भी देश में सबसे पहले हमारे शहर मे हा।

अपने शहर की बात आई तो मे भी थोडा सकुचित दृष्टिकोण का हो गया। शहर का नाम देश मे सबसे पहले आएगा इतिहास मे आएगा। इसलिए मैने भी कह दिया मेरा हर सहयोग आपके साथ है।

बस बस अब तुम चैन से बैठा। सारा प्रबध म चुटकियो मे करूगा। फिर देखना सीआईए वाले कैसे दुम दबाकर भागते है

आखिर शहर की किस्मत का वह शुभ दिन आ ही गया। सीआईए हटाओ याजना का उद्घाटन हुआ। मच पर कई अपरिचित चेहरे कुरसिया पर विराजमान थे लेकिन वे सभी महान् थे तभी तो मच के याग्य माने गए महान् इसलिए कह रहा हू, क्योकि मच पर मैं भी था।

मालाओ का आदान प्रदान करीब आधे घंटे चला। मेरे गले मे भी शेषजी

ने एक माला डाल दी। मे धन्य हो गया। मच पर माला पहनने का यह मेरा पहला अवसर था लेकिन मन को एक दु ख अब भी सालता रहता हैं कि उस वक्त वहा कोई फोटोग्राफर नही था वरना हम भी प्रमाण द देते। उस समय बाकी नोग जान क्या सोच रहे थे लेकिन मै सोच रहा था कि अगर कही सीआईए वालो ने सभा म गडबड करवाई ईट पत्थर चलने लगे तो क्या होगा? अपनी इसी दूरदर्शिता के कारण मेने धीरे धीरे अपनी कुरसी खिसकाकर पिछली लाइन मे कर ली।

शषजी न पहले दो शब्द कहे फिर बोले अब मैं अपने शहर के वयोवृद्ध स्वतत्रता सग्राम सेनानी श्री अलकारजी से निवेदन करता हू कि वह सीआईए हटाओ योजना का उद्घाटन करे और उसी तरह हमारा मार्ग निर्देशन कर जिस तरह अग्रेज हटाओ और गरीबी हटाओ योजनाओ मे किया था।

दर तक तालिया बजी—पब्लिक मे कम मच पर ज्यादा। अलकारजी कापते हुए माइक के पास आए और कहना शुरू किया भाइयो हमे जब भी दुश्मन ने ललकारा हमारा खून खौल उठा है। अब फिर एक नई चुनौती सामने आई है। हम इसका भी मुकाबला करेगे। अभी हम अपने एक दुश्मन से एक मोर्चे पर लड़ ही रहे थे कि दूसरे ने मोर्चा बना लिया। दूसरा दुश्मन पहले वाले से ताकतवर हे इसलिए गरीबी हटाओ मोर्चे को छोडकर पहले सीआईए के मोर्चे पर लडने का फैसला किया है। ताकतवर दुश्मन को पहले मार देने से हमारे कमजोर दुश्मन अपने आप मर जाएगे। इन्ही शब्दा के साथ मैं सीआईए हटाओ योजना का श्रीगणेश करता हू कि इसको भी गरीबी हटाओ योजना की तरह ही आप सफल बनाएगे। हमारी शुभकामनाए आपके साथ है।

मच पर बैठे व्यक्तियो के लिए अल्पाहार का प्रबध एक हाल मे किया गया था। भीड छट जाने पर अल्पाहार शुरू हुआ। वहा बातचीत के दौरान शषजी न बताया इस देश के लोग बिना मेहनत किए गरीबी हटाना चाहते हैं सो ऐसा तो सात जन्म तक नही हो सकता। लोग हमे तग कर रहे थे कि जो वादा किया था उसे निभाओ। इसी कारण हमने जनता के सामने यह योजना रख दी है। अब कुछ दिन तो चैन से रहेगे फिर देखा जाएगा।

इतना सुनने के बाद मेरे पास कहने को कुछ नही बचा था। हा घर पर लौटते समय मुझे बार बार यह अहसास हो रहा था कि सी आई ए का आदमी मेरा पीछा कर रहा है। मेरे आगे पीछे जितने लोग चल रहे थे वे सब सीआईए के आदमी नजर आ रहे थे लेकिन थोडी देर बाद मुझे ऐसी आशका जकड़ने लगी कि कही लोग मुझे ही सी आई ए का आदमी न समझ बैठे

आयकर हायकर!

कहते हे कि उम्मीद पर दुनिया कायम है। किस उम्मीद पर यह शायद किसी को नही मालूम लकिन इस देश के लाखो लागो की उम्मीद आय पर कायम हे। ले देकर यही एक सहारा होता है उन लोगो का जिसे वेतनभोगी वर्ग कहते हे। यह वर्ग हर साल यही उम्मीद लगाए रहता है कि इस बार बजट मे उस कुछ छट मिलेगा। यह कुछ उसके लिए बहुत कुछ होता हे।

इम बार बजट पूर्व छपने वाली खबरो से पूरी उम्मीद बधी थी कि वेतनवाला को करो मे काफी राहत मिलेगी और उन्होने तरह तरह की कल्पनाआ के महल बना लिए थे। सुदर सुदर सपने सजो लिए थे। लेकिन सबकी उम्मीदो का घडा बजट मे फूट गया। सारे सपने बिखर गए और यह पता चल गया कि आकडे छलावा होते ह कागज पर दौडने वाले घोडे मजिल तक नही पहुचा सकते।

पहले बेचारा आय करता है फिर उस पर कर भरता है। सब कुछ आफिस मे ही कट जाता है इसलिए वह कुछ कर भी नही सकता। सरकार जो करती हे उसे चुपचाप स्वीकार करने के अलावा वेतनभोगी वर्ग के सामने कोई चारा नही होता

कभी कभी यह वर्ग गलतफहमी मे भी पड़ जाता है। इसी बार हमारे एक पडोसी कही से सुनकर आए कि आयकर की छूट सीमा पच्चीस हजार रुपये तक बढा दी गई है। वह बहुत खुश थे ओर अपने अगले वर्ष के बजट से कई योजनाए बना चुके थे। कहने लगे इस बार सरकार ने हमारी सुन ली। आज मै बहुत प्रसन्न हू।

मने उनसे कहा ऐसा नही है। सरकार न केवल पाच प्रतिशत की छट दी है यानी अब सौ रुपये पर पाच रुपये की आपकी बचत हो गई।

वह मानने के लिए तैयार नही थे नेकिन जब मैने उन्हे रडियो पर वह खबर सुनवा दी तो आसमान से जमीन पर आ गिरे और बोले अरे मेरा तो सारा

प्लान ही फेल हो गया। अब मे क्या करूगा

जो सच हे उसे तो स्वीकार करना पडेगा। मैंने कहा आखिरकार सरकार का भी तो अपना खर्च चलाना होता है। अगर वह सबको छट ही देती रहगी तो उसकी सारी योजनाए बेकार हो जाएगी।

मेरे पडोसी उखड गए। बोले इस पर भी सरकार कहती है कि बचत करा और उसने बचत पर आयकर की छट दे रखी है। जब सब कुछ टैक्स मे ही चला जाएगा तो आदमी क्या खाक बचाएगा

मने उन्हे समझाया आप मकान के लिए बचाइए उसमे भी आपको रियायत मिलेगी।

रियायत पाच प्रतिशत की रियायत से आदमी कितना बचा सकेगा? यह भी सरकार ने कभी सोचा है। जितनी उधर छट दे रही है उससे कई गुना ज्यादा तो महगाई बढ जाती है।

आपक पास हौसला हो तो उसे कोई पस्त नही कर सकता।

लेकिन अपने पडोसी की बात पर सोचने लगा कि आम आदमी कितनी उम्मीद लेकर साल भर तक 28 फरवरी का इतजार करता है। वह बजट की ओर देखता रह जाता है। और लाभ कोई और ले जाता है। जिसे चाहिए उसे कुछ नही मिलता और जिनके पास होता है उन्हे और मिल जाता है। शायद इसी वजह से बिन मागे मोती मिले मागे मिले न भीख वाली कहावत बनी है।

मेरी चिता की प्रक्रिया देखकर उन्होने कहा सरकार पहले कहती है आयकर फिर उस पर कर लगा देती है। आयकर हायकर आहकर

वे बेचारे तो आह भरते हुए चले गए लेकिन मै यह नही समझ पा रहा हू कि पाच प्रतिशत की रियायत से मुझे जो बचत होगी उसे कहा खर्च करूगा।

कुरसी एकोऽस्ति द्वितीयोनास्ति

पार्थ का तीर जब टूटकर वापस लोटा ता उनकी आखो से आसू छलक पडे। वह विलाप करन लगे मेरा यह तीर भी निशान पर नही लगा अब म क्या करू जान कितन तीर छोडे काई कारगर नही साबित हुआ। आखिर क्यो? मे इस गाडीव को तोड दूगा।

तभी एक आवाज आई ठहरो पार्थ जेसे याद्धा का इस तरह से निराश होना ठीक नही।

फिर मेरी असफलता का क्या कारण है प्रभु? पार्थ ने आवाज पहचान ली थी जा सीधे भू उपग्रह के माध्यम से द्वारिकापुरी से आ रही थी।

पार्थ तुम अब तीरो का उपयोग बिना सोचे समझे करने लगे हो। यही तुम्हारी सबसे बडी भूल हे। कही ऐसा न हो कि तुम्हारा तरकश तीरो से खाली हो जाए।

फिर प्रभु

कर्म करो फल की इच्छा नही—शायद तुम गीता का यह उपदेश भू गए हो।

भूला नही हू, कर्मयोगी मैने बहुत सारे काम किए लेकिन फल की इच्छा नही की।

क्या किया?

मैनीपुलेशन किया। अपन दोस्तो से लेग पुलिग करवाई लेकिन हर बाजी मेरे हाथ से निकल गई।

बाजी ता तुम्हारे हाथ से निकलगी ही। महाभारत मे भी तुमने जुआ खेला था और उसमे भी हार थ। जुए म तुम्ह कभी सफलता मिल नही सकती।

प्रभु एक बात बताइए। द्वापर म तो मेरा तीर कभी निशाने से नही चूका।

वत्स उस समय तुम्हारी निगाह सिर्फ मछली की आख पर होती थी लेकिन अब तुम इधर उधर ज्यादा दखने लगे हो। वैसे भी इतने समय के बाद

तुम्हारी दृष्टि कमजोर हा गई होगी। फिर यह क्यो भूलते हो कि वह महाभारत था जो मेरी इच्छा से हुआ था और यह भारत है जहा सब कुछ नन इच्छा से होता है।

लेकिन प्रभु मेरा निशाना

वत्स तुम्हे स्मरण होगा। उस समय गुरु द्रोणाचार्य ने तुम्हे ग्रूम करने क लिए महान् धनुर्धर एकलव्य का अगूठा गुरु दक्षिणा के रूप मे माग लिया था। उन्होने उस समय कितना बडा अन्याय किया था यह शायद तुम भूल गए

लेकिन मेने तो गुरुवर से ऐसा करने को नही कहा था।

उन्होने यह अपना कर्तव्य समझकर किया था क्योकि कोई गुरु अपने शिष्य की पराजय नही चाहता।

प्रभु इसमे मेरा क्या कसूर क्या है

कुछ नही। इस युग मे तीरदाजी का हुनर लिबाराम को मिल गया है।

मुझे यह सजा क्यो?

पार्थ यह सजा नही कर्मो का फल है।

लेकिन मेरी चिता तो यह है कि तीर कभी टार्गेट पर लगता ही नही।

वत्स! जब सदियो बाद तुम तीर चलाना शुरू करोगे तो ऐसा ही होगा। फिर मैने देखा कि तीर तुम टाई की तरह गले मे लबी रस्सी क साथ लटकाए रहते हो और जब निशाना लगाते हो तो तीर क साथ तुम भी चले जाते हो।

प्रभु आप आज्ञा दे तो मैं ब्रह्मास्त्र उठा लू।

एक जोर की हसी किसलिए पार्थ

एक कुरसी के लिए।

कुरसी? लेकिन तुम्हे तो कभी कुरसी का मोह रहा ही नही।

अब हो गया है प्रभु बताइए मै इस कैसे छोड दू? हे योगिराज! मैं यह जानना चाहता हू कि वह कुरसी जिस पर बैठने की मेरी इच्छा है वह एक ही क्यो है? क्या आप मेरे लिए एक कुरसी और नही बनवा सकते?

बनवाने के लिए तो हजारो कुरसिया बनवा दू, लेकिन वही कुरसी उनमे नही हो सकती।

क्यो प्रभु?

ध्यान से सुनो पार्थ ब्रह्म एक है और बाकी सब उसके अश! उसी तरह वह कुरसी एक और केवल एक है! शेष कुरसिया उसकी सहायक हैं। इस बात को अच्छी तरह समझ लो कि कुरसी एको स्ति द्वितीयोनास्ति।

और पार्थ के कमरे की लाइट अचानक गुल हो गई।

बीमारी का इलाज दल-बदल

नेता पत्नी चाय लकर कमरे मे पहुची ता नताजी नीद मे बड़बडा रहे थे मेरी नैया पार लगा दो मुझे उबार लो मै मर जाऊगा।

नेता पत्नी इतनी घबरा गई कि उसके हाथ से चाय की टे जमीन पर गिर पडी।

उस आवाज से नेताजी चोंककर उठे कौन है कौन है?

नेता पत्नी न उन्ह सभालने का काशिश की मे हू। आपके लिए चाय लाई थी गिर गई।

गिर कैसे गई नेताजी ने पूछा।

आप सोते मे बडबडा रहे थे।

मे तो कल ही चार घट का भाषण देकर लौटा हू मै क्यो बडबड करूगा नेताजी ने जार से पूछा।

नेता पत्नी ने नेताजी के सिर की कसमे खाकर अपनी बात की सत्यता का प्रमाण दिया।

उस समय तो बात आई गई हो गई।

लेकिन अगली सुबह जब घटना की पुनरावृत्ति हुई तो नेता पत्नी ने डाक्टर से सलाह लेने का फैसला किया।

नेता पत्नी ने चुपचाप अपन फमिली डाक्टर को टेलीफोन किया। डाक्टर साहब डाक्टरी कम राजनीति ज्यादा करते थे इसीलिए तमाम नेताओ के फेमिली डाक्टर थे।

डाक्टर ने कहा कि आप घबराइए नही मे तुरत पहुच रहा हू।

नता पत्नी ने कहा डाक्टर साहब आप दो तीन घंटे बाद आइए तब तक वे चुनाव प्रचार क लिए चले जाएग। मने उन्हे बडबडाने के बारे मे बताया लेकिन वे मानने के लिए तैयार ही नही हैं। मै चुपचाप वह दवा उन्हे किसी तरह खिला दूगी।

डाक्टर साहब न हा कहा। इसक बाद नेता पत्नी गृहकान मे लग गई।

कुछ देर बाद डाक्टर साहब आए। नेता पत्नी ने सारे लक्षण बयान कर दिए।

डाक्टर गभीर हा गए।

नेता पत्नी ने पूछा डाक्टर साहब। आखिर कुछ तो बताइए। उन्हे कौन सी बीमारी हुई है

इससे पहले भी कभी शिकायत हुई थी? डाक्टर ने पूछा।

अकसर चुनावो के दौरान या चुनावा के बाद उनकी यही हालत होती है। पिछली बार 1991 मे हुई थी।

डाक्टर ने अपना माथा ठोकना शुरू किया। लेकिन बीमारी पकड़ मे नही आ रही थी।

वह बोली ये लक्षण बडे अजीब है।

डाक्टर ने पूछा अच्छा यह बताइए कि नेताजी इस समय किस पार्टी मे हैं

यह सब क्यो पूछ रह है

बीमारी का पता लगाने के लिए केस हिस्ट्री का पता लगाना बहुत जरूरी है।

यह तो उनकी डायरी से ही पता चल सकता है। शायद उन्हे खुद भी पता न हो। जाने कितनी बार तो दल बदल कर चुके हैं। नेता पत्नी ने यह कहकर अपना माथा पीट लिया।

आ गई आ गई डाक्टर ने उछलते हुए कहा।

क्या आ गई डाक्टर साहब

नेताजी की बीमारी पकड़ में आ गई।

उन्हें क्या हुआ डाक्टर जल्दी बताइए और उसका इलाज लिखिए।

नेताजी को इलेक्शनोफाइटिस हुआ है। यह ऐसी बीमारी है जिसके लिए न कोई गोली है न कोई इजेक्शन समय उनका इलाज खुद करेगा। डाक्टर यह कहकर जाने लगा।

लेकिन डाक्टर साहब कुछ तो इलाज बता दीजिए। नेता पत्नी ने डाक्टर को रोक लिया।

मैंने कहा न कि इस बीमारी का मेरे पास कोई इलाज नही है। बडबडाते है तो बडबडाने दीजिए। उनका मन खुद हलका हो जाएगा और यह ठीक हो

जाएगे।   डाक्टर ने जवाब दिया।

लेकिन टपोररी रिलीफ क लिए तो कोई दवा बता दीजिए।   नेता पत्नी का गला भर आया।

आइडिया   उन्ह एक बात स आराम मिल सकता है

वह क्या हे   डाक्टर साहब

मुबह जब नेताजी की आख खुले ता कहिएगा कि दल बदल दे। डाक्टर न सुझाव दिया।

क्या   नता पत्नी ने चाकका कहा   यह ता राजनीतिक बीमारी ह?

लकिन ऐसे नताओ का इलाज भी है।   डाक्टर बोला।   दल बदल बीमारी भी है   इलाज भी

मूछोवाले मामाजी

पूरा मुहल्ला उन्हे मूछोवाल मामाजी कहता था। इसका सबसे बडा कारण यह था कि हर समय वे अपनी मूछा पर हाथ फेरा करते थे। उनकी मूछ भी थी छ इच लबी और हर समय तीर की तरह तनी रहती थी। लेकिन उनके शरीर और मूछा मे काई तालमेल नही था शरीर क मुकाबले मूछे भारी पडती थी।

मुहल्ले का हर व्यक्ति बिना उम्र का लिहाज किए उन्हे मूछेवाले मामाजी ही कहता और वह भी जवाब म मसकराकर कहते कहो भाजे क्या हाल ह और ॰सके साथ ही उसे अपनी मूछा के बारे मे कोई न को॰ किस्सा सुना डालते।

उनकी एक आर बहुत बुरी आदत थी शेखी बघारने की। अपनी मूछो के बारे मे उन्होन लोगो को इतने किस्से सुना डाले थे कि वह जब किसी को हसने का मन होता था तो वह कोई किस्सा याद करता और हसने लगता। जहा भी चार लोग जुटते मामाजी की मूछे ही चचा का विषय होती।

मामाजी थे भी कमाल के आदमी। जब भी कोई मिलता तो हाल चाल पूछने के साथ ही पू बैठते तुमने वह किस्सा सुना है या नही जब मेरी मूछे देखकर शेर भाग गया था

और उसके बाद जा उनकी रामायण शुरू होती ता जब वह बचारा आदमी हाथ जोड़कर माफी मागता तभी मामाजी उसका पीछा छोडते। लेकिन इसके साथ ही उस पर चोट कर बैठते तुम्हारी मू॰े हे ही नही फिर तुम क्या जानो मूछो की कद्र

हर रोज वे कोई न कोई किस्सा गढते और उसमे अपनी मूछे डाल देते। लोग सुनते और हरान रह जात। युवक तो उनके पीछे ही पडे रहते थे। जहा भी वे मिलते उनसे कोई किस्सा सुनाने को कहत और वे फौरन शुरू हो जाते। गरज यह कि मामाजा की मूछ भानुमता का पिटारा थी। हर बालक के साथ एक किस्सा जुड़ा हुआ था।

लकिन एक दिन ऐसी बात हा गई कि मामाजी की मूछो के लिए मुसीबत आ गई। मामाजी सेठ रामलाल के बरामदे मे बैठ मूछो की दास्तान सुना रहे थ। काफी लागा की भीड जमा थी। और लोग तो मामाजी की बात सुन रहे थे लकिन युवका म कानाफूसी चल रही थी। वे रह रहकर हस पडत थे।

मामाजी को यह बहुत बुरा लगा। वे समझ गए कि छोकरे उनका मजाक उडा ~हे हैं फिर भी चुप रहे।

एक किस्सा सुनाने के बाद मामाजी बोले एक बार मरी मूछा ने तो ऐसा कमाल दिखाया कि पाच छ सौ आदमी दग रह गए।

एक युवक ने कहा आपने शायद अपनी मूछो से हाथी की पूछ बाधकर हाथी का खीच लिया होगा

नही यार हाथी ने मामाजी को खीच लिया होगा दूसरा बोला तो सभी लोग तालिया बजाकर हस पडे।

मामाजी का पारा सातवे आसमान चढ़ गया। वे पैर पटकते ~ए बोले तुम लाग आजकल क छोकरे हो। मूछे रखते नही तो फिर मूछो का महत्त्व क्या जाना मर्द की पहचान ही मूछे होती है।

एक युवक ने चट जवाब दिया हम कमरे मे झाड तो लगाना नही है कि मूछ रखे।

बस फिर क्या था मामाजी बडबड़ाते हुए चले गए। और बच्चे उनके पीछे पीछे तालिया बजाते रहे।

उसी दिन मुहल्ले के युवको ने तय किया कि मामाजी की शेखी की आदत छडानी है और इस तरह छड़ानी है कि वे फिर अपनी मूछो का जिक्र भूलकर भी न करे। तरह तरह की योजनाए बनाई जाने लगीं।

इस काम के लिए युवको ने होली का मौका चुना।

होली की सुबह युवको ने मुहल्ले मे घर घर प्रचार करना शुरू कर दिया कि हमने सपना देखा है कि जो व्यक्ति आज के दिन मामाजी की मूछों का एक बाल सबसे पहले उखाड लेगा उसे लाटरी का पहला इनाम मिल जाएगा।

सपने का प्रचार इतनी गभीरता से किया गया कि लोगो ने सच मान लिया। और धीरे धीरे मामाजी के घर के सामने सैकडो लोगो की भीड जमा हो गई। लोग कह रह थे मामाजी बाहर आओ। हमसे अपनी मूछ उखडवाओ। लाटरी का इनाम दिलवाओ

शार सुनकर मामाजी के होश उड़ गए। दरवाजा खोलकर बाहर निकलने

की हिम्मत नही हुई। उन्होने खिडकी खोलकर देखा ता उनके हाथ पैर फूल गए चेहरे का रग उड गया।

लोगा ने एक बार फिर वही नारा लगाया।

उन्हान अदर से ही हाथ जोडकर गिडगिडात हुए कहा भाइयो बात क्या हे

जब उन्ह सपन क बार म जानकारी दी गई तो उनक चेहरे का रग उतर गया। लाख कहने पर भी वह घर से बाहर नही निकले।

और दा दिन बाद जब वह घर क बाहर दिखाई भी दिए तो उनकी मूछे सफाचट थी

ओम् सिलेंडरायनम

ओर उस दिन अचानक गैस खत्म हो गई। वेसे गैस खत्म होना कोई बडी बात नही है लेकिन मामला इसलिए सगीन हो गया कि उसी दिन गैस विभाग के कर्मचारियो ने हडताल कर दी।

श्रीमतीजी गैस की तरह भभक उठी मे कई दिन से कह रही थी कि नबर डलवा दो लेकिन मेरी तो कोई सुनता ही नही

मने कहा तो इसम परेशान होने की जरूरत क्या है आज बुक करवा गे कल परसो तक सिलेडर आ जाएगा।

लेकिन यह खबर पढकर कि गैस सप्लाई की स्थिति सुधरने मे दस पद्रह दन लग जाएगे मेरे पैरो तले की जमीन खिसक गई।

जब यह शुभ सूचना श्रीमतीजी को मिली तो उन्होने भी हडताल की नोटिस दी अब मुझसे स्टोव पर खाना नही बनेगा। जिसको जो खाना हो वह खुद बना ले।

मने पत्नी के सामने बहुत शेखी बघारी थी कि मै पत्रकार हू और मेरी पहुच बहुत ऊपर तक है। जो काम चाहू, तुरत हो सकता हे। यह बात मे कई बार कह चुका था सो मेरे बेटे ने कहा डैडी अब जरा अपनी एप्रोच से सिलेडर मगवा दा न वरना घर मे खाना नही मिलेगा।

ठीक ह मै आज फोन करके कहूगा ओर उम्मीद हे कि शाम तक गैस आ जाएगी। मैंने कहा।

अच्छा पहले एक बोतल मिट्टी का तल ल आओ फिर गैस के लिए फोन करना। श्रीमतीजी ने कुछ घुडकत हुए कहा

मरी यही श्रीमती कुछ वर्ष पहले स्टोव जलाते समय बहुत खुश होती थी लेकिन जब से यह गेस आई है अगर एक दिन भी भूले से स्टोव जलाना पडे तो पूरे घर की मुसीबत हो जाती है।

गाव म फू फू कर लकडी स चूल्हा जलान से लेकर गैस तक की रसोई

यात्रा की कहानी भी बहुत ही रोचक है। उसे सुनाने की बात मे सोच नही सकता क्योकि मेरी आखो के आगे सिलेडर नाचने लगा है।

मेने भी बहुत ऊपर फोन कर दिया।

ऊपर से जवाब मिला कि आप अपना कनेक्शन नबर और एजेसी का नाम बता दीजिए कोशिश करते हे कि आपके घर शाम तक गैस पहुच जाए।

म खुश हो गया कि शाम को जब वापस लौटगा ता पत्नी खुश हो जाएगी। लकिन घर लौटने पर मरे हाश उड गए क्योकि पत्नी स्टोव मे हवा भर रही थी और मुझे भला बुरा कह रही थीं।

मेरे मुह से निकल गया मैने एप्रोच लगाया है शायद कल तक गैस आ जाए।

पत्नी केवल मुह फुलाए रहीं।

बडी देर बाद उन्होंने केवल इतना कहा रोटी और अचार खा लो सब्जी नही बन पाई।

खाना पड़ा। न खाता तो कुछ और खाने को मिलता।

दो तीन दिन तक फोन से एप्रोच का सिलसिला चलता रहा और हर दिन यही आश्वासन मिलता कि आज शाम तक गैस पहुच जाएगी।

मैं बडी उम्मीद लकर घर पहुचता। लेकिन गैस नही पहुची होती। और घर पहुचकर फिर वही ताने मिलते। जली कटी सुनने को मिलती।

मेरी सारी शेखी निकल गई। नाहक रोब मारता था। सोचने लगा कि वर्षों की प्रेस्टिज मिट्टी मे मिल गई। जब घर के लोगो का मुझ पर विश्वास नही रहेगा तो बाहर क लोगो पर क्या रोब दाब रह जाएगा

अगले दिन मैं कुछ निश्चय करके घर से निकला। सोच लिया कि आज चाहे जैसे हो सिलेडर घर मे पहुच जाना चाहिए।

नीली छतरीवाले का कमाल कुछ ऐसा हुआ कि उस शाम घर लौटने पर देखा पत्नी गेस पर जुटी हुई थी ओर उसके चेहरे पर खुशी का भाव था। मै रसोई के बाहर सीना फुलाकर खडा हो गया।

मैने ही खामोशी तोडी देख ली न मेरी एप्रोच कितनी है आखिर आज गैस सिलेडर आ गया। क्यो?

पत्नी खामोश रहीं। वह खाना बनाती रहीं।

मै बोला अब दोबारा न कहना।

पत्नी ने कहा यह तुम्हारे एप्रोच वाला सिलेडर नही है। यह मेरी

एप्रोच से आया हे।

तुम्हारी

हा यह सिलडर मने ब्लैक मे खरीदा हे। आजकल व्यावहारिक बनना पडता ह। तुम्हारी एप्रोच और ब्लेक के एप्रोच मे बहुत फर्क है। सबसे बडी एप्राच आज की दुनिया मे ब्लैक है।

पत्नी ने समझाया ता मै आसमान से जमीन पर आ गिरा।

समझ मे नही आता कि ओम् सिलेडरायनम कहू या जय ब्लैकायनम या जय एप्रोचायनम

सवाल चयन का

इतने बडे मुल्क मे किसी राष्ट्रीय टीम का चयन बालू मे से तेल निकालने के समान कठिन हे फिर भी लोग निकाल लते ह लेकिन ऐसे मे चयनकर्ता को कट आलोचना का शिकार होने क लिए तैयार रहना चाहिए। यहा चयन का प्रयोग बहुत व्यापक स्तर पर किया गया है। म सकीर्णता मे विश्वास नही करता। करना भी नही चाहिए। न इसमे विश्वास करना चाहिए कि कौन कितना करीब हे किसका थाबडा मुझे पसद है किसका नही किसका अद्धा भारी है किसके रिश्तेदार क्या हे कौन विरोधियो को चित कर सकता है किसके चयन से टीम मे असतोष बढ सकता है आदि आदि। गिनाने लगू तो सैकडो शर्ते उभर आएगी।

मन्त्रिमडल से लेकर गुल्ली डडा टीम तक के चयन को राष्ट्रीय मुद्दा मानना चाहिए। हाकी फुटबाल क्रिकेट टीम का प्रश्न आप देख ही रहे हैं। एक को रखा दूसरे का निकाला तीसरे को रिजर्व बनाया। इतने तमाशे होते हैं कि बिना पैसे का मनारजन होता है। वैसे टीम के चयन का जिम्मेदारी मुख्यतया मैनेजर और कप्तान पर होती है। चयनकर्ता डेढ़ दो सौ लोगो का शिविर उनके हवाले कर दते ह। अब यह आपके विवेक पर निर्भर करता है कि अनुभव मैदान और व्यक्ति की क्षमता को ध्यान मे रखकर टीम का चयन करे।

मौसम क्रिकेट का है इसलिए उसी की भाषा का प्रयोग मै कर रहा हू। मान लीजिए कि आप टीम के कप्तान ह ओर जोनल या स्टट लेबल के खिलाडी का उप कप्तान बना देते ह। उसने नेशनल लेबल पर कोई टेस्ट नही खला आर आप उस सीधे लार्ड्स के एतिहासिक मेदान पर उतार दते ह। क्या आप समझत ह कि वह सचुरी ठोक देगा अरे वह आपकी नाक कटवा देगा। जिस मेदान पर बड़ो बड़ो को पसीने छटते हो वहा जोनल खिलाडी क्या कर पाएगा?

मान लीजिए कि आपने उसे किसी एहसान के कारण मजबूर होकर उप कप्तान बनाया है तो उसे कप्तान न बनने दीजिए। वरना वह बैटिंग आर्डर मे भी

चज करवान की काशिश करेगा। आपके किसी चहेत को हटाने और अपने किसी चहत को टीम म शामिल करन क लिए दबाव डालेगा। लेकिन जब विपक्षी टीम मेदान मे उतरेगी तो वह पेट दर्द या माशपेशिया खिच जाने का बहाना करक पेवलियन मे लौट जाएगा आर फील्डिग आपको रिजर्व खिलाडिया मे करानी पडगी। वह रिजर्व खिलाडिया का भी भडकाएगा ताकि वे अच्छी फील्डिग न कर ओर कैच ड्राप कर द जिससे आपकी टीम हार जाए। अगर यह जानकर भी आप खामोश रह ता एक दिन कप्तानी से भी हाथ धो बेठगे। फिर वह कप्तान बनने की पूरी कोशिश भी करेगा। इसलिए एक अच्छे कप्तान म उप कप्तान को ड्राप करने की भी हिम्मत होनी चाहिए।

कुछ खिलाडी पुरान खिलाडिया के खम के होत ह। उन्हे भी टीम मे शामिल करक सतुलन बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए। आप पुरान घाघो को बोलने का मोका न दे। शिविर मे शामिल ओर किन्ही कारणो से न शामिल खिलाडियो की सूची बनाकर देख लीजिए। कही कोई टीम म शामिल होन के इतजार म पाली उमरीगर न बन गया हो ओर किसी नए पिच का निर्माण कर रहा हो यह भी देख लीजिए कि बदले मे किसी ऐसे स्पिनर को टीम मे न रख लिया हो जिसकी हर गद पर छक्का लगने की आशका हो।

अगर आप पाच या दस साल के लिए टीम बनाना चाहत हैं तो पर्सनल खुन्नस भूल जाइए ओर सतुलित टीम बनाइए जिससे आप पर अपनो को बढावा देने का चार्ज न लगे। नए खिलाड़ियो को मौका जरूर दीजिए लेकिन पुराने चावलो पर भी नजर रखिए वरना दाल भी न गलगी और खिचड़ी भी बीरबल की खिचडी बनकर रह जाएगी। कानाफूसी को बढावा मत दीजिए। चुगलखोरो की चुगली सुनिए लेकिन उन्हे मुह मत लगाइए वरना वे ऑफ फील्ड मुसीबत बन जाएगे। आपकी बैटिग बॉलिग और फील्डिग तो चौपट होगी ही किसी दिन यही खिलाडी आपकी कप्तानी के लिए भी खतरा बन जाएगे।

एक बात और आजकल वन डे मैचो का जमाना है। पाच दिन के टेस्ट बारिंग होने लगे ह और उनमे कोई नतीजा भी नही निकलता। कुछ रिकार्ड जरूर बनते है जो रिकार्ड बुक मे दबकर रह जाते हे। अगर वन डे का एक मैच भी आपने जीत लिया तो लोग आपके मुरीद बन जाएगे। उसके बाद आप चाहे जिसको अपनी टीम मे शामिल करे चाहे जिसको निकाले आपको पूरा समर्थन मिलेगा।

लेकिन आपमे हिम्मत होनी चाहिए। मान लीजिए एक मैच के बाद आपने

उप कप्तान को ड्राप कर दिया तो आगे भी उसके वार बरदाश्त करने के लिए तैयार रहिए।

आपके मन मे वह भावना नही होनी चाहिए जो उस कमजोर आदमी मे थी जिसे एक पहलवान अकसर तग करता था और अपनी ताकत के बल पर धमकाता रहता था। एक दिन उस कमजोर आदमी ने हिम्मत की और पहलवान से लड गया। ईश्वर की कृपा कुछ ऐसी हुई कि उसने पहलवान को पटक दिया और उसक सीने पर बैठ गया।

यह देखकर सैकडो की भीड जमा हो गई। लोग तालिया बजाने लगे और उस कमजोर आदमी की हिम्मत की सराहना करने लगे। लेकिन पहलवान के सीने पर बैठा कमजोर आदमी काप रहा था।

किसी ने पूछा भई जब तुमने इसे पटक दिया तो फिर काप क्यो रहे हो?

कमजोर आदमी ने जवाब दिया मैं तो यह सोचकर काप रहा हू कि जब यह उठेगा तो मेरी क्या दुर्गति करेगा।

मेरे कहने का मतलब—आपने जिस उप कप्तान को ड्राप किया है वह तो पहले तो टीम से निकाले जाने का शाक झेलेगा। उसके बाद कोई न कोई नया खेल खेलेगा। हो सकता है उस समय उसे दर्शक ही हूट कर दे। फिलहाल खेल जारी रखिए तमाशाई तो घटते बढते और तमाशा बनते रहेगे।

हमारे शहर का साहित्य

बडा बदनसीब हाता हे वह शहर जहा साहित्यकार नही होता। जाने हिंदुस्तान मे कितन ऐसे अभागे शहर होगे जो अपने नाम को रो रोकर मना रहे होगे कि काश मेरी म्युनिसपैल्टी के दायरे मे एक साहित्यकार पैदा हो जाता लेकिन रोने धोने से काम कहा बनता है? साहित्यकार तो वही पैदा होगा वहा उसकी तबियत होगी क्योकि वह हुक्म का नही तबियत का गुलाम होता है। उसे किसी शहर विशेष मे जन्म लेने क लिए मजबूर नही किया जा सकता। लेकिन हमारे शहर के साथ अभाग्यवाली कोई बात नही। हमारा शहर तो साहित्य का गोलकुडा है एक से एक हीरे हे एक से एक विभूतिया हैं। एक दो हों तो नाम भी गिनाऊ। यहा तो रात को सोते वक्त यही डर बना रहता है कि कही सुबह होने तक कोई और साहित्यकार पैदा न हो जाए और आकर बोले लो साहित्य के मदिर मे एक ईंट मेरी भी लगा दो

आज के जमाने मे साहित्यकार बनना भी फैशन है। और फैशन के साथ यही छट होती हे कि ऱ्स कोइ भी अपना सकता है। इसीलिए लोग अपने आपको साहित्यकार कहलवाकर उतना ही गर्व अनुभव करते हैं जितना आजादी के पहले कोई काग्रेसी कहलवाने मे करता था। अगर साहित्यकार होने के साथ फ्री लासर विशेष लगा हो तो समझिए कि यह उसकी एडिशनल योग्यता है और वह रजिस्टर्ड साहित्यकार है।

हमारे शहर में रजिस्टर्ड साहित्यकार ही ज्यादा है जो पूरे शहर में फैले हुए है। वैसे शहर मे फैले पूरे साहित्य का क्षेत्रफल अब बढकर सोलह वर्ग मील हो गया है। इस दायरे मे कई पीढ़िया एक साथ मिलकर साहित्य को पेसिलीन का इजेक्शन लगा रही हैं। सबसे बडी खूबी तो यह है कि हर साहित्यकार किसी न किसी फन मे उस्ताद हे—कोई लाठिया चलाने मे कोई कुश्ती लड़ने मे कोई गालिया देने मे। (अक्ल की बात इनके साथ जोडना इनकी महत्ता को कम करना होगा।)

लेकिन अत्याधुनिक पीढी के लोग वाक आउट करने मे अपना सानी नही रखते (क्याकि विद्रोह प्रदर्शन का यही सबसे सभ्य तरीका है।) इसी बिदु पर आकर मुझे अपने शहर के साहित्य मे भारतीय सस्कृति का साक्षात् दर्शन होने लगता है यानी अनेकता मे एकता। इतने अलग अलग गुणो से विभूषित ये हस्तिया (अपने गुणानुसार) जो भी करे लेकिन उसे जोडा जाएगा साहित्य मे।

इन तमाम बातो के बावजूद गुदडी मे लाल होते है वाली कहावत हमारे शहर की साहित्यिक गुदडी पर पूरी तरह से जमती है जिसने साहित्य को सुमनजी और मधुपजी जेसे दो लाल दिए है। सुमनजी एक अखाडे के भूतपूर्व पहलवान हे उनक शरीर मे आधुनिक हिदी के स्टैडर्ड साइज के कम से कम चार साहित्यकार निकलेगे। उनके शरीर के भय से ही लोग उनको साहित्यकार कहते ह। किन्ही किन्ही परिस्थितियो मे तो वे लोगो से जबरदस्ती अपने आपको साहित्यकार कहलवाते हे। उन्हे कभी कभी जल्दी मे लोग साहित्यजी तक कह देते है।

इसके विपरीत मधुपजी अपने नाम को पूरी तरह से सार्थक करते हे। कभी इस कली के पीछे कभी उस कली के पीछे (साहित्य के बगीचे की) कभी इस डाल पर कभी उस डाल पर। मधुपजी अपने दोस्तो पर अहसान करना अपना पुनीत कर्तव्य समझते हे।

दिल्ली या इलाहाबाद की तरह पहले हमारे शहर के साहित्य मे गुटबाजी नही थी। सुमनजी और मधुपजी एक ही मच से साहित्य की धारा को नया मोड देते। अकसर गोष्ठिया होती। यहा भी काफ्का कामू और सार्त्र की दुहाई दी जाती।

लेकिन एक शाम इस शहर मे साहित्य के लिए मारक सिद्ध हुई

एक गोष्ठी आयोजित की गई। विषय कोई भी निश्चित नही था। सभी लोग पहुचे लेकिन सवाल यह था कि बहस किस विषय पर हो। सभी अपने अपने सुझाव दे रहे थे। सुमनजी ने कहा हिदी साहित्य मे पहलवानी पर बहस हो जाए।

मधुपजी ने विरोध किया यह भी कोई विषय है? हिदी साहित्य मे पहलवानी कभी थी ही नही पहलवानी तो अखाडे मे होती है। बहस ही करनी हे तो सत्रास वत्रास ले लो। या फिर कुछ बोध सोध होना चाहिए।

सुमनजी अकड गए।

मधुपजी क्यो पिछडते?

बात तू तू मै मै तक पहुची। तुरत दो गुट बन गए। और फिर वह

फ्री स्टाइल हुई कि जवाब नही। लात चले जूते चल—यहा तक कि लोगो ने अपनी अपना जेबो से कागज निकाल कर जिन पर साहित्य लिखा था एक दूसरे क ऊपर दे मारे। अगर भारतीय कुश्ती सघ का कोई अधिकारी होता तो म्यूनिख आलपिक क लिए आख मूदकर पहलवाना का चुनाव कर लेता। यह देश का दुर्भाग्य ह कि वह साहित्यकारा की क्षमता का पूरा लाभ नही उठा रहा है।

इस फ्री स्टाइल क बाद शहर के साहित्य मे पूरी तरह से सत्रास घुस गया। साहित्यिक आकाश पर तनाव क बादल घिर आए। लकिन गुटबाजी क्लाइमक्स पर पहुच गइ। दोना साहित्यिक—सुमनजी ओर मधुपजी—टीमो के बीच कबड्डी हो गई। अधिक से अधिक साहित्यकार भर्ती करने का अभियान दोना गुटो ने चलाया जिस तरह से राजनातिक पार्टिया चवन्निया सदस्य बनाती है। मुझे भी दोनो गुटो ने आफर दिया। लेकिन मने तटस्थता की नीति अपनाई और चुपचाप तमाशा देखने का फसला किया।

अब दोनो गुटो की गोष्ठिया एक ही दिन होती ह। जहा मधुपजी की गोष्ठी होती वहा सुमनजी क आदमिया का पहरा होता और सुमनजी की गोष्ठी पर मधुपजी के आदमियो का पहरा रहता। वे गोष्ठी मे जाने वाले हर आदमी को पहले समझाते कि अदर मत जाओ लेकिन जो नही मानते थे उन्हे जबरदस्ती उठाकर दूसरी गली मे गठरी की तरह रख आते।

एक शाम सुमनजी ने मुझे अपनी गोष्ठी मे आमन्त्रित किया। मने हामी भर दी।

उनके जाते ही मधुपजी आए और अपनी गोष्ठी का निमत्रण देते हुए बोल तुम सुमन की गोष्ठी मे मत जाना हमारे यहा आना। नही आओगे तो समझ लेना वह मुझे धमकाकर चले गए।

मधुपजी के जाते ही सुमनजी फिर आए। आते ही बोले तुम्हे मधुप की गोष्ठी मे जान की कोई जरूरत नही। तुमने मुझसे पहले वादा किया है। अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने

मे सिर पकडकर बैठ गया। बाद मे मने बीमारी का बहाना बनाकर दोनो साहित्यकारो से अपना पीछा छुडाया।

फिर एक अरसे तक शहर के साहित्य मे कुछ नही हुआ। मुझे चिता सताने लगी कि अब हिंदी साहित्य का क्या होगा? लेकिन मैं बहुत दिनो तक चितित नही रह सका।

लेकिन अत्याधुनिक पीढ़ी के लोग वाक आउट करने मे अपना सानी नही रखते (क्याकि विद्रोह प्रदर्शन का यही सबसे सभ्य तरीका है।) इसी बिदु पर आकर मुझे अपने शहर के साहित्य मे भारतीय सस्कृति का साक्षात् दर्शन होने लगता हे यानी अनकता मे एकता। इतने अलग अलग गुणो से विभूषित ये हस्तिया (अपने गुणानुसार) जो भी करे लेकिन उसे जोडा जाएगा साहित्य मे।

इन तमाम बातो के बावजूद गुदडी मे लाल होते हैं वाली कहावत हमारे शहर की साहित्यिक गुदडी पर पूरी तरह से जमती है जिसने साहित्य को सुमनजी और मधुपजी जेसे दो लाल दिए हैं। सुमनजी एक अखाडे के भूतपूर्व पहलवान हैं ‾‾नके शरीर मे आधुनिक हिदी के स्टैंडर्ड साइज के कम से कम चार साहित्यकार निकलेगे। उनके शरीर के भय से ही लोग उनको साहित्यकार कहते हे। किन्ही किन्ही परिस्थितियो मे तो वे लोगो से जबरदस्ती अपने आपको साहित्यकार कहलवाते हे। उन्हे कभी कभी जल्दी मे लोग साहित्यजी तक कह देते है।

इसके विपरीत मधुपजी अपने नाम को पूरी तरह से सार्थक करते है। कभी इस कली के पीछे कभी उस कली के पीछे (साहित्य के बगीचे की) कभी इस डाल पर कभी उस डाल पर। मधुपजी अपने दोस्तो पर अहसान करना अपना पुनीत कर्तव्य समझते हैं।

दिल्ली या इलाहाबाद की तरह पहले हमारे शहर के साहित्य मे गुटबाजी नही थी। सुमनजी और मधुपजी एक ही मच से साहित्य की धारा को नया मोड देते। अकसर गोष्ठिया होती। यहा भी काफ्का कामू और सार्त्र की दुहाई दी जाती।

लेकिन एक शाम इस शहर मे साहित्य के लिए मारक सिद्ध हुई

एक गोष्ठी आयोजित की गई। विषय कोई भी निश्चित नही था। सभी लोग पहुचे। लेकिन सवाल यह था कि बहस किस विषय पर हो। सभी अपने अपने सुझाव दे रहे थे। सुमनजी ने कहा हिंदी साहित्य मे पहलवानी पर बहस हो जाए।

मधुपजी ने विरोध किया यह भी कोई विषय है? हिंदी साहित्य मे पहलवानी कभी थी ही नही। पहलवानी तो अखाडे मे होती है। बहस ही करनी है तो सत्रास वत्रास ले लो। या फिर कुछ बोध सोध होना चाहिए।

सुमनजी अकड गए।

मधुपजी क्यों पिछडते?

बात तू तू में मैं तक पहुची। तुरत दो गुट बन गए। और फिर वह

फ्री स्टाइल हुई कि जवाब नही। लात चले जूते चले—यहा तक कि लोगो ने अपनी अपनी जेबो स कागज निकाल कर जिन पर साहित्य लिखा था एक दूसरे क ऊपर दे मारे। अगर भारतीय कुश्ती सघ का कोई अधिकारी होता तो म्यूनिख आलपिक के लिए आख मूदकर पहलवाना का चुनाव कर लेता। यह देश का दुभाग्य हे कि वह साहित्यकारो की क्षमता का पूरा लाभ नही उठा रहा है।

इस फ्री स्टाइल के बाद शहर क साहित्य मे पूरी तरह से सत्रास घुस गया। साहित्यिक आकाश पर तनाव क बादल घिर आए। लकिन गुटबाजी क्लाइमेक्स पर पहुच गइ। दाना साहित्यिक—सुमनजा और मधुपजी—टीमो के बीच कबड्डी हो गई। अधिक से अधिक साहित्यकार भर्ती करने का अभियान दोनो गुटो ने चलाया जिस तरह से राजनीतिक पार्टिया चवन्निया सदस्य बनाती है। मुझे भी दोना गुटो ने आफर दिया। लेकिन मैंने तटस्थता की नीति अपनाई ओर चुपचाप तमाशा देखने का फसला किया।

अब दोनो गुटो की गोष्ठिया एक ही दिन होती ह। जहा मधुपजी की गाष्ठी होती वहा सुमनजी क आदमिया का पहरा होता और सुमनजी की गोष्ठी पर मधुपजी क आन्मियो का पहरा रहता। वे गोष्ठी मे जाने वाले हर आदमी का पहले समझाते कि अदर मत जाओ लेकिन जो नही मानते थे उन्हे जबरदस्ती उठाकर दूसरी गली मे गठरी की तरह रख आते।

एक शाम सुमनजी ने मुझे अपनी गोष्ठी मे आमत्रित किया। मैंने हामी भर दी।

उनके जाते ही मधुपजी आए और अपनी गोष्ठी का निमत्रण देते हुए बोले तुम सुमन की गोष्ठी मे मत जाना हमारे यहा आना। नही आओगे तो समझ लेना वह मुझे धमकाकर चले गए।

मधुपजी के जाते ही सुमनजी फिर आए। आते ही बोले तुम्हे मधुप की गोष्ठी मे जाने की कोई जरूरत नही। तुमने मुझसे पहले वादा किया है। अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने

मै सिर पकडकर बैठ गया। बाद मे मैने बीमारी का बहाना बनाकर दोनो साहित्यकारो से अपना पीछा छुडाया।

फिर एक अरसे तक शहर के साहित्य मे कुछ नही हुआ। मुझे चिता सताने लगी कि अब हिदी साहित्य का क्या होगा? लेकिन मै बहुत दिनो तक चिंतित नही रह सका।

एक शाम काफी हाउस मे बैठा था कि सुमनजी आए बोले अब साहित्य फिर शुरू कर रहा हू।

मेने कहा बडी खुशी की बात है। साहित्य आपका अहसान नही भूलेगा।

एक कार्ड देते हुए बोले आज एक गोष्ठी है आना। विषय है—साहित्य मे गुटबाजी।

इधर सुमनजी गए कि साइकिल पर मधुपजी नजर आए। मेने समझ लिया कि दाल मे कुछ काला जरूर है—ये भी आज से ही साहित्य शुरू कर रहे है।

मुझसे दस गज की दूरी पर वह थे तभी मैंने कहा मैं नही जाऊगा।

वे साइकिल से उतरकर हाफने लगे। मुह से आवाज नही निकल रही थी वे सिर्फ इशारो से बात कर रहे थे।

मैंने फिर कहा आप विश्वास रखिए मै नही जाऊगा।

कहा मधुपजी ने कहा।

अरे वही सुमनजी की गोष्ठी म।

उन्होने अपने सीने पर हाथ रखकर सतोष की सास लेते हुए कहा यही कहने तो मै आया था कि सुमनजी की गोष्ठी मे मत जाना। चलो तुम्हारा बोझ तो हटा। अब चलू, क्योकि आज तो घूम घूमकर यही काम करना है। जहा जहा सुमन वहा वहा मधुप। कहकर वे यू मुसकराए जैसे साहित्य पर बहुत बड़ा एहसान करने जा रहे हो

उनके जाने के बाद मै यह सोचने लगा कि कम से कम हमारे शहर में साहित्य के नाम से कुछ तो हो रहा है। जीवित रहना ही क्या कम है? लेकिन इसके बाद मेरा एक निवेदन है कि यह तसवीर हमारे शहर के साहित्य की है इसमे कृपया अपने शहर के साहित्य की तसवीर देखने की कोशिश न करें।

प्रॉपर्टी बचाइए

जनता दश की प्रापर्टी है और नेता प्रापर्टी डीलर वैसे नेता भी हाते तो प्रापर्टी का ही अश हे लेकिन थोडा ऊचे उठकर ये खुद ब खुद प्रापर्टी को डील करने लगते है— बतर्ज सजनी हमहू राजकुमार। ये प्रापर्टी डीलर नीचे से लेकर ऊपर तक (यानी गाव से लेकर राष्टीय स्तर तक) काम करते हे। ये लोग अपने क्षेत्र को अपनी प्रापर्टी मानत ह और इसी के आधार पर अपनी सारी डीलिग करते हं। ये सरकार को बताते हे कि बाढ व सूखे से मेरी प्रापर्टी को इतना नुकसान हो गया या होने वाला है। सरकार उन्हे सहायता देती है कि लो अपनी प्रापर्टी की मरम्मत कर लो यानी कुछ खा पी लो।

ये लोग कभी कभी सडक अस्पताल या स्कूल बनवाकर प्रापर्टी की वेल्यू बढा लेते है। इसीलिए वे अपनी पापर्टी (चुनाव क्षेत्र) को छोडना नही चाहत चाहता ही कौन है लेकिन कभी कभी पार्टी का हाई कमाड जब कहता हे कि अब तुम्हारी प्रापर्टी यह नही है वह है तो वह मायूस (विद्रोही) हो जाता है। जमी जमाई प्रापर्टी पर नया प्रापर्टी डीलर आएगा— यह सोचकर वह नए प्रापर्टी डीलर के खिलाफ काम करने लगता है। उसका आदर्श हो जाता है— न खुद खाएगे न खाने देगे अपनी प्रापर्टी पर अपना हक जमाए रखने के लिए वे चुनाव मे लाखो रुपए खर्च कर देते है। सच भी है कि प्रापर्टी विहीन प्रापर्टी डीलर किस काम का

प्रापर्टी डीलरो ने प्रापर्टी से कितना कमीशन खाया है इसका कोई हिसाब नही है न कभी कोई आडिट रिपोर्ट ही इस पर आई। इसकी वजह से प्रापर्टी को जितना नुकसान हुआ है उतना किसो से नही हुआ है।

अब देखिए न अगर एक आदमी किसी दूसरे आदमी से कोई वादा करता है और पूरा नही करता तो लोग उसे चार सौ बीस कहते हैं। लेकिन नेता अगर न पूरा करे तो लोग उसके वादे को आश्वासन जैसा लचीला जेसा विशेषण दे देते हे।

इन लोगो ने प्रापर्टी से कितना छल किया है इसका पता इन प्रापर्टी

डीलरो क पास भी नही है। जब बात ब्लैक मनी की तरह है तब सरकार ठोस कदम क्यो नही उठाती? लोकतत्र मे सरकार तमाशा बन सकती है लेकिन तमाशबीन नही। इसलिए में सरकार से आग्रह करूगा कि वह एक अध्यादेश जारी करके इन प्रापर्टी डीलरो का राष्ट्रीयकरण कर दे। राष्ट्रहित के लिए इन पर अकुश जरूरी ह। राष्टीयकरण से लाभ क्या क्या होग इस बारे मे कुछ बाते सूचनार्थ निवेदन ह

पहला लाभ लालूराम या सीताराम कुरसी के मोह मे आयाराम या गयाराम नही बनेगे।

दूसरा लाभ प्रापर्टी को ये लोग आश्वासन देकर छलने की कोशिश नही करेगे और न उससे नाजायज फायदा उठा पाएगे।

तीसरा लाभ ऊच नीच का भद मिट जाएगा। प्रापर्टी को देखकर ये यह नही कहेग कि यह हमारी प्रापर्टी है । अहम् की समाप्ति होगी।

चौथा लाभ कभी कोई नेता अपना बयान नही बदलेगा क्योकि उसका स्वार्थ (राजनीतिक) खत्म हो जाएगा।

पाचवा लाभ प्रापर्टी को उसके भाषण सुनने के लिए मजबूर नही होना पड़ेगा लिहाजा भाषण नियोजन होगा।

छठा लाभ पार्टिया समाप्त हो जाएगी। चुनाव नही कराने पडेगे। करोडो की बचत होगी।

सातवा लाभ राष्ट की पार्टीविहीन सरकार (नेशनल गवर्नमेट) बनेगी। विराधी पक्ष नही होगा अत सरकार के रास्ते मे कोई अडचन नही आएगी। विरोध कराने वाला से उनका राष्टीयकरण का सर्टीफिकेट छीन लिया जाएगा।

जहा इतने लाभ हो रहे हैं वहा अगर एकाध नुकसान भी हो जाए तो क्या हर्ज हे? आखिर सरकार को अपने कितने ही प्रतिष्ठानो मे नुकसान उठाना पड रहा है एक यह भी सही। घाटा अधिक होगा तो सरकार को टैक्स लगाने की भी सुविधा तो होगी इस विषय मे सरकार चाहे तो जनमत सग्रह करा ले कि अमुक प्रापर्टी का राष्टीयकरण किया जाए या नही?

अभी तो मने योजना का प्रारूप प्रस्तुत किया है। शीघ्र ही स्मरण पत्र पेश करूगा। फिर भी बात नही बनी तो अकेला ही आदोलन करूगा। इसमे मेरा भी स्वार्थ है। आदालन से मै भी प्रापर्टी डीलर बन जाऊगा और कभी राष्ट्रीयकरण हुआ तो मेरा भी नाम उसमे आ जाएगा। फिलहाल अभी तो बस मैं एक नारा दे रहा हू— प्रापर्टी बचाइए

दूध पीने वाले मजनू

मजनू दूध पीता था यह और लोगो के लिए मामूली बात हो सकती है। लेकिन मरे लिए खबर है। और मेरा इस पर पहला ओर आखिरी सवाल यह है कि मजनू दूध क्यो पीता था? चद उसूल बनाए गए ह जिसमे एक यह भी है कि आशिक बिना कुछ खाए पिए सिर्फ माशूक का नाम लेकर ही जिदा रह सकता है। तब मजनू दूध क्यो पीता था? इसका मतलब यह हुआ कि मजनू सच्चा आशिक नही था इससे तमाम लोग जिनका मजनू से कोई सबध नही नाराज हो सकते हे लेकिन म चाहता हू कि मजनू के साथ पूरा न्याय हा। उसके केस को मे पूरी तरह से डिफेड करूगा क्याकि आज मजनू एक प्रतीक बन गया है। और प्रतीक के साथ वही बात ठीक जचती हे जो सटीक हो।

असली मजनू तो लैला का दीवाना था लेकिन आज कल किसी भी चीज के दीवाने को मजनू कहा जा सकता है। मसलन कोई ¯¯नता की भलाई का दीवाना है (हालाकि यह मेरा खयाली पुलाव है ऐसा आज हिदुस्तान म कोई नही ह।) जिसकी जो हाबी है उसे उसी का दीवाना कहा जा सकता है। साथ ही यह बात भी सच है कि मजनू की लाइन पर चलने वालो को तमाम मुसीबतो का सामना करना पडटा है लेकिन सच्चा मजनू वही है जो अपनी साथी (माशूक) के लिए सब कुछ सहने को तेयार हो—यहा तक कि जल जाने के लिए भी!

अब आप उस दृश्य को याद करे जिसम मजनू एक पेड के नीचे फटा कुरता पाजामा पहने बैठा हुआ था और लैला! लैला! पुकार रहा था। जो भी इधर से गुजरता पहले मुसकराता फिर एक पत्थर मारता और कहता दीवाना है। पत्थर की चोट क साथ लैला शब्द और जोर से निकलता। कितना मार्मिक दृश्य था वह

लकिन माशूक का जिगर पत्थर का होता है। बेचारे मजनू की यह दुर्दशा लला की नगरी मे हो रही थी और लैला खामोश थी आज का जमाना होता तो कम से कम सरकार भी मजनू की कुछ मदद करती। ओर कुछ नही तो म¯¯नू

को शांति भग करने के आरोप म जेल मे बद कर देती। और तब बेचारे मजनू को जितने पत्थर लगे उससे दो चार सौ तो कम ही लगते।

मजनू न अपनी यह हालत खुद ही बनाई थी। इश्क मे उसकी दीवानगी इतनी बढ गई थी कि मजनू के शहर का एक आदमी लैला के शहर मे जा रहा था। मजनू न उससे कहा मेरा एक पैगाम लैला को दे देना और अपना पैगाम सुनाते सुनाते मजनू खुद लैला के शहर मे पहुच गया। तब उस आदमी ने कहा अब तुम खुद जाकर लैला से सब कुछ कह दो और मजनू बहुत कुछ कहना चाहकर भी लेला से कुछ नही कह पाया।

रात की खामोशी और दिन के शोरगुल के बीच लोगो को एक ही आवाज सुनाई पडती— लैला लैला धीरे धीरे मजनू के इर्द गिर्द तमाम ऐसे नकली मजनुओ की भीड जमा हो गई जो मजनू की बेचारगी पर ठहाके लगाते और उसकी दुर्गति करवाने मे राहगीरो की मदद करते। खबर पहुची माशूक के पास। माशूक का दिल रोने लगा। लैला अपने मजनू को बचाने की कोशिश करने लगी लेकिन चद मजबूरिया जो हर लडकी के साथ होती हैं उसके सामने भी थी।

आखिर लैला के दिमाग मे एक प्लान आया। उसने एक दिन अपनी दासी को एक कटोरे म दूध भरकर दिया और कहा इसे ले जाओ और अपने सामने मजनू को पिलाकर आना और यह भी बताना कि वह मेरे बारे मे क्या कहता है।

ठीक ही बात थी बेचारा पत्थरो की चोट झेलता था। ताकत नही रहती तो क्या करता कम से कम रोज दूध मिल जाने से कुछ हौसला बढता। लैला ने कितनी दूर की सोची

लैला की दासी मजनू के लिए दूध लेकर चली। रास्ते मे उसे नकली मजनुओ की कतार मिल गई।

दासी ने पूछा मजनू कौन है?

एक युवक ने कहा क्यो

लेला ने उसके लिए दूध भेजा है।

उस युवक ने कहा मजनू मै हू। और लैला की दासी के हाथो से कटोरा लेकर दूध गटागट पी गया।

हर दिन कोई न कोई मजनू बनकर दूध पी लेता था जब लैला पूछती कि मजनू ने क्या कहा तब दासी कहती वह तो 'मुसकराकर दूध पी गया। बडा

मोटा है वह। उसने तो कुछ भी नही कहा।

लैला का माथा चकराया वह समझ गई कि मजनू की शराफत का नाजायज फायदा और लोग उठा रहे हैं। चट उसने नई स्ट्रेटजी प्लान की। दूसरे दिन लला ने दासी को खाली कटोरा देते हुए कहा आज मजनू से इसी कटोरे भर खून माग लाओ।

दासी गई तो रास्ते मे रोज दूध पीने वाले मनजुओ की भीड ने उसे घर लिया। उचक उचककर सभी कटोरे की आर देख रहे थे लेकिन दासी ने कटोरा किसी को नही दिया और कहा आज मे मजनू क लिए दूध लेकर नही आई हू, बल्कि उससे कुछ लेने आई हू।

क्या?

लेला ने इसी कटारे भर खून मागा है कौन हे मजनू? कौन देगा?

दासी बारी बारी से सबके पास गई लेकिन उसे खाली ही लोटना पड़ा। अत मे एक ने कहा लैला से कहना कि हम दूध पीने वाले मजनू है। खून देने वाले नही।

खून देने वाला मजनू कहा है? दासी ने पूछा।

वह तो उस पेड क नीचे बैठा अपनी किस्मत पर आसू बहा रहा है। वही लैला के लिए खून देगा।

लैला की दासी अपना माथा ठोकते हुए असली मजनू की तलाश मे चली गई।

पाठको! मैं लैला मजनू का घिसा पिटा किस्सा सुनाकर आपको बोर नही करना चाहता। मै आपको यह बताना चाहता हू कि मजनू सच्चा आशिक था क्योकि उसने दूध नही पिया था। और ऐसा मजनू किसी भी देश में हजारो साल मे एक पैदा होता है। हमारे देश मे आज कल दूध पीने वाले मजनुओ की भरमार है। न विश्वास हो तो किसी नेता से कहिए कि आप देश की भलाई के लिए कुरसी छोड़ दीजिए वह झट कहेगा मै वोट लेने वाला मजनू हू, कुरसी छोडने वाला नही।

पूरी उम्मीद है कि आपको यह सुनने को मिल जाए। जनता की भलाई के लिए दीवाना (मजनू) तो इस देश मे एक ही पदा हुआ था वह भी चल बसा। लेकिन उसी के नाम पर हम आज सब कुछ कर रहे हैं। वह न होता तो आज हम इस जगह नही होते। उसी ने हमे इतना ऊपर उठाया हे लेकिन हमने उसे उसके आदर्शो को भुला दिया है

को शाति भग करने के आरोप मे जेल मे बद कर देती। और तब बेचारे मजनू को जितने पत्थर लगे उससे दो चार सौ तो कम ही लगते।

मजनू न अपनी यह हालत खुद ही बनाई थी। इश्क मे उसकी दीवानगी इतनी बढ गई थी कि मजनू के शहर का एक आदमी लैला के शहर मे जा रहा था। मजनू न उससे कहा मेरा एक पैगाम लैला को दे देना और अपना पैगाम सुनाते सुनाते मजनू खुद लैला के शहर मे पहुच गया। तब उस आदमी ने कहा अब तुम खुद जाकर लैला से सब कुछ कह दो और मजनू बहुत कुछ कहना चाहकर भी लैला से कुछ नही कह पाया।

रात की खामोशी और दिन के शोरगुल के बीच लोगो को एक ही आवाज सुनाई पड़ती— लैला लैला ! धीरे धीरे मजनू के इर्द गिर्द तमाम ऐसे नकली मजनुओ की भीड जमा हो गई जो मजनू की बेचारगी पर ठहाके लगाते और उसकी दुर्गति करवाने मे राहगीरो की मदद करते। खबर पहुची माशूक के पास। माशूक का दिल रोने लगा। लैला अपने मजनू को बचाने की कोशिश करने लगी लेकिन चद मजबूरिया जो हर लडकी के साथ होती है उसके सामने भी थी।

आखिर लैला के दिमाग मे एक प्लान आया। उसने एक दिन अपनी दासी को एक कटोरे मे दूध भरकर दिया और कहा इसे ले जाओ और अपने सामने मजनू को पिलाकर आना और यह भी बताना कि वह मेरे बारे मे क्या कहता है।

ठीक ही बात थी बेचारा पत्थरो की चोट झेलता था। ताकत नही रहती तो क्या करता? कम से कम रोज दूध मिल जाने से कुछ हौसला बढता। लैला ने कितनी दूर की सोची।

लैला की दासी मजनू के लिए दूध लेकर चली। रास्ते मे उसे नकली मजनुओ की कतार मिल गई।

दासी ने पूछा मजनू कौन है?

एक युवक ने कहा क्यों

लैला ने उसके लिए दूध भेजा है।

उस युवक ने कहा मजनू मैं हू। और लैला की दासी के हाथो से कटोरा लेकर दूध गटागट पी गया।

हर दिन काई न कोई मजनू बनकर दूध पी लेता था जब लैला पूछती कि मजनू ने क्या कहा तब दासी कहती वह तो मुसकराकर दूध पी गया। बडा

मोटा है वह। उसने तो कुछ भी नही कहा।

लैला का माथा चकराया वह समझ गई कि मजनू की शराफत का नाजायज फायदा और लोग उठा रहे हैं। चट उसने नई स्ट्रटजी प्लान की। दूसरे दिन लेला ने दासी को खाली कटोरा देते हुए कहा आज मजनू से इसी कटोर भर खून माग लाओ।

दासी गई तो रास्ते मे रोज दूध पीने वाले मनजुओ की भीड ने उसे घेर लिया। उचक उचककर सभी कटोरे की ओर देख रहे थे लेकिन दासी ने कटोग किसी को नही दिया और कहा आज मे मजनू के लिए दूध लेकर नही आई हू, बल्कि उससे कुछ लेने आई हू।

क्या?

लैला ने इसी कटारे भर खून मागा है कौन है मजनू कोन देगा?

दासी बारी बारी से सबके पास गई लेकिन उसे खाली ही लौटना पडा। अत मे एक ने कहा लैला से कहना कि हम दूध पीने वाले मजनू हे। खून देने वाले नही।

खून देने वाला मजनू कहा है? दासी ने पूछा।

वह तो उस पेड क नीचे बैठा अपनी किस्मत पर आसू बहा रहा है। वही लैला के लिए खून देगा।

लैला की दासी अपना माथा ठोकते हुए असली मजनू की तलाश में चली गई।

पाठको! मैं लैला मजनू का घिसा पिटा किस्सा सुनाकर आपको बोर नही करना चाहता। मै आपको यह बताना चाहता हू कि मजनू सच्चा आशिक था क्योकि उसने दूध नही पिया था। और एसा मजनू किसी भी देश मे हजारो साल मे एक पैदा होता है। हमारे देश में आज कल दूध पीने वाले मजनुओं की भरमार है। न विश्वास हो तो किसी नेता से कहिए कि आप देश की भलाई के लिए कुरसी छोड़ दीजिए वह झट कहेगा मै वोट लेने वाला मजनू हू, कुरसी छोडने वाला नही।

पूरी उम्मीद है कि आपको यह सुनने को मिल जाए। जनता की भलाई के लिए दीवाना (मजनू) तो इस देश मे एक ही पैदा हुआ था वह भी चल बसा। लेकिन उसी के नाम पर हम आज सब कुछ कर रहे हैं। वह न होता तो आज हम इस जगह नही होते उसी ने हमे इतना ऊपर उठाया है लेकिन हमने उसे उसके आदर्शो को भुला दिया है

यमराज की आशका

आपातकाल के दौरान का किस्सा है यमराज यमलाक की पालिटिकल अफेयर कमटी के साथ गहन विचार विमर्श मे लीन थे। अचानक एक दूत ने खबर दी प्रभु भूलाक के दो नेता आपसे परामर्श के लिए आए हं।

यमराज ने कमेटी की मीटिग स्थगित कर दी और दूत से कहा उन्हे सादर ले आओ।

दाना नेता यमराज के आफिस म पहुच। यमराज न पहल उनसे हाथ मिलाया फिर कुरसी पर बिठाया ओर पूछा आप लोग ठडा लग या गरम?

यमराज ने अपन हाथ से उन्हे पानी पिलाया। यमलोक के चपरासी अपने बास की विनम्रता पर हैरान रह गए।

यमराज न फिर कहा मै आप लोगा की और क्या सेवा कर सकता हू

एक नता न गभीरता ाढत हुए कहा हम आपसे कोई ऐसा तरीका पूछने आए हे जिससे हमारे देश की आबादी कम हो सके।

यमराज मुसकराए क्योकि यह उनके फायदे की बात थी सो वे उन नताआ को गुर समझाने लगे। अभी उनकी बातचीत चल ही रही थी कि यमदूत ने आकर खबर दी प्रभु भूलोक के महानेता आए हैं।

महानेता का नाम सनते ही यमराज और अन्य दोनो नेता हड़बडा उठे क्याकि महानेता ने ही उन नेताओ को भजा था। वे नेता मन ही मन डरने लगे कि हम लोगो स कोई गलती हो गई है तभी महानता ने स्वय यहा तक आने का कष्ट किया है।

व एक तरह स कापने लगे। यमराज को भी उनकी हालत देखकर पसीना आ गया। यमराज महानेता के स्वागत की तेयारी करन लगे।

वास्तविकता यह थी कि महानेता को अपने नेताओ पर विश्वास नही था इसलिए वे खुद भी यमराज के पास पहुच गए—यह पता लगाने के लिए कि उन्हान यमराज स क्या क्या बात की।

बहरहाल महानेता यमराज के आफिस मे पहुचे। दोनो नेताओ तथा यमराज ने उनका अभिवादन किया।

यमराज ने पूछा आप क्या लेगे—ठडा या गरम?

ठडा। महानेता बोले।

ठीक है। यह रहा गिलास ओर वह रही सुराही पानी निकालकर पी लीजिए। यमराज बाले।

महानेता ने स्वय उठकर पानी पीने के बाद यमराज से कहा आपने हमारे इन साथियो को जो कुछ बताया उसकी मुझे भी जानकारी दीजिए।

यमराज ने दोना नेताओ के साथ हुई वार्ता की पूरी जानकारी महानेता को दी। यमराज ने महानेता क साथ कुछ देर तक गुप्त मत्रणा की फिर सबको विदा दी।

नेता और महानेता के चले जाने के बाद यमराज ने अपने माथे का पसीना पोछा ओर चैन से कुरसी पर बैठकर कुछ चितन करने लगे।

थोडी देर बाद उन्हाने आखे खोली तो वही यमदूत फिर आया। यमदूत को देखते ही यमराज उछलकर बोले क्या फिर कोई आया है?

नही प्रभु लेकिन मै अपनी एक शका का समाधान चाहता हू।

बोलो

आपने भूलोक से आए दो नेताओ को तो अपने हाथ से पानी पिलाया जबकि महानेता को खुद अपने हाथ से लेकर पानी पीने के लिए कहा क्या आपने महानेता का अपमान क्यो किया?

देखो मैन महानेता का अपमान नही किया। असल मे मुझे यह डर । कि अगर थोडी देर के लिए भी म कुरसी से हटता तो वे मेरी कुरसी पर बेठ जाते और मै बेकार हो जाता

धन्य हो प्रभु! आपन आज यमलोक को भूलोक होने से बचा लिया। यमदूत ने श्रद्धा से सिर नवाया।

यमराज बोले यमलोक की सीमा चौकिया को आर्डर भिजवा दो कि आग से भूलाक का कोई नेता यमलोक मे न आने पाए।

दाढी ऐसी चाहिए

नेताजी की दाढी ने भारतीय राजनीति म कमाल दिखाया उसके बारे मे किसे पता नही? अगर कोई उनकी दाढी को नही जानता तो वह सबसे अनपढ (मूर्ख नहीं) आदमी माना जाना चाहिए। उनकी दाढी के बारे मे जाने बिना कोई भारतीय राजनीति का क ख ग भी नही जान सकता और जो राजनीति नही जानता वह दश को नहा जानता क्योकि देश अब राजनीति का पर्याय बन गया है।

देखा जाए तो नेताजी की दाढी जितनी सफल हुई है उतनी माहिर से माहिर राजनीतिज्ञ की रणनीति भी नही। गजनीति के झोके मे बडे बडे बह गए लेकिन दाढी कहती रही कि कितना पानी उनके सिर और दाढी के बाल राजनीति के लिए मुसीबत बन गए। उनमे इतनी शक्ति लगती हे जितनी सेमसन के बालों म थी। यह बात अभी समय के गर्त मे हे कि नेताजी की दाढी भी कोई डिलैला ही आखिरी बार मूडेगी या कोई और।

कहते हैं उन्होने दाढ़ी और सिर के बाल बढ़ाकर दो प्रधानमत्री गद्दी से उतार दिए। उन्होंने दोनो बार प्रतीक्षा की और राजनीति का चक्कर कुछ ऐसा चला कि प्रधानमत्रियो को गद्दी से उतरना पडा। अब यह शोध का विषय है कि उनकी प्रतीक्षा की वजह से ऐसी घटनाए हुईं या घटनाए इस तरह हुईं कि उनकी दाढ़ी की लाज रह गई।

दाढी और घटनाओ के बीच कार्य कारण का सबध स्थापित करना वैज्ञानिको का काम हे लेकिन मै इतना जरूर कहूगा कि उनकी दाढी ने नेताओ मे एक आतक फैला दिया है। अब तो यह आलम है कि जब भी वे दाढ़ी और सिर के बाल बढाने की घोषणा करते हे कुरसी से चिपका हुआ हर नेता सोचने लगता है कि अब किसकी बारी है? नेता लोग ऊपर वाले से हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगते ह कि हे भगवान मेरी कुरसी बचाना। हालाकि वे घोषित कर देते है कि इस बार किस शुभ काम को पूरा करने के लिए दाढ़ी और सिर के बाल बढ़ा रहे हैं फिर भी लोग शकित रहते ह क्याकि जब श्रीमती इदिरा गाधी पराजित हईं तो काग्रेस ही साफ हो गई और जब श्री मोरारजी देसाई ने कुरसी छोडी तो

जान कितन लागा की नोकरी चली गई। लागा को इसलिए उनकी दाढी से डर लगता हे कि कही गहू के साथ घुन भी न पिस जाए। इसका मात्र कारण यही हे कि वह गहू का तो नाम बता देते ह और घुन अपने आप समझ जाते हे कि अब वे पिसन वाले ँ। इसी वजह से उनकी दाढ़ी और सिर के बालो का आतक फैला हुआ हे।

उनकी दाढी और सिर के बालो के साथ एक मजेदार बात यह है कि वे उन्हे राष्ट्रीय सग्रहालय म रखवाना चाहते है जबकि अन्य ऐतिहासिक महत्त्व की चीजो को सग्रहालय मे रखने के बारे मे सरकार निर्णय करती हे अपने बालो के बारे म वे स्वय सिफारिश कर रहे ह। लेकिन मेरा आग्रह केवल इतना है कि अगर उनके सिर और दाढी के बाल राष्टीय सग्रहालय मे रखे जाए तो उनके साथ ही उस नाई का उस्तरा भी रखा जाए जिसने उन्हे काटा है तथा वहा लिखा जाए— वे उस दाढ़ी और सिर के बाल ह जिन्होने राजनीति को बदल दिया और यह उस नाई का उस्तरा है जिसने उन बाला को भी उतार लिया।

इसकी ता महज कल्पना ही की जा सकती है कि अगर उस्तरा राजनीति मे सक्रिय हो जाए तो क्या कमाल कर सकता है?

लेकिन एक बात खुलने वाली है वह यह कि नेताजी ने व्यक्तियो को हटाने क लिए दाढी और सिर के बाल बढ़ाने की प्रतीक्षा की। वैसे नेता होने के नाते वह जनता की समस्याओ को ज्यादा समझ सकते हैं लेकिन उनकी समझ तो यही कहती है कि उन्हे व्यक्तिगत लड़ाई नहीं लड़नी चाहिए। देश मे जाने कितनी समस्याए हे जिनको हल करने तक दाढी और सिर के बाल बढ़ाए रखने की प्रतीक्षा की जा सकती है।

वास्तव मे देश मे आज उन नेताओ की जरूरत है जो पिछली राजनीतिक लडाई के लिए भीष्म प्रतिज्ञाए न करे और जनता की समस्याओ को हल करने के लिए अपना जीवन लगा दे। हालाकि नेताओ के लिए यही बहुत कठिन है क्योकि जो मजा कुरसी में है वह सेवा करने मे नही है। लेकिन आज देश किसी ऐसे नेता की प्रतीक्षा कर रहा है जो यह सकल्प करे कि जब तक बेरोजगारी भुखमरी और गरीबी देश से नही दूर हो जाएगी तब तक वह अपने सिर और दाढी के बाल नही मुडवाएगा। आइए हम सब उस सेक्युलर नीली छतरी वाले से आग्रह कर कि इस नेताप्रधान देश मे कम से कम एक नेता ऐसा पैदा कर दे क्योंकि—

दाढी ऐसी चाहिए जो काम देश के आए
भुखमरी गरीबी बेकारी को मारे और भगाए।

स्वर्ग का टिकट

जिस ओर भी नजर डालता हू, मुझे सेल दस से बीस प्रतिशत छट गिफ्ट कूपन आदि तरह तरह के आकर्षण खीचते हे लेकिन भला हो महगाई का जिसने मेरी जेब को गवाही देन के काबिल ही नही छोड़ा वरना जाने कितने की चपत पड जाती। खैर ललचाई हुई निगाहो से तरह तरह के विज्ञापनो को मन मारे देखते हुए आगे बढ रहा था कि मुझे एक मजमा दिखाई पडा। सैकडो लोग ग्वडे थे। समय बिताने के लिए मजमे से अच्छी चीज मे और कुछ नही मानता। मे भी व्रहा खडा हो गया। दखा एक आदमी जोर जोर से चिल्लाकर कह रहा था सुनिए जनाबेआला क्या कहता है मुनादीवाला। पहले सुनिए गौर कीजिए और फिर धुनिएगा।

एक बूढा आदमी भीड मे चिल्लाता है भई जल्दी बतलाओ नही तो मेरी बस छूट जाएगी।

नगाड़े पर चोट मारते हुए मुनादीवाला कहता है हा तो सज्जनो। सुनिए यह बिलकुल नया खेल है। स्वर्ग के टिकट का सेल है। बहुत रियायती दर पर टिकट पहुचेगा आपके घर पर।

एक नौजवान जोर से चीखता है यार क्यो नेताओ की तरह झूठ बोलते हो? कोई और गप्प मारो।

गप्प नही सरासर सच्च ह। विश्वास कीजिए। टिकट खरीदकर अपना भाग्य आजमाइए।

सिनेमा टिकट तो मिलता नही स्वर्ग का टिकट क्या मिलेगा? एक पोपले मुहवाला कहता है।

भगवान के दिए आफर पर भी आप लोगो को शक है?

हम तो अपने आप पर भी शक है एक अधेड आदमी कहता है तो लोग जोर से हसने लगते है।

मुनादीवाला फिर कहता है लेकिन यह सल केवल शादीशुदा लोगो के

लिए हे। भगवान का विचार हे कि शादीशुदा लोगो को जीते जी बहुत तकलीफ उठानी पडती है इसलिए स्वर्ग की कुछ खाली सीटे बिना पापपुण्य का हिसाब किए शादीशुदा लोगो के लिए रियायती दर पर बेचने की घोषणा की गई हे। आप लोग मौके का लाभ उठाइए। स्वर्ग का टिकट कटाइए और अपना अगला जन्म बनाइए।

लोगो की भीड उसक ऊपर टूट पडती है। धडाधड स्वर्ग के टिकट बिकने लगते हैं। मेने भी सोचा कि अपना इहलोक तो नही बना सका क्यो न परलाक ही बना लू और मैंने भी अपने लिए एक सीट बुक करा ली। घर लौटत वक्त मेरे पेर जमीन पर नही पड रहे थे। खुश हो रहा था कि जल्दी ही स्वर्ग मे पहुचकर ऐश करूगा।

रात को बिस्तर पर लेटा तो विचार आया कि क्यो न सबसे पहले म ही स्वर्ग पहुच जाऊ बाद मे कही ज्यादा भीड हो गई तो वेटिग लिस्ट मे नाम आ जाएगा। मै स्वर्ग की ओर चल पडा। मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना नही रहा कि एक आदमी मेरे आगे आगे चला जा रहा था। सबसे पहले वह स्वर्ग के दरवाज पर पहुचा। उसने पहले दरवाजा खटखटाया। मै चुपचाप एक किनारे खडा हो गया। दिल धडाक धडाक धडक रहा था। मैं बडी बेसब्री स आगे होने वाली घटना की प्रतीक्षा करने लगा।

तभी एक देवदूत ने दरवाजा खोला। उसने उस आदमी से पहला सवाल पूछा तुम कौन हो?

मैंने सेल मे स्वर्ग का टिकट खरीदा है।

तुम शादीशुदा हो

हा उस आदमी ने जवाब दिया।

तो जल्दी से भीतर आ जाओ तुमने बहुत तकलीफ उठाई होगी।

उस आदमी को भीतर करके देवदूत ने झट से दरवाजा बद कर लिया। मै चिल्लाता रह गया।

थोड़ी देर रुककर मैने भी दरवाजा खटखटाया।

उसी देवदूत ने दरवाजा खोला। उसने पहल मुझे ऊपर नीचे देखा फिर कुछ झुझलाकर कहा तुम कौन हो?

मैंने भी स्वर्ग का टिकट खरीदा है।

शादीशुदा हो?

यह सोचकर कि ज्यादा सुविधा मिलेगी मैंने कह दिया शादी एक नहीं

दो दो की। यह कहकर मैं देवदूत की ओर गर्व से देखने लगा। देवदूत आखें फाड फा~कर मेरी ओर देखने लगा।

मै समझ नही पाया कि वह क्या देख रहा हे? मुझे अदर जाने की जल्दी हो रही थी। लेकिन देवदूत मुझे घूरे जा रहा था। फिर मैंने उसे टिकट दिखाते हुए कहा क्या मैं अदर आ जाऊ?

नही। उसने जोर से कहा।

क्यो? मुझे भी गुस्सा आ गया।

क्योकि स्वर्ग मे बेवकूफो के लिए कोई जगह नही है। देवदूत बोला।

तुमने केसे समझ लिया कि मै बेवकूफ हू? मैने प्रश्न किया।

एक शादी ही आदमी की जिदगी बरबाद करने के लिए काफी है फिर तुमने तो दो दो शादिया की। क्या यह अक्लमदी कही जाएगी

लेकिन मैने तो टिकट खरीदा है

गलत। यह टिकट तुमने ब्लैक मे खरीदा होगा क्योकि स्वर्ग का टिकट एक शादीवालो को ही बेचवाया गया था। यह कहकर देवदूत ने दरवाजा बद कर लिया।

और मै लोटते वक्त यह सोच रहा था कि मैंने झूठ न बोला होता नो स्वर्ग म जमकर ऐश करता लेकिन अब तो मेरे दस रुपये डूब गए। इस महगाई मे यह घाटा कैसे पूरा करू?

नेताजी का फैसला

एक था किसान। उसका नाम था—बिरजू। वह बहुत ही गरीब था और जमीन के एक टुकडे पर सब्जिया उपजाकर अपने परिवार का गुजारा करता था वह जो कुछ मिलता था उसी मे खुश था लेकिन उसकी भी खुशी लोगो से देखी नही गई और एक दिन एक दूसरे किसान ने जो गाव का छोटा मोटा जमीदार था उसकी जमीन पर अपना कब्जा कर लिया बिरजू रोता रहा गिडगिडाता रहा लेकिन दूसरे किसान ने उसकी एक भी न सुनी

बिरजू बोला यह मेरे बाप दादा की जमीन है यह मेरी है। इसे तुम नही जोत सकते।

दूसरे किसान ने गुर्राते हुए कहा नही यह जमीन अब मेरी है। उस पर मै सब्जिया पैदा करूगा।

फिर मै क्या करूगा?

मैने तुम्हारा ठेका तो लिया नही है। दूसरे किसान ने जवाब दिया।

बिरजू उसके पैरो पर गिर पड़ा तो उसने कहा अच्छा चलो नेताजी के पास। जो फैसला करेंगे वही करेगे और उसे हम दोनो को मानना पडेगा।

बिरजू ने सोचा कि नेता तो जनसेवक होते हैं। उनका फैसला हमारे ही पक्ष मे जाएगा।

उसने कहा ठीक है। मुझे तुम्हारी शर्त मजूर है।

दोनो नेता के पास पहुचे। उनको देखकर नेताजी की आखो मे वैसी ही चमक आ गई जैसी कि शिकार को देखकर भेडिये की आखो मे आ जाती है। नेताजी ने अपने होठो पर जीभ फेरते हुए कहा कहिए मै आप लोगो की क्या सेवा कर सकता हू?

बिरजू बोला हुजूर माई बाप हैं।

देखो मैं माई बाप नही आप लोगो का सेवक हू। अच्छा आगे कहिए। नेताजी बोले।

बिरजू ने पूरी दास्तान सुना दी ता नेताजी ने दूसरे किसान से पूछा।

दूसरा किसान बोला सरकार यह झूठ बोल रहा है। जमीन मेरी है। आप चाहे तो पटवारी को बुलवाकर कागज देख सकते हैं।

मामला बडा उलझा हुआ था। नेताजी ने कछ देर तक चितन किया फिर कहा म इस मामले का फैसला कर दूगा लेकिन मेरी शर्त यह हैं कि आप लोगा को मेरा फेसला मानना पडेगा बोलिए मजूर है?

मजूर है। मजूर है। दोनो एक साथ चिल्लाए।

नेताजी मुसकराए ओर दार्शनिक के अदाज मे बोले यह दुनिया मोह माया का जाल है हर आदमी निन्यानबे के चक्कर मे फसा हुआ है। चार दिन की जिदगी है हस गाकर गुजार दो आपस मे लडते क्यो हो?

बिरजू ने हाथ जोड़कर कहा आप हस हैं। दूध का दूध और पानी का पानी कर दीजिए।

नेताजी ने आगे कहना जारी रखा जो चीज झगडे की जड़ है उसे त्याग दीजिए आप दोनो वचन दीजिए कि मेरी बाते मानेगे।

दोनो ने कहा हा सरकार। हम वचन देते है।

तो यह जमीन आज से हमारे कब्जे मे आ गई।

दोनो इस अजीबोगरीब फैसले से भौचक्के रह गए।

बिरजू हाथ जोडकर बोला लेकिन सरकार। मेरे बाल बच्चो का

नेताजी उसकी बात काटते हुए बोले अब आप लोगो को कुछ कहने का अधिकार नही है। आप लोग वचन दे चुके है। और भारतीय पुरुष वचन देकर नही मुकरता

दोनो निरुत्तर हो गए और उसी प्रकार ज्ञानवान् होकर लौट पडे जैसे बोधिवृक्ष के नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।

नबर दो की सरकार

लोग कहते ह सरकार बदल गई हं। बदलते हुए हमने भी देखा था लेकिन अब एसा लगता है कि सरकार तो वैसे ही चल रही है चलाने वाले भर बदले हैं। उसी तरह जेसे किसी पुराने मवान पर नया रग रोगन होने के बाद नया किरायेदार आकर रहने लगता ह। नेकिन बरसात होने पर रग बदरग होने का खतरा बना रहता है।

लोगो वो पता नही सरकार मे क्या क्या बदलाव नजर आ रहा है लेकिन मुझे लगता है कि पिछली सरकार हर चीज को देखती थी और यह मरकार हर मामल को रिव्यू कर रही है और आम सहमति बनाने की कोशिश कर रही है। इस सरकार के लिए हर मर्ज की दवा आम सहमति है। आम सहमति के लिए इतनी समितिया भी सरकार बना चुकी है कि शायद उनकी जाच के लिए भी समिति बनानी पड़े।

वेसे यह किसी काम को टालने का बहुत बढिया बहाना है। आप कोई भी समस्या लेकर जाइए सरकार तुरत समिति बनाने की घोषणा कर देगी। समिति की रिपोर्ट आने तक समस्या लटक गई। अब दोबारा जाने पर सरकार कह देगी कि अभी समिति की रिपोर्ट नही आई है। और समिति तभी रिपोर्ट देगी जब सरकार चाहेगी। सरकार तभी चाहेगी जब सत्तारूढ दल को कोई विशेष लाभ मिलने की गुजाइश होगी। गुजाइश कब होगी यह तो नेता जाने।

एक बदलाव तो बिलकुल सॉलिड दिखाई दे रहा है। यह सरकार ग्रामीण क्षेत्रो की ओर विशेष ध्यान दे रही हे। न केवल उन क्षेत्रो का आर्थिक विकास कर रही है बल्कि उनकी बोलिया को भी शहरो मे प्रतिष्ठा दिलवा रही है। आचलिक ठेठ शब्दो का इस्तेमाल अग्रेजी अखबारो मे भी शु हो गया है। इसका श्रेय इस सरकार के नेताओ को जाता है। इस सरकार मे अगर हर इलाके का एक एक नेता आचलिक बोलिया बोलने वाला होता तो बोलियों और भाषाओ को प्रतिष्ठा दिलाने का सेहरा सरकार के सिर पर खुद ही बध जाता। न हीग

लगता न फिटकरी और रंग चोखा होता।

वैसे अभी इस सरकार के दिन ही कितने हुए हैं। हो सकता है कि कोई और गुदडी का लाल निकल जाए जो अभी कही अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए छटपटा रहा हो। बस जरूरत है उसकी तलाश करने की। जब सरकार को चार चाद लगने होगे तो वह प्रतिभा अपने आप आगे आ जाएगी—ऐसा मेरा विश्वास है।

एक बार मैने एक ऐसे मित्र से बात की जो कोऊ नृप होय हमहि का हानी मे विश्वास करते हैं। यानी उन्हे राजनीति से कुछ लेना देना नही। मैने उनसे सरकार के बारे मे पूछा तो वह बोले हमे तो सरकार से नही सरकार के अफसरो से काम कराना होता है और वे वैसे ही है जैसे पहले थे। नेता बदलने से अफसर नही बदलते। अगर अफसर बदल जाते है तो अफसरी का तरीका नही बदलता। अफसर ही सरकार चलाते है नेता नही।

अगर नेता बहुत डायनैमिक हो तब? मैंने पूछा।

नेता केवल वायदा कर सकता है उसको लागू तो अफसर ही करता है न उन्होने कहा फिर अफसर भी यह देखते हैं कि सरकार कितने दिन चल सकती है उसी के अनुसार वे काम करते है। यह सरकार माइनरिटी मे है। इसमे माइनरिटी वाले खुश हो सकते हैं।

उनके इस तर्क पर मुझे हसी आ गई। वे मेरा मुह देखने लगे। फिर बोले अरे यह सरकार नबर दो की है।

क्या? मैं चौक गया।

हा नबर एक पर रहने वाली पार्टी ने सरकार बनाने से इनकार कर दिया तो नबर दो की पार्टी ने सरकार बनाई और नबर तीन और चार की पार्टिया उसे सपोर्ट कर रही हैं। नबर दो को लेफ्ट और राइट दोनों का सहयोग मिल रहा है इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है? नबर दो की सरकार है और नबर दो वालो की ऐश है।

उनकी बात सुनकर मुझे लगा कि सरकार सचमुच बदल गई है।

चल पडे सफर को

एक राजनीतिक दल का नेता तीन समाजवादी रोटिया लेकर विपक्षी दलो मे एकता कराने चला। वह हर यात्रा मे कम से कम तीन रोटिया लेकर चलता था जिससे उसे आम आदमी की तरह भुखमरी का शिकार न होना पड़े। आम आदमी का प्रतिनिधि होने के नाते वह किसी ढाबे मे भी अपनी भूख मिटा सकता था लेकिन उसे हमेशा यही डर लगा रहता कि कही साप्रदायिक रोटिया खिलाकर कोई उसका सेक्यूलर धर्म भ्रष्ट न कर दे।

हमेशा की तरह वह तीन रोटिया लेकर चला और चलता गया। चलते चलते शाम हो गई फिर रात आ गई लेकिन उसका चलना जारी रहा। बेचारा कितनी देर चलता। थक गया। रात गुजारने के लिए ठौर तलाशने लगा। आसपास बहुत से घर थे। वह किसी घर के बरामदे मे रात गुजारना चाहता था। अचानक उसे खयाल आया कि वह घर साप्रदायिक न हो वरना अगले दिन से उस पर साप्रदायिक घर मे रात गुजारने के आरोप लगने लगेगे। वह दो रोटिया खा चुका था सिर्फ एक बची थी।

अचानक नेता की नजर एक वटवृक्ष पर पडी। वह खुश हो गया। उसने बरगद पर ही रात बिताने का फैसला किया। वह बरगद की एक डाल पर बैठकर बरगदमय हो गया। उसने सोचा— समाजवाद एक बरगद की तरह है और बरगद कभी कभी इतना पुराना हो जाता है कि पता ही नही चलता—उसकी जड कौन सी है? डालो से जडे निकली हें या जडो से डाले? इस देश मे सभी समाजवाद का नारा लगा रहे हें लेकिन कोई उसकी जड नही पकड़ पा रहा है। मै समाजवाद की जड़ पकड़कर लोगो को दिखाऊगा।

नेता का चितन जारी रहा। उसने सोचा कि अगर मैने एकता करा दी तो अगले इलेक्शन के बाद पी एम बन जाऊगा। हाय पी एम की कुरसी भी क्या चीज होती है? हर नेता पैदा होते ही उसी के बारे मे सोचता है भले ही वह ग्राम प्रधान भी न बन पाए। सोचने मे तो कोई हर्ज नही है। महत्त्वाकाक्षी होने का

अधिकार हर व्यक्ति को है लेकिन अपने महत्त्व की भी परख कर लेनी चाहिए। वैसे गलतफहमी का कोई इलाज नही है।

अभी नेता का चितन च न रहा था कि नेतानुमा चार आदमी और भी बरगद क नीचे आए और अधेरा होन की वजह से वही रात गुजारने की सोचने लगे।

बरगद पर बैठा नता सतर्क हो गया। वह समझ गया कि नीचे के लोग भी उसकी जाति के है। वह नीचे उतरना चाहता था लेकिन उन चारो की बाते सुनकर उसकी हिम्मत नही हुई। वह चुप बैठा उनकी बाते सुनने लगा।

एक ने कहा सुना है अ हमारे बीच एकता कराने की कोशिश कर रहा है। इसके पीछे उसका स्वार्थ है।

दूसरा यार वह पी एम बनना चाहता है।

तीसरा हमी लोगो ने उसको लिफ्ट दिया और ऊपर उठाया। अब वह हमारे सिर पर पैर रखकर आगे निकलना चाहता है।

चौथा सच तो यह है कि हमारे बीच कोई झगडा ही नही है। हम साढे चार साल तक कुछ बोलते ही नही केवल चुनाव आता है तभी कुछ करते हैं।

बरगद पर बैठा नेता खासने लगा। नीचे बैठे नेता चौंक गए। वे सोचने लगे कि कोई जासूस उनकी बातें सुन रहा है। वे सतर्क हो गए। काश भगवान न उन्हें उल्लू की आखे दी होती तो वे देख लेते कि बरगद पर कोन बैठा है। काफी देर खामोश रहने के बाद उन्होने बातचीत फिर शुरू की।

पहला वह चाहता है कि हम लोग अभी से उसको नेता मानकर चुनाव लडे।

दूसरा हम उससे किस मामले मे कम हे हम भी आखिर आल इडिया लेवल के लीडर है।

तीसरा उसकी टाग खीचना जरूरी है वरना वह बहुत आगे बढ जाएगा।

चौथा अरे हमारे सामने जे पी की नही चल पाई। जब सिद्धात की बात आई तो हमने पार्टी तोड़ दी फिर यह किस खेत की मूली है

पहला हमे यह भी नही भूलना है कि वह अभी तक कुरसीधारी था और बिना कुरसी के रह नही सकता।

दूसरा यार। कुरसी के बिना तो हम भी नही रह सकते

तीसरा हमारी सारी लडाई ही सत्ता और कुरसी के लिए है।

चोथा   और यह लडाई जारी रहेगी। हमारा तो कहना यह है कि पहले चुनाव लडो फिर पी एम की कुरसी के लिए लडो।

पहला   हमारे बीच इस बात के लिए कोई मतभेद नही कि हमे सत्ता पर कब्जा करना है।

दूसरा   यह बात ओर है कि सत्ता हमे नही मिलती।

तीसरा   हमे जनता के बारे मे भी सोचना चाहिए।

चौथा   जब चुनाव करीब आ जाएगा तो उसकी भी सोचेगे।

इसी तरह बाते करते करते भोर हो गई। बरगद पर बैठे नेता की भी आखे खल गई थी। उसे यथार्थ के दर्शन हो चुके थे।

नीचे वाले चारो नेता चले गए तो वह बरगद से नीचे उतरा। वह साचने लगा कि अब क्या करे यहा सब लीडर है फालाअर कोई नही। काश मन अपना घर न छोडा होता तो आज य दिन देखने को नही मिलते। कम से कम एक कुरसी तो हमारे पास हाती। अब तो वह भी चली गई। लेकिन अब घर लौटना भी सभव नही था।

काफी देर तक चितन के बाद उसने तय किया कि उसे बची हुई रोटी खा लेनी चाहिए।

नेता ने रोटी खाने के बाद कुछ देर बरगद के नीचे आराम किया उसके बाद चल पडा। वह चलता ही जा रहा है। कहा जाएगा—उसे खुद पता नही।

पुरानी सरकार गिरफ्तारी और महगाई

दूसरी आजादी मिलने के बाद से महगाई प्रगति के पथ पर तेजी से बढती चली जा रही हे। और लाग महगाई की प्रगति पर हो हल्ला मचा रहे हैं। अपने देश के लोग भी अजीब हे कोई चीज प्रगति पर है तो उसकी प्रगति को रोकने के लिए शोर मचात हे और जब कोई चाज पिछडती हे तो पिछड़ेपन का रोना रोते है। यानी किसी तरह से लोग चुप बैठने वाले नही। मै तो यह समझता हू कि प्रगति तो प्रगति ही कही जाएगी चाहे वह भ्रष्टाचार के क्षेत्र मे हो या महगाई के या तक‍ीकी क्षेत्र मे। प्रगति शब्द का अर्थ नही बदला जा सकता।

महगाई के सिलसिले मे जब मे अपने मुहल्ले के भैयाजी से इटरव्यू लेने गया तो वे बहुत खुश हुए। पहुचते ही बोले आजकल महगाई की बहुत चर्चा है तुम भी उसी के बारे मे पूछोगे। पूछो क्या पूछना है? मै बिलकुल तैयार बैठा हू।

मैंने पहला प्रश्न किया महगाई क्यो आई?

वे मुसकराए फिर गभीर होकर बोले भई महगाई के लिए मैं इस देश की जनता को दोषी मानता हू। सरकार इसमे किसी भी तरह इनवाल्व नही है।

वह कैसे? मैने पूछा।

वह ऐसे कि हमारे देश के लोग एक जमाना था कि भोजन इसलिए करते थ कि जी सके। लेकिन आजकल लोगो की धारणा बदल गई है। अब बहुत स्वार्थी हो गए ह और खाने के लिए ही जीत हैं। अगर हम पुराने आदर्शों पर फिर चलने लगें तो महगाई चुटकी बजाते ख‍म हो सकती है। इस दिशा मे सरकार नही जनता ही सब कुछ कर सकती हे।

मैने दूसरा प्रश्न किया लेकिन जनता की तकलीफे दूर करना सरकार का भी तो फर्ज हे

फर्ज है लेकिन जब तक जनता सहयोग नहीं करती तब तक हम कुछ नही कर सकते वे कुछ और गभीरता ओढ़ते हुए बोले हर काम के लिए

वर्तमान सरकार को कोई भी कुछ नही कहता इसलिए हमने एक नई परपरा की शुरुआत की है वह है हर चीज के लिए पुरानी सरकार को दोषी ठहराना यहा तक कि मच्छरो के लिए भी हम पुरानी सरकार को ही दोषी मानते हे।

उनकी बाते सुनकर म कुछ चकरा सा गया। मंने कहा लेकिन आप उसे अरस्ट यानी गिरफ्तार तो कर सकते है?

गिरफ्तार शब्द सुनते ही वे मुस्कराए। कहने लगे हमारी सरकार लोगो को शोकिया गिरफ्तार करने मे जरा भी विश्वास नही करती बदले या विरोध की भावना से गिरफ्तार करना हम पसद नही करते।

यह तो अच्छी बात है। मे बाला लेकिन महगाई क बारे मे आप क्या कर रहे हें?

हमने कह दिया न कि बेकार की गिरफ्तारी म हम विश्वास नही करते। हम जाच कर रह हे और जैसे ही महगाई के खिलाफ कोई मामला बनेगा हम उसे गिरफ्तार कर लेगे

मामला कब तक बनेगा

हम चाह तो आज बना ले लेकिन अभी हमे और भी काम करने हैं। महगाई क बारे म बाद मे सोचेगे पहले अपनी कुरसी के बारे मे ता सोच ल

अब हमारे पास उनसे पूछने के लिए बचा ही क्या था

पानी उतर गया

सुबह का वक्त था। नता सेवकराम अखबार मे अपने दौरे के बारे मे छपी खबर ढूढ रहे थे। वास्तव मे कल वह उस इलाके के दौरे पर गए थे जहा की जनता ने उन्हे चुना था। वह जनता अब बुरी तरह बाढ़ मे फसी थी। सेवकराम ने अपनी जनता को भरपूर सरकारी सहायता दिलाने का आश्वासन ही नही दिया बल्कि अपने रिश्तदारो के माध्यम से काफी सरकारी पैसा बटवाया भी। यह बात दीगर है कि अगर एक लाख रुपये बाढ पीडितों मे बटे तो चार लाख रुपये उनके रिश्तदारो ने भूले स अपने घर मे भर लिए। यह तो जग का नियम है कि जो सेवा करेगा सो मेवा खाएगा।

सेवकराम झुझलाए। अखबार मे आठवे पृष्ठ पर आठवे कालम के अत म दो लाइन की खबर थी। वह भी लगता था कि सिर्फ स्थान भरने के लिए छापी गई है। वह उस खबर को बार बार देख रहे थे।

उसी तरह उनका एक सी इन सी (चमचा इन चीफ) आ गया। उसक आते ही सेवकराम ने अखबार के ऊपर पूरा लेक्चर दे डाला। उन्होने अप्रत्यक्ष रूप से यह धमकी दे डाली कि सूचना मत्री बनने के बाद वह उस अखबार की खूब खबर लेगे।

चमचे ने ्नको सात्वना देते हुए कहा हुजूर इस बाढ मे तो आपकी खबर दो लाइन छप गई है लेकि। कल मुख्यमत्री भी तो उसी इलाक के दौरे पर गए थे उनकी खबर कही नही छपी है।

सेवकराम ने अखबार का पहला पृष्ठ चमचे के आगे कर दिया और कहा यही ता रोना है मुख्यमत्री की खबर पहल पृष्ठ पर है और मेरी खबर आठवे पृष्ठ पर।

सरकार। जल्दी ही वह समय आने वाला है जब आप पहले पृष्ठ पर होगे और मुख्यमत्री आठवे पृष्ठ पर।

वह सुनते ही सेवकराम ने चमचे की पीठ पर हाथ रखा धीरे बात करा।

कही कोई सुन लेगा तो मुख्यमत्री तक यह बात पहुच जाएगी और अपनी सारी योजना धरी की को धरी रह जाएगी।

इतने म एक और चमचा आया। उसने कहा   हुजूर आप धन्य हैं। आपके इलाके मे यमुना का जल कम हो रहा है। लगता है यमुना आपक चरणो को छने को प्यासी थी। महा ारत काल में आप जरूर अवतारी कृष्ण थे।

वह गद्‌गद हो गए। लेकिन अचानक उन्होने रेडियो पर खबर सुनी जिसमे कहा गया था कि अमुक अमुक इलाको का पानी उतर गया।

इन इलाको मे सेवकराम का भी इलाका था। यह खबर सुनते ही सेवकराम उदास हो गए। उनकी आखे छलछला उठी। यह देखकर चमचे हैरान रह गए कि पानी उतरने से नेताजी उदास हो गए जबकि उन्हे खुश होना चाहिए था।

सरकार आप पानी उतरने की बात सुनकर दु खी क्यो हो गए? एक चमचा बोला।

सेवकराम की आखो से टपर टपर आसू टपकने लगे। बडी मुश्किल से बाले   तुम लोग नही समझोगे। अरे तीस साल के बाद मेरे इलाके म पहली ार पानी चढा था वह भी उतर गया।

चमचे उनका मुह ताकने लगे।

वह बोले   जब इलाके का पानी उतर गया तो समझ लो मेरा भी पानी उतर गया। पानी उतर जाने के बाद मेरी जिदगी बेकार हो गई। अब मेरी जिदगी किस काम की? कहा भी है कि पानी गए न ऊबरे मोती मानुस चून।

और वह पुन रोने लगे।

गाइड-ए-इश्क

इश्क में न अब वह रगत रही न आशिको मे वह हौसला। हालाकि मिट्टी पानी सब कुछ वही हे फिर ऐसे आशिक क्यो नही पैदा होते जो लैला मजनू, शीरीं फरहाद सोहिनी महिवाल या रोमियो जूलियट की तरह तवारीख के पन्नो मे अपना नाम रोशन करते—यह शोध का विषय है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को इसके लिए फेलोशिप देनी चाहिए। शायद तभी पता चल सके कि आशिको की प्रजाति लुप्तप्राय क्यो हो रही है।

मैने जो ऊपरी तौर पर खोजबीन की उससे यही बात पता चली है कि आजकल के आशिको मे पुराने आशिको की तरह लबी पारी खेलने की क्षमता नही है। इश्क के विकेट पर वे ज्यादातर उसी तरह खेलते है जैसे भारतीय टीम एक दिवसीय मैच खेलती है। वे पहली स्लिप पर लपक लिए जाते है। बहुत ज्यादा कोई बढा तो मिड विकेट पर पकडा जाता है। या फिर विपक्षी फी डरो की कृपा से रिटायर्ड हर्ट हो जाता है।

कितने अफसोस की बात है कि स्ट्रेट ड्राइव कवर ड्राइव या लाग लेग पर कोई चौका या छक्का नही मार पाता। एक रन या दो रन लेने मे ही आशिको के छक्के छट जाते हे।

इसका एक कारण जो मुझे नजर आता है वह यह है कि लोग पुरानी तकनीक को भूल गए ह। इश्क के सेक्टर से चादनी रात नदी का किनारा या खूबसूरत नजारो का बिलकुल सफाया हो गया है। इश्क का वह आर्ट अब रह ही नही गया—वैसे ही जेस हेडलूम की जगह पावरलूम ने ले ली हो। जनाब हमे अपनी आशिकी का जमाना याद आता है जब हम घटो बूढे आम के पेड़ के नीचे बैठकर प्रेमिका का इतजार किया करते थे। इसके लिए हमे बहाने बनाने पडते थे कि दोस्त क घर पढने जा रहे हे। पढने जाते थे लेकिन इश्क का पाठ कई बार मा बाप के हाथो ठुकाई भी हो जाती थी। खैर खून खासी खुशी और इश्क छिपाए नही छिपते। फिर भी लोग छिपाने की कोशिश करते थे। उस समय भी

चार छह साल की इनिंग तो खेल ही जाते थ। आजकल तो इश्क ईलू से ईलू तक चलता है यानी आई लव यू से शुरू होता है और आई लीव यू पर समाप्त। असल म इश्क के लिए धैर्य चाहिए जो आजकल के युवक युवतियो म है नही। वह धीरे धीरे रग पर आता है।

दूसरी बात जो मुझे मि ी वह है ट्रैफिक का वन वे होना। सडक छाप आशिक किसी लडकी पर इस तरह उछालकर दिल फेक देते हे जैसे दिल आलू टमाटर हा। लडकी चली जा रही है और आप हाय हाय कर रहे हैं। अब आप हर लडकी पर अपना दिल लुटा देगे तो कैसे काम चलेगा? अरे! एक को चुनिए और अगर हिम्मत है तो स्लो मोशन मे मूव कीजिए—किसी स्टट फि म के हीरो की तरह नही। अगर लडकी प्यार नही करना चाहती तो उसके पीछे भागने की जरूरत नही।

इश्क तो बिलकुल लोकतत्र की तरह होता है। उसमे हिसा और आतकवाद का कोई स्थान नही। कुछ आशिकों ने अपनी माशूक को छु ा मार दिया या उसके ऊपर तेजाब फेक दिया। रूमानियत मे यह हैवानियत बडे अफसोस की बात है। असल मे यह सब वन वे के कारण होता है। अगर दोनों तरफ फिफ्टी फिफ्टी हो तो रग जमता है।

अगर आप किसी को चाहते हे और जानते है कि वह आपको नही मिल सकता (या सकती) है तो मन ही मन उसकी खुशी की दुआ कीजिए। उसको बरबाद करने की कभी कोशिश न कीजिए। अगर दिल मे कशिश है तो कभी न कभी तो उधर असर होगा ही।

मेरा इरादा नेताई अदाज मे भाषण पिलाना नही है। मै यह बताना चाहता हू कि हमारे जमान मे आशिक और माशूक के बीच जो खतो किताबत होती थी उसी से पता लग सकता है कि इस नाजुक मसले को कितनी पोलाइटली हॅडिल किया जाता था।

इश्क की शुरुआत कुछ इस तरह होती थी

लिखता/लिखती हू खत खून से स्याही न समझना।
मरता/मरती हू तेरे इश्क मे जिदा न समझना।

दोनो साइड से इस तरह के खत लिखे जाते थे। यानी यही से श्रीगणेश या उद्घाटन हाता था। जब बहुत दिनो तक कोई खत नही मिलता या आशिक माशूक आपस म नही मिल पाते तो लिखते थे

क्या बात हुई जो आजकल खत का आना बद है
रेल मे हडताल है या डाकखाना बद है?

ये हुई न कुछ बात कि दिल से दर्द टपकता है और लगता है कि दोनों ओर है आग बराबर लगी हुई। दो लाइना ने पूरी व्यवस्था पर चोट कर दी है और अपनी बात भी कह दी है।

आज क जमाने मे आशिक या माशूक ्स तरह का खत नही लिखते। भला हो सचार विभाग का जिसने टेलीफान सेवा उपल ध करा दी है। उसी पर लोग हाय हाय करते रहते हैं। खत लिखने मे जो मजा है वह फोन मे कहा अरे लोग खत भेज नही पाते थे तो लिख िखकर अपने पास रखते जाते थे और मोका मिलते ही एक साथ भेज देते थे। ऐसे चद खत हमारे पास भी हैं कोई चाहे तो नमूने के तौर पर देख सकता है।

अगर कभी दोनो अलग होते थे तो उसका इजहार भी बडे ढग से होता था। प्रेमी कही चला जाए और कई महीने से लापता रहे—ऐसे में प्रेमिका लिखती थी

प्रीतम बसे पहाड पर
हम जमुना के तीर।
अब की मिलन कठिन है
हिया उठत है पीर।

प्रेमी और प्रेमिका एक दूसरे के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहते थे। उनका कहना होता था

प्रेम करे तो अस करै
जस लोटा औ डोर।
आपन गला फसाय के
पानी लावै बोर।

इश्क के लिए जो फाइटिग स्प्रिट होनी चाहिए वह भी अब कहा रह गई है आज पलायनवादी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। अकसर पढने को मिलता है कि प्रेमी प्रेमिका स्लीपिग पिल्स खाकर हमेशा के लिए सो गए।

हम पूछते हैं कि स्लीपिग पिल्स खाने की क्या जरूरत आ गई? इस लोक मे नही तो परलोक मे मिल जाएगे अरे यहा नही मिल पाए तो वहा की क्या गारटी है? सलीम और अनारकली का जमाना नही रहा। इश्क भी सुपरफिशियल

हा गया हें। कहते हैं कि इश्क एक गहरे सागर की तरह है उसमे जितना डबिए उतना ही मोती मिलेगा। मरे क्यो—फाइट करते तब तो बहादुरी थी फाइटिंग स्प्रिट का तो जड से ही अभाव हो गया है

वस इश्क के लिए न कोई दिन मुकर्रर है न कोई उम्र। किसी भी स्टेज पर यह हो सकता हे। इसलिए परेशान हैरान होने की जरूरत नही। कुछ नही कर सकते तो सलमा आगा की आवाज की नकल कर सकते हे

दिल के अरमा आसुओ मे बह गए।
हम वफा करते कि तनहा रह गए।

सिर्फ एक नमूना और पेश करके मै नई पीढी के आशिको को सबक लेने के लिए कहूगा। मेरे कसबे की एक लडकी ने तीस साल पहले लिखा था

चदा की चादनी मे आसू बहा रही हू।
प्रीतम तुम्हारी याद मे सब्जी बना रही हू

वह अब भी यही लिखती है जबकि तीन अदद बच्चो की मा बन गई है यानी घरवाली हो जाने के बावजूद अपने प्रेमी के प्रति उसके मन मे स्थायीभाव बना हुआ है।

मेरे कहने का मतलब है—इश्क मे स्थायित्व चाहिए। अल्पमत सरकार की तरह डेढ दो साल के भीतर लुढ़कने की स्थिति नही आनी चाहिए। अब भी नही समझे? फिर इससे समझ लीजिए

वो मेरी बरबादियो पर हस के यू कहने लगे
आपसे किसने कहा था दिल लगाने के लिए

तलाश जारी है

जबसे अखबारो मे यह खबर छपी है कि मत्री बनने योग्य व्यक्ति नही मिल रहे हैं हमारे भोलारामजी की बाछे खिल गई है। हर समय मनहूसियत मे डूबे रहने वाले चेहरे पर मुसकराहट अगाथा क्रिस्टी के उपन्यास की मिस्ट्री की याद दिला देती है। उनसे कोई पूछता तो कहते बस कुछ न पूछो। इसके आगे नो कमेटस वाला अदाज बनाकर वह चल देते।

चार डिकेड तक राजनीति की उठापटक झेलने के बाद भोलाराम अब महसूसने लगे हैं कि उनके दिन फिरने वाले हैं। शायद इसीलिए वे हमेशा चलते फिरते नजर आते है। कई लोगो से वह कह भी चुके हैं कि अब मै म`ी बनने ही वाला हू।

भोलारामजी एक दिन जरूरत से ज्यादा खुश थे। मैने उनसे पूछा क्या शपथ लेने का निमत्रण मिल गया है?

वह चुपचाप मुझे अपने घर के भीतर ले गए और कहने लगे कि योग्य मत्रियो की तलाश के लिए उन्होंने सरकार को एक नायाब तरीका सुझाया है जिस पर अमल होने की पूरी सभावना है। इसके बाद उन्होने जो बताया वह सुनकर मैं दग रह गया।

भोलारामजी ने सरकार को सुझाव दिया है कि अन्य सरकारी पदों की तरह मत्रियो की पोस्ट के लिए भी विज्ञापन निकाले जाए जिनमे भारत के नागरिको से आवेदन पत्र मागकर बाकायदा रिटेन टेस्ट और इटरव्यू के जरिये नियुक्तिया की जाए।

मत्री पद के विज्ञापन का सक्षिप्त विवरण जो भोलारामजी ने बताया इस प्रकार है

आवश्यकता है कुछ मत्रियो की। आवेदन प्रपत्र कही से भी प्राप्त किए जा सकते हैं और कभी भी वापस किए जा सकते हैं। आवेदन प्रपत्रो की कोई कीमत नही

(लेकिन ये कितने कीमती हैं आप समझ सकते हैं) अत एक आदमी को एक फार्म से ज्यादा नही मिलेगा। ऐसी स्थिति मे कई पदो के लिए दावा पेश करने वालो को क्या करना चाहिए इसकी जानकारी उम्मीदवार को होनी जरूरी है। शार्टकट से अनभिज्ञ लोग बेहतर होगा कि आवेदन ही न करे।

आयु सीमा कम से कम पचपन वर्ष। इससे कम आयु वाले कृपया आवेदन न करे। विशेष परिस्थितियो मे आयु सीमा बढाई जा सकती है क्योकि अनुभवी व्यक्ति ही इस तरह के पद का भार उठा सकता है। (इसका अर्थ यह कतई नही कि वेट लिफ्टिग के चैंपियन इसमे आवेदन करे) बूढ़े तोते कुछ नया नही सीख सकते लेकिन इसमे सीखना जरूरी है।

शैक्षणिक योग्यता के नाम पर साक्षर होना आवश्यक है। प्रौढ़ शिक्षा केद्र से निकले लोगो को प्राथमिकता दी जाएगी। नेतागीरी का कम से कम तीस साल का अनभव। धरना घेराव जुलूस प्रदर्शनो आदि के बारे मे ऐसी प्रकाशित खबरो की कटिग भेजे जिसमे उम्मीदवार का नाम होना जरूरी है। चुनाव हारने वालो को वरीयता दी जाएगी। जमानत जब्त कराने वालो के प्रति विशेष सहानुभूति बरती जाएगी।

विशेष जिन आवेदन पत्रो के साथ सिफारिशी पत्र अधिक होगे उनको विशेष श्रेणी मे रखा जाएगा। अगर परिवार का कोई सदस्य या रिश्तेदार कही नेता हो तो उसका विशेष रूप से उल्लेख करे। योग्य उम्मीदवारो को साक्षात्कार के समय भाषण देने को कहा जाएगा। साथ ही नेतागिरी के लिए आवश्यक अन्य राजनीतिक तिकड़मबाजियो के बारे में सवाल किए जाएगे। लिखित परीक्षा मे केवल हेराफेरी भाई भतीजावाद भ्रष्टाचार तथा चदा उगाहने के तरीकों के बारे मे सवाल पूछे जाएगे।

मत्रियों की नियुक्ति केवल छह महीने के लिए की जाएगी। इस अवधि मे चुनाव जीतने वालो को कनफर्म कर दिया जाएगा। जो हारेगे उन्हे पद छोड़ना पडेगा। काम सतोषजनक न होने पर पहले भी इस्तीफा मागा जा सकता है। वैसे हर उम्मीदवार से पहले ही इस्तीफा लेकर रखा जाएगा और आवश्यक होने पर उसे ही तिथि डालकर प्रभावी घोषित कर दिया जाएगा।

कार्य यह तो आप समझ ही गए होगे कि एक मत्री को क्या करने पडते हैं।

वेतनमान वेतनमान निर्धारित नही है। जितना जो मान ले वही उसका वेतन होगा। भत्ते तो अनेक तरीको से बनाए जा सकते है। जितना भी चाहें बना सकते

ह लेकिन विरोधियो की नजर बचाकर।

कुछ अन्य शर्तें भी हैं जो गोपनीय हे और केवल नियुक्ति पत्र पाप्त करने वालो को ही वे बताई जाएगी। आपको खुला आमत्रण है। चाहे तो किस्मत आजमा सकते हे।

भो ारामजी का यह सुझाव अभी सार्वजनिक नही हुआ और अनेक लोग मत्री बा चुके हैं। बेचारे भोलारामजी अभी भी उम्मीद लगाए बैठे हैं। उनका कहना है कि मत्रियो की तलाश जारी है और जारी रहेगी।

दूसरी तरफ भोलारामजी का प्रयास जारी है और जारी रहेगा

गृहमत्रालय की ज्यादतिया

लोग कहते हैं कि आपातकाल कब का गया ज्यादतिया कब की गईं। यानी अब ज्यादतिया नही हो रही हैं। नेकिन यह आज का सबसे बडा सफेद झूठ है। आप कहेगे प्रमाण? अरे साहब हाथ कगन को आरसी क्या? मेरे गृहमत्रालय की ज्यादतिया बदस्तूर जारी है। ये ज्यादतिया आपातकाल से पहले भी हो रही थी आपातकाल मे तो खैर चरमसीमा पर थी और आपातकाल के बाद भी धूमधाम से चल रही है। अगर इन्हे रोकने का उचित प्रबध न किया गया तो पीढियो तक चलती रहगी। सरकार की नाक के ठीक नीचे ये ज्यादतिया वर्षों से होती रही है लेकिन सरकार कान मे तेल डाले पडी है। समझ मे नही आता गृहमत्रालय के साथ इतना पक्षपात क्यो किया जा रहा है?

गृहमत्रालय खुलआम अपनी सत्ता का दुरुपयोग कर रहा है। वह एक्स्टा कास्टीट्यूशनल पावर बन गया है लेकिन उसकी ओर कोई ध्यान नही दे रहा है। सभी लोग व्यक्तिगत आजादी की बात कर रहे है। लेकिन वे यह भूल रहे हैं कि बिना गृहमत्रालय के पख कतरे व्यक्तिगत आजादी का कोई मतलब नही।

यह सही है कि कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए गृहमत्रालय का मजबूत होना जरूरी है। लेकिन गृहमत्रालय तो बिलकुल तानाशाही रवैया अपना रहा है। यह हमारी लोकतान्त्रिक व्यवस्था के लिए सबसे बड़ा खतरा है जिसकी ओर अभी किसी का ध्यान नही जा रहा है। सविधान मे तमाम सशोधन किए गए है लेकिन गृहमत्रालय की ज्यादतियो को रोकने के लिए कोई व्यवस्था नही की गई। न कभी किसी नता ने ही इस सबध मे आवाज उठाई। पता नही लोग अपने गृहमत्रालय से इतना क्यो डरते हे डरता तो मै भी हू, लेकिन इसके बाद भी साहस करके गृहमत्रालय की ज्यादतियो को रोकने की माग कर रहा हू। आगे आने वाली पीढियो को निर्भय निर्द्वंद्व और स्वावलबी बनाने के लिए आवश्यक है कि उसे गृहमत्रालय का शिकार होने से रोका जाए। अगर हम अब नही जागे तो कभी नही जागेगे और हमारी सपूर्ण क्राति अधूरी रह जाएगी।

खुद देख लीजिए गृहमत्रालय का काम है घरेलू (किचन) मामलों का ध्यान रखना बच्चो मे ला ऐड आर्डर बनाए रखना जरूरत पडने पर फोर्स का इस्तेमाल बच्चो के साथ करना लेकिन गृहमत्रालय अपने कामो को ताक पर रख देता है और अन्य मामलो मे टाग अड़ाता है। वह वित्त रेवेन्यू, विदेश और व्यापार वाणिज्य के मामलो मे जरूरत से ज्यादा दखल देता है। बोनस और डी ए की रकम को बिना कारण बताए जब्त कर लेता है। यहा तक कि वह बजट भी बनाता है बजकि बजट बनाने का काम वित्तमत्रालय का है।

म अपनी ही कहू—अपने गृहमत्रालय के रेवेन्यू का एकमात्र स्रोत मै हू, लेकिन वह मेरे ऊपर बडी कठोर पाबदिया रखता है। मैं रात दिन यही सोचता रहता हू कि मै कैसा वित्तमत्री हू, जो गृहमत्री के कब्जे मे है। लेकिन जब अपने चारो ओर की दुनिया पर नजर दौड़ाता हू तो सतोष हो जाता है कि सभी वित्तमत्री अपने अपने गृहमत्री के कब्जे मे हैं त्रस्त है लेकिन मजे की बात है कि कभी आवाज नही उठाते।

अरे वित्तमत्रियो। अब समय आ गया है कि तुम एक हो जाओ। अपने अधिकारो की रक्षा के लिए ज्यादतियो के खिलाफ आवाज उठाओ। देश के गृहमत्री से इन ज्यादतियो की जाच के लिए एक आयोग बैठाने की माग की जा सकती है। हो सकता है कि गृहमत्री इस माग को आख मूदकर स्वीकार कर ले क्योंकि इस बात की पूरी आशका है कि गृहमत्री भी अपने गृहमत्रालय की ज्यादतियो से पीडित होगे और मौके की तलाश कर रहे होगे। भूतपूर्व गृहमत्री तो अखबारो में यह बयान भी दे चुके है कि उनके साथ ज्यादती हुई है। वर्तमान गृहमत्री भी अवश्य इस ज्यादती के शिकार होते होगे। भगवान करे वे ो। अगर ऐसा हुआ तो—हमारी मागे पूरी होने मे आसानी होगी।

इटरव्यू चमचे का

आपका नाम?

खुशामदी।

काम क्या करते हो?

खुशामद का।

दो पलो के बाद वे अपनी तोद पर हाथ फेरने लगे और वह अपने माथे पर छलछलाए पसीने को पोछने लगा।

अच्छा

जी हुजूर।

तो आप चमचे का इटरव्यू देने आए है?

जी सरकार आप नही मुझे तो आप तुम कहिए। मेरी और आपकी क्या बराबरी? उसने हाथ जोड लिए।

वे बोले अच्छा कुरसी पर बैठ जाओ।

नही हुजूर। मै आपके सामने कुरसी पर नही बैठ सकता। मेरी जगह तो आपके त वे के नीचे है। यह कहकर वह फर्श पर बैठ गया।

भाई तुम तो इटरव्यू देने आए हो

लेकिन चमचे का माई बाप

उन्हाने अगला सवाल किया चमचागिरी का कुछ अनुभव है?

हुजूर अनुभव से क्या बनता है अभी तो मैं कच्चा घडा हू, जिधर आप चाहोगे उधर मुझे मोड दोग आपकी छत्रछाया में ही सब कुछ सीखना चाहता हू।

अनुभवहीन होने के बावजूद तुम्हारा बोलने का अदाज तो बिलकुल मजे हुए चमचो जैसा है?

सब आपकी कृपा हे वरना मै किस खेत की मूली हू। आप तो सच्चे पारखी हैं। आपने मुझे पहचान भी लिया। मुझे तो कभी कभी ऐसा लगता है कि

मै जन्मजात चमचा हू बस एक मौका दीजिए

वे पैर फैलाकर लेटने चले। उनके पैर सोफे से बाहर लटकने लगे तो चट उसने कुरसी उनके पैरो के पास खिसका दी।

उन्होने मुसकराकर कहा   तुम एक प्रतिभाशाली चमचे हो। सभावना तो ऐसी लगती है कि तुम एक दिन महानतम चमचो मे से एक हो जाओगे। बस लगन और मेहनत की जरूरत है।

सच तो सरकार आप मेरी प्रतिभा को उभारकर देश के सामने रख दीजिए वरना देश एक महान चमचे से वचित रह जाएगा। बाद मे लोग आपका गुणगान करेगे कि अमुक का चमचा था। मैं आपकी सेवा करूगा और आप देश की सेवा करेगे।

सोफे पर अब वे बरसाती मेढक की तरह फैल चुके थे। उन्होने कहा बस आखिरी सवाल।

वह भी पूछ देखिए सरकार।

अच्छा तुम्हे बुलाकीराम के बारे मे क्या मालूम है?

सच तो यह है कि बुलाकीराम नामक प्राणी के बारे मे उसे सिर्फ इतना मालूम था कि कोई नेता है और उसके खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप है और उसकी जाच हो रही है। लेकिन उसने मौके को हाथ से नही जाने दिया। बोला   सरकार किस घटिया आदमी का नाम ले रहे हैं? इतना बडा बदमाश और गुडा तो पूरे देश मे नही मिलेगा।

क्या?

हा हुजूर अगर वह मेरे सामने पड जाए तो मै उसके मुह पर थूक दू।

हुह

जी हा। ऐसे बदमाश आदमी को तो उम्रकैद की सजा मिलनी चाहिए।

अचानक उनके चेहरे का रग बदला— गिरगिट की तरह।

घटी बजी— टन

घटी बजते ही एक मोटा आदमी आया। उसने झुककर सलामी दागी।

उन्होंने उसकी ओर देखकर कहा   इस आदमी को धक्के मारकर बाहर निकाल दो।

मोटे आदमी ने पास आकर उसका गला पकड लिया   चल। बाहर चल

हुजूर गुस्ताखी माफ करे। मुझसे गलती क्या हुई?

वे खामोश रहे।

उनका महाचमचा उसे घसीटे ले जा रहा था सीधे चल वरना उठाकर

बाहर आकर उस मोटे आदमी ने धीरे से पूछा तुमने हुजूर से अचानक
या कह दिया?

कुछ भी नही उन्होने बुलाकीराम क बार म पूछा तो मैंने उस कमीन
ता को खूब गालिया दी। इसमे हमारी गलती क्या है भला?

माट आदमी न अपना माथा ठोक लिया अरे बेवकूफ यही तो है
बुलाकीरामजी।

क्या ? उसकी आखो के आगे अधेरा छा गया। वह वहा से सिर पर
पैर रखकर भागा।

उस घटना से तो ऐसा लगता है कि आज की दुनिया मे आदमी बिना पूर्व
अनुभव के चमचा भी नही बन सकता

दस हजार का नोट

एक पाच और दस हजार के नोटो के विमुद्रीकरण से जहा सेठ गरीबदास चितित हुए वही म भी चितित हुआ। सेठ गरीबदास तो इसलिए कि इन नोटो मे जो काले पैसे उनके पास पडे हुए हैं उसे सफेद कैसे करे? और मै इसलिए कि आखिर लोगो को मुह क्या कहकर दिखाऊगा? मेरे लिए यह कितने शर्म की बात है कि अपने ही दश का नोट मैंने अभी तक नही देखा। लोग बैंक के सामने लाइनो में लगे नोट भुनाने के लिए खडे थे और मै उन्हे उसी तरह ताक रहा था जैसे बच्चा लालीपाप को देखता है। मुझे ऐसा लगा कि वे लोग मेरी बेबसी पर हस रहे है। मुझे तुच्छ समझ रहे है।

मेरे पास भी अगर हजार का एक ही नोट होता तो मैं भी पूजीपतियो के साथ लाइन मे खड़ा होता और थोडी देर के लिए गौरवान्वित हो लेता लेकिन यह सुख मेरी किस्मत मे नही बदा था। यही सुख देखना होता तो हिंदी का लेखक क्यो बनता पैसे होते तो हजार का एक नोट चार सौ रुपये मे खरीदकर ही थोड़ी देर उसे अपने पास रखने का सुख लूट लेता।

श्रीमतीजी से इस बारे मे प्रार्थना की तो वह भी टाल गईं। बोली अगर चार सौ रुपये होते तो मै पीछे क्यो रहती? पड़ोस की मिसेज शर्मा तो साढे तीन सौ में ही एक हजार का नोट बेच रही थी।

यानी हम पति पत्नी समान विचारधारा के पोषक थे। लेकिन इससे क्या होता है?

मुझे उस व्यक्ति पर बडा क्रोध आ रहा था जिसने यह कहा था कि पैसा हाथ का मैल होता है। मैल होता तो मेरे हाथ में होता क्योकि मेरे हाथ हिप्पियों से कम मैले नही हैं।

मै अभी इसी आघात को बरदाश्त करने की कोशिश कर रहा था कि सेठ करोडीमल आ धमके। वह बहुत हैरान परेशान और घबडाए हुए थे। वह कहने लगे मैं तो लुट गया। मेरे ता पूर दस हजार रुपये डूब गए। अब मै क्या करू

और वह धम्म से वही बैठ गए।

आखिर हो क्या क्या? मैने पूछा।

मेरे पास दस हजार का एक नोट है।

दस हजार म उनकी ओर आश्चर्य से दखता रहा।

हा।

f खाइए कहा हे?

उसको साथ लेकर चलना बडा रिस्की हे। घर पर पडा ह। समझ मे नही आ रहा हे कि क्या करू? उन्हाने कहा अब आप ही कुछ तरकीब सुझाइए

मैंने उनसे कहा आप बैठिए मे अभी आता हू।

घर के भीतर जाकर मेने पत्नी को दस हजार के नोट की बात बताई तो वह भी चौक गई। बोली मुझे भी दिखा दो।

थोडी देर बाद जब मै सेठ करोडीमल के पास पहुचा तो वह अधबेहोशी की हालत मे पहुच चुके थे।

मैंने उन्हे सात्वना देते हुए कहा सेठजी घबराइए नही। मै एक तरकीब बताता हू।

उनमे तो जैसे फिर से जान आ गई। उछलकर बैठ गए भैया जल्दी बताओ। मेरी तो जान निकल रही है।

मनै कहा सेठजी आसपास के दस बीस किलोमीटर के इलाके मे किसी के पास दस हजार का नोट नही होगा। आप इसे अपने पास ही रहने दीजिए। कम से कम हम गर्व से कह सकेगे कि हमारे इलाके के सेठ करोड़ीमल के पास दस हजार का नो˜ है।

वह बोले तुम मेरे दस हजार क्यो डुबोना चाहते हो

मने उन्हे समझाते हुए कहा कि एक तरीका है जिससे लाठी भी नही टूटेगी और साप भी मर जाएगा।

वह क्या है?

आप कुल दस बीस रुपये खर्च करके पूरे इलाके मे डुगडुगी बजवा दीजिए कि सेठ करोडीमल के पास दस हजार का नोट है। जो लोग देखना चाहे वे कल सुबह आठ बजे लाइन लगाकर खड़े हो जाए। हर व्यक्ति को दस पैसे का टिकट लेना पडेगा और उस नोट का शीशे मे फ्रेम कराकर एक कमरे मे सजाकर रख दीजिए। लोग आएगे पैसे देगे देखेग और चले जाएगे।

सेठजी के मन मे मेरी बात जम गई।

अगले दिन सचमुच सठ करोडीमल के दरवाज पर दस हजार का नोट देखने वाला की नबी ाइन लग गई और उसम सबसे पहला नबर मेरा था

अब तो यह हाल हैं कि सेठजी से भीड सभाले नही सभल रही है। और अगर यही हाल रहा नोट देखने वालो का तो जल्दी ही सेठजी क दस हजार खरे हो जाएगे और नोट भी घर का घर म पडा रह जाएगा।

इतने फायदे का सौदा शायद सेठ ी ने अपनी पूरी जिदगी मे कभी नही किया होगा। बस एक ही खतरा है और वह है आयकरवालो का। अगर उन्हे पता चल गया तो सभव है सेठ करोड़ीमल सेठ छदम्मीलाल बनकर रह जाए।

मौसम परहेज का

मौसम इतना खुशगवार है कि डम डम डिगा डिगा करने को ~ी चाहता है। लेकिन डाक्टर की राय के अनुसार मुझे परहेज करना है क्योकि मैं मरीज हू (दिल का नही डाक्टर का) और मरीज के लिए डाक्टर की राय उतनी ही महत्त्व रखती है जितनी एक पति के लिए पत्नी की।

मरीज के लिए सावन भादो चैत बैसाख सब एक समान होता है क्योकि उसे परहेज करना पडता है। परहज लाजिमी है। यह परहेज कभी कभी इस हद तक बढ जाता है कि सास लेने की बदपरहेजी भी भारी पड जाती है। डाक्टर जितनी सासे प्रेस्क्राइब करता है उससे ज्यादा लेने पर भी जिदगी की सलामती खतरे मे पड सकती है।

हा तो मैं बात कर रहा था—मौसम और परहेज की। यानी मौसम उनके लिए होता है जिन्हे परहेज न करना पडे। परहेजियो के लिए मौसम की मौसमी कैसी? लोग मौसम बदलने के साथ बदल जाते है। किसी का पलडा भारी होते देख उसी की ओर झुक जाते हैं। पिछला सब कुछ उन्हे भूल जाता है। कुछ लोगो के रग बदल जाते है कुछ लोगो के ढग बदल जाते हैं और कुछ लोगो के

समझ नही आ रहा कि क्या बदलने की बात लिखू।

बहरहाल लोग जब अगूर और सतरे की बात करते है हम लौकी की प्रतीक्षा मे पलक पावडे बिछाए सुबह से शाम कर देते है। हमारे ~िए लौकी ही अगूर और सतरा है। लौकी है तो जहान है। सच मानिए जितना समय मै लौकी की प्रतीक्षा मे बरबाद करता हू, उतना इश्क मे करता तो कुछ न कुछ हासिल हो गया होता। किसी न किसी की कृपा तो मुझ पर हो ही गई होती।

आजकल मैं पूरी तरह से लौकी पर निर्भर करता हू। मुझे और किसी चीज की चिता नही। चिना करू भी क्यो? लौकी के लिए चितित होना क्या बुद्धिजीवी को शोभा देता है? सच देखा जाए तो लौकी और बुद्धिजीवी का दूर का भी रिश्ता नही। दोनो में ईंट और कुत्ते का रिश्ता है। यानी लौकी खाने वाला कभी बुद्धिजीवी

नही हो सकता।

एक दिन अचानक मेरी तबियत खराब हो गई। उसी तरह जैसे किसी बड़े आदमी की होती है। डाक्टर उसके लिए बुलेटिन जारी करते हैं— हिज कडीशन सडेनली डिटोरिएटेड आफ्टर मिडनाइट ऐड

लेकिन मेरी कडीशन अभी ऐड पर ठहरी हुई थी। मुझे चारो तरफ अधेरा ही अधेरा नजर आने लगा। मेरी धर्मपत्नी पहली बार चितित नजर आई। वह डाक्टर को फोन करने भागी। लोटी तो उसकी आखो मे सावन भरा हुआ था। उसने मेरी ओर प्यार भरी नजरो से देखा। यहा प्यार शायद ध्यान देने लायक है उससे मेने सादा कागज लाने को कहा। वह कागज लाई तो मैंने आटोग्राफ देकर वसीयत लिख लेने को कहा। मेरे पास फालतू कामो के लिए टाइम नही था। कुछ होता तब तो वसीयत लिखने की हिम्मत करता।

थोड़ी देर बाद डाक्टर आ गए। सारा वातावरण डाक्टरमय हो गया। बात डाक्टर और मरीज के बीच चलने लगी।

डाक्टर ने पहले नब्ज देखी फिर दिल की धडकन। वह कुछ ज्यादा ही सीरियस हो गया। उसने ब्लडप्रेशर देखना शुरू कर दिया। डाक्टर ने ऐसी आह भरी जैसे मेरी तरफ से निराश हो गया है।

पत्नी ने पूछा क्या हुआ डाक्टर साहब?

कस हैज टेकेन ए सीरियस टर्न। कल रात आपने इन्हे खाने को क्या दिया था? डाक्टर ने पत्नी से पूछा।

लौकी। पत्नी बोली।

डाक्टर हैरत मे पड गया इन्होने जरूर कुछ गडबड़ की होगी वरना लौकी से हालत इतनी नही बिगडती।

पत्नी कसमे खाने लगी। लेकिन डाक्टर का मेरे प्रति सदेह कायम रहा।

अचानक मैंने करवट बदली तो तकिये के नीचे से एक कागज गिर पडा।

डाक्टर ने उस लपककर उठा लिया और पढने लगा। उसकी आखो मे एक अजीब सी चमक आ गई। उसने पूछा यह क्या है?

डाक्टर साहब यह तो म एक व्यग्य लिख रहा था।

यू मीन सटायर? डाक्टर ने पेशेवर अग्रेजी म कहा।

जी हा।

अब मै समझा कि तुम्हारी हालत इतनी खराब क्या हुई। सटायर इज डैजरस फार यार हेल्थ माइड इट।

डाक्टर अब पूरी तरह से अपने फार्म मे था।

मैंने पूछा   डाक्टर व्यग्य और हेल्थ मे क्या ताल्लुक है?

दोनो मे पक्की दुश्मनी है जब तुम लौकी खा खाकर जिदा रह रहे हो ता व्यग्य से तुम्हे परहेज करना पडेगा।

क्यो? मेने आश्चर्य से भरकर पूछा।

हा इस बार तो मेने तुम्हे ल्चा लिया दोबारा व्यग्य लिखने की कोशिश न करना वरना मै कुछ नही कर पाऊगा। पहला दोरा हलका था दूसरा बहुत सीरियस होगा

डाक्टर की बातें सुन मै एकबारगी भय से काप गया। मन ही मन दूसरे दौरे की कल्पना करने लगा।

और अब मै डाक्टर की राय के मुताबिक लौकी खा रहा हू ओर व्यग्य से पूरी तरह परहेज कर रहा हू, क्योकि मै नही चाहता कि मुझे दूसरा दौरा पडे। यहा राय मै अपने दोस्तों को देना चाहता हू कि वे लौकी खाना शुरू कर दे क्याकि अभी मौसम बरसात का है। परहेज जरूरी है। मौसम बदलने पर कुछ और सोचूगा।

कुछ समीक्षाए

इधर कुछ दिनो से हिंदी समीक्षा का स्तर बहुत गिरता जा रहा है शायद अच्छे समीक्षको की कमी हो गई है। इसीलिए बहुत ही खोजबीन के बाद बडी सूझबूझ के साथ मै चद साहित्यिक किताबो की सारगर्भित समीक्षा प्रस्तुत कर रहा हू। समीक्षा के लिए मैने ऐसी किताबे चुनी हैं जो सामान्य पाठको के लिए उपयोगी साबित होगी। एक बात और स्पष्ट कर देना चाहता हू कि समीक्षा के क्षेत्र मे बहुप्रचलित सामान्य नियमो का ध्यान रखते हुए मैंने भी इन किताबो के बारे मे जो कुछ भी लिखा है बिना पढ़े लिखा है।

शतरज के मोहरे अमृतलाल नागर

नागरजी की यह पुस्तक शतरज के बारे मे हिंदी मे पहली प्रामाणिक पुस्तक है। नवाबो की नगरी मे रहने के कारण इस खेल मे नागरजी की जानकारी बहुत ही सूक्ष्म है। उन्होंने शतरज के मोहरो का विस्तृत वर्णन करते हुए शतरज खेलने की विभिन्न प्रणालियो का रोचक शैली मे वर्णन किया है और पुस्तक को उपन्यास की तरह रोचक बना दिया है। इसको पढते वक्त ऐसा महसूस होता है कि हम शतरज खेल रहे है।

इस पुस्तक के बारे मे सबसे गोपनीय बात यह है कि इसे पढ़ने के बाद ही शतरज की विश्व चैंपियनशिप प्रतियोगिता मे फिशर ने स्पास्की को हराने में सफलता प्राप्त की थी।

खाली समय कैसे काटे—जिनके लिए यह समस्या है वे इस पुस्तक की सहायता से शतरज खेलना सीखकर अपने समय का सदुपयोग कर सकते हैं साथ साथ देश की प्रगति मे महत्त्वपूर्ण योगदान भी कर सकते हैं।

सूरज का सातवा घोड़ा डा धर्मवीर भारती

सूरज नाम के सईस के पास सात घोडे थे जिनमे सातवा बहुत ही अडियल था।

वह सूरज को बहुत ही तग करता था। एक दिन सूरज को किसी ने लेखक का पता बताया। वह दौडा दौडा लेखक के पास गया और सातवे घोडे के बारे म सब कुछ कह सुनाया।

लेखक ने अपने ज्ञान के बल पर सातवे घोडे का सूक्ष्म अध्ययन करके उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया। उसी का फल है— सूरज का सातवा घोडा । यह एक ऐसी अतर्कथा है जो लेखक को नही मुझे मालूम है।

आशा है लेखक भविष्य मे आठवा कुत्ता नौवा गीदड़ दसवा चूहा जैसी पुस्तके लिखकर साहित्य की श्रीवृद्धि मे सहायक होगा।

रास्ता इधर से है रघुवीर सहाय

जैसा कि शीर्षक से ही जाहिर है—इस पुस्तक में लेखक ने रास्तो के बारे मे जानकारी दी है। यह एक अच्छा गाइड है। आज के जमाने मे जब सभी लोग भ्रमित होकर रास्ते की तलाश मे भटक रहे है यह पुस्तक एक उपलब्धि मानी जानी चाहिए। रचनाकार को रास्तो के बारे मे इतनी जानकारी है कि ट्रैफिक पुलिस का सिपाही भी मात खा जाए।

यह पुस्तक ट्रक कार स्कूटर और थ्री व्हीलर के ड्राइवरो के लिए बहुत ही उपयोगी है। टैफिक पुलिस को चाहिए कि इस पुस्तक का नि शुल्क वितरण करके लोगो को भटकने से बचाए।

निठल्ले की डायरी हरिशकर परसाई

इस देश की आजादी का बहुत बड़ा भाग निठल्ले लोगो का है जो इस धरती पर बोझ के समान है। ऐसे लोग ऊपर से तो यह दिखावा करते है कि वे नौकरी करना चाहते है लेकिन भीतर ही भीतर यह भी चाहते हैं कि नौकरी न करनी पडे तो अच्छा है यानी वे निठल्लापन बनाए रखना चाहते है।

इस तरह जीने के लिए भी कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। तो क्या करे? आप चुपचाप डायरी लिखिए—परसाईजी की निठल्लो को यही नेक सलाह है। डायरी लिखकर छपवाइए पैसे का पैसा मिलेगा और आपका निठल्लापन भी बरकरार रहेगा। अस्तित्व भी बना रहे और कमाई भी होती रहे—इससे अच्छा और क्या हो सकता है।

परसाईजी ने भी इस डायरी से बहुत पैसा कमाया है। सरकार को यह पुस्तक बेरोजगार निठल्ले लोगो के बीच वितरण के लिए खरीद लेनी चाहिए।

बल्कि मैं तो यहा तक कहने को तैयार हू कि विश्वविद्यालयो के दीक्षात समारोहो मे डिग्री के साथ हरेक को यह पुस्तक निठल्ले की डायरी उपहार स्वरूप दी जानी चाहिए।

किसी बहाने शरद जोशी

अगर आप अपना काम बनाना चाहते है तो इस पुस्तक को जरूर पढिए हर आदमी चाहता है कि किसी बहाने उसका काम बन जाए चाहे घूस देना पडे या गधे को अकल कहना पडे। किस काम के लिए कौन सा बहाना करे इस पुस्तक मे इसी का विवरण जोशीजी ने बहुत सूक्ष्मता से गहरे पानी पैठ किया है।

बस आप किसी बहाने शरद जोशी की किसी बहाने जरूर पढ़िए वरना बाद मे जब किताब आउट आफ मार्केट हो जाएगी आपके पास हाथ मलने का ही बहाना रह जाएगा। शरद जोशी तो आपको पढने के लिए अपनी पाडुलिपि देने से रहे।

नोटनीय बात जिन पाठको के मन मे पूर्वाग्रह न हो वे इसे न पढे क्योकि मेरी समीक्षा का मूल पूर्वाग्रह (दुराग्रह) ही है।

एक ईमानदार आदमी

ही के सामने शी थी। दोनो चुप थे। एक दूसरे को ताक रहे थे। ही ने अपना हाथ टेबुल पर रख दिया। शी ने अपना हाथ गाल से चिपका लिया। ही ने उगलिया नचानी शुरू की। शी ने आखे। खामोशी नही टूटी। दोनो बुत बन गए थे। असमजस मे सिर्फ सासे आ जा रही थीं। चुप्पी दोनो मे से किसी एक को ही तोड़नी थी—तीसरा कोई था नही। ही ने शी को बडे आग्रह से बुलाया था लेकिन उसके मुह मे बर्फ जम गई थी।

ही ने बुश्शर्ट का बटन खोला। शी देखती रही। अचानक ही ने शी को देखा। आखे दो गुनी चार हो गईं। शी मुसकरा उठी। ही के माथे पर पसीना छलकने लगा। शी ने उसे अपने दुपट्टे से पोंछ दिया। ही को अपने ऊपर शर्म आ गई। वह थोडी देर होंठ फरफराता रहा फिर बोला—

रहने दीजिए।

क्या रहने दू

आखिर आप परेशान क्यो हैं?

परेशान मै नही आप हैं।

हा हा परेशान मै हू, आप भी हैं।

आपने कैसे समझ लिया कि मैं परेशान हू?

आपके चेहरे को पढ रहा हू।

ह्वाट नानसेंस फेस रीडिग?

यस! मैने साइकोलाजी की एक किताब देखी है।

यह क्या बला है?

बला नही। एक इट्रेस्टिग सब्जेक्ट है।

होगा। मुझे नही मालूम।

चुप्पी।

आपने मुझे यहा क्यो बुलाया? शी ने पूछ लिया।

मे भी यही सोच रहा हू।

एमलेस तुम्हे भी नही मालूम?

मुझे मालूम है लेकिन कह नही सकता।

क्यो?

डर लगता है।

किसका? कोई तो नही है यहा?

आपका।

आप बच्चे हैं

नही बीस साल का हू।

ओह!

क्या हुआ?

कुछ भी नही। आप बताइए न कि क्यो बुलाया है?

बताता हू बताता हू

जल्दी बोलिए। शी देर तक हसती रही।

प्यार करने के लिए।

प्यार करने के निए नजदीक आना जरूरी है?

बहुत जरूरी है।

तुम मुझे दूर से भी प्यार कर सकते थे।

दिल की बात दिल से कैसे कहता?

आखो से।

पर आखो से आवाज तो निकलती नही।

इशारा तो होता है

इशारे के लिए ट्रेनिग नही ली।

तब क्या खाक छानी है!

नही। मेरी बात मानोगी?

कसीडर करूगी।

कितने दिन लगेंगे

नाट श्योर।

फिर भी!

तीन साल।

ओह माई गाड थ्री ईयर्स इन कसीडरेशन?

और भी ज्यादा समय लग सकता है।
लेकिन इतने दिन मै करूगा क्या?
मेरी गली के चक्कर लगाना।
नही।
क्यो
कबल परेड का डर लगता है।
तब तुम्हे तीन साल इतजार करना पडेगा।
समय कुछ तो कम करो। ही गिडगिडाया।
नही हो सकता। शी उसी तरह बोले जा रही थी तीन साल के बीच मे और लोगो का टेस्ट लूगी।
टेस्ट? यह क्या होता है?
तुम्हे टेस्ट नही मालूम एग्जामिनेशन का नाम सुना है?
हू ऊ। सुना है।
वही होगा।
कितने पेपर होगे? ही ने सब कुछ मजाक के तौर पर लेते हुए हलके लहजे मे कहा।
एक पेपर। शी की आवाज मे कोई फर्क नही आया था। वह उसी तरह बोले जा रही थी और भावहीन चेहरे से ही को एकटक देख रही थी।
कितने घंटे का?
समय निश्चित नही।
कब होगा?
तीन साल के भीतर।
लेकिन मुझे तो पसीना आ रहा है। ही फिर गडबडा गया जाने क्यो दिल की धड़कन भी बढ रही है।
क्या हो गया है?
पता नही। पैर भी काप रहे हैं।
तुम टेस्ट नही दे सकते। शी की आवाज मे और सख्ती थी तुम फर्स्ट स्टेज पर ही फेल हो गए।
बिना टेस्ट के तुम प्यार नही कर सकती?
नही। आजकल हर चीज मे मिलावट होती है।
प्यार मे भी?

इसी मे सबसे ज्यादा

तब टेस्ट के अलावा और कोई चारा नही ही ने निराश मूड बनाकर कहा और अपने अगल बगल नजर डाली—कही कोई नही था। वह उठ खडा हुआ—भागने की मुद्रा मे।

शी ने उसे पकड लिया।

ही ने दात निपोरते हुए कहा मुझे जाने दो। मैं प्यार नही करूगा।

क्या बात हो गई?

मै टेस्ट से घबराता हू।

तुम कुछ भी नही कर सकते।

हा। मैं कुछ भी नही कर सकता। ही को लगा कि वह बहुत बडी बात कह गया है और अदर ही अदर बहुत खुश हुआ। उसका खयाल था कि शी भी निराशा महसूस कर रही है।

भाग क्यो रहे हो?

जिदगी मे सिर्फ टेस्ट से डरता हू। ही को महसूस हुआ कि वही हारा है। वह उदास हो गया।

डरपोक। शी खिलखिलाकर हस पड़ी।

डरपोक नही हू। सिर्फ टेस्ट की वजह से आज तक मुझे नौकरी नही मिली इसीलिए अभी तक मैट्रिक मे ही लटका हुआ हू। ही ने जैसे सत्य का उद्घाटन करते हुए कहा।

तुम बेकार हो?

हा। काम होता तो प्यार करने क्यो आता? अब ही फिर खुश हुआ।

यू ईडियट अनइम्प्लायड भाग जाओ। शी उत्तेजित हो उठी।

हा जा रहा हू। ही बडे मजे से जवाब दे रहा था।

फिर कभी मत आना।

अब प्यार मे भी टेस्ट होता है तो मै भूलकर भी नही आऊगा।

ही भागने लगता है। पीछे मुड़कर भी नही देखता। और यह सोच सोचकर खुश होने की कोशिश करता है कि उसने अपने आप को एक बार फिर ईमानदार घोषित कर दिया है।

और दुकान नही चली

इधर कुछ दिनो से मेरी चितनधारा बदल गई है। अभी तक आफ द ट्रैक हो गई थी। यहा तक कि परिवार के स्तर पर चितन मे लीन था तल्लीन था। अपनी आ मा की ओर बिलकुल ध्यान नही दिया जो बहुत दिनो से चीख चीखकर कह रही थी उठी ऊपर उठो। सिर्फ परिवार ही चितन का स्तर नही है। भारत है राष्ट्र है दुनिया है। और बहुत सी अन्य चीजे हैं उन पर चितन करो। परिवार से बाहर निकलकर देखो दुनिया बहुत बडी है। वरना कुए के मेढक बने रह जाओगे।

अपनी आ मा की आवाज कहा तक दबाता। अपनी चितनधारा बदलनी पड़ गई। क्या करता? कष्ट तो काफी हुआ पर एकरसता से पीछा छुड़ाने के लिए बहुत कुछ सहना पडता है। (पारिवारिक एकरसता तोड़नी हो तो पत्नी को उसके मायके भेज दीजिए) क्योकि मैं नही चाहता था कि कोई मुझ पर यह आरोप लगाए कि मैं परिवार के स्तर से ऊपर नही उठ सका। परिवार से बाहर न निकल सका नतीजा—दस साल में चार बच्चे हो गए यानी ढाई साल पीछे एक। लेकिन यह चोट मेरे ऊपर बहुत बुरी पड़ी है।

शायद आपको वह किस्सा याद होगा जिसमे एक आदमी को इसलिए सम्मानित किया गया था कि वह पच्चीस साल तक अपन शहर से बाहर नही निकला।

सम्मान के उत्तर मे वह व्यक्ति बोला मै अपने शहर से इतना प्यार करता हू कि इसे छोडकर बाहर जाने को जी नही चाहता। फिर भी मुझे कोई दु ख नही है। मेर घर मे पच्चीस हसते खेलते बच्चे है।

इस पर एक श्रोता ने कहा लगता है पच्चीस साल तक आप अपने घर के भी बाहर नही निकले।

में इसी तरह के आराप से बचना चाहता था। इसलिए घर और परिवार से बाहर निकलकर चितन करने लगा। लेकिन साहब सावन के अधे को हरा ही

हरा सूझता है। चूकि मै साहित्यकार हू और साहित्य मे भावुकता ने मुझे सुझाव दिया। अब साहित्य के सिवा मुझे ओर कुछ नही सुझाई देता और सच्चे अर्थो मे साहित्यकार वही है जो साहित्य ओढ़े साहित्य बिछाए साहित्य खाए साहित्य पिए। यानी मरना साहित्य के निए जीना साहित्य के लिए।

अभी तक आपने मेरी चितन प्रक्रिया देखी अब जरा चितनधारा भी देखिए। बहुत दिनो तक सोचता रहा कि ऐसा क्या कर गुजरू जिससे नाम ही नाम हो जाए (काम ही तमाम न हो जाए) और साहित्य के क्षेत्र मे ही कुछ करके मै यह नाम कमाना चाहता था। आखिर अक्ल काम कर गई। मैने साहित्य की एक छोटी सी दुकान खोलने की सोच ली। चट सोचा पट किया और दुकान खुल गई। यह पूरी तरह प्राइवेट है इसमे कोई शेयर हो डर नही है (मेरी पत्नी को छोडकर) और सबसे बडी खूबी इस दुकान की यह है कि इसमे हर तरह की साहित्यिक सामग्री मिलती है। इसका एकमात्र कारण है मेरा बहुमुखी प्रतिभा का धना होना (मेरे इस बयान पर आपको शक करने का पूरा अधिकार है)।

पहले तो मैने सोचा कि यह दुकान चलती फिरती रहे जिसमे हर इलाके के लोगो को डोर सर्विस उपलब्ध हो सके। कोई शिकायत न करे। किसी को पछतावा न हो। श्रीमतीजी से सलाह की तो उन्होंने सहमति प्रकट की। पहली बार हम पति पत्नी किसी बात पर एकमत हुए। लेकिन जब मैने यह कहा कि इसके लिए एक साइकिल खरीदनी पड़ेगी तो वह बोली साइकिल क्यो

मैंने उन्हे बताया सुबह सुबह अपनी सपूर्ण प्रतिभा अपने व्यक्तित्व में समेटकर साइकिल पर सवार होकर हाकरो की तरह हाक लगाऊगा कि टूटी फूटी शायरी की मरम्मत करवा लो नई कविताए लिखवा लो सेहरा और मर्सिया पढ़वा लो। लेकिन पहले तीन हजार रुपये लगाने पड़ेगे।

मैंने तर्क दिया तो श्रीमतीजी तैयार हो गईं—साइकिल खरीदने के लिए।

अब जरूरी था अपनी चलती फिरती दुकान का प्रचार। उसका प्रचार मैने कुछ इस तरह किया—करवाया

आपके शहर मे खुल गई साहित्य की चलती फिरती अभूतपूर्व दुकान। भरपूर फायदा उठाइए। जन्म से लेकर मौत तक का साहित्य अब आपके अपने टी दरवाजे पर—यानी सोहर सेहरा और मर्सिया—जो चाहेगे वही मिलेगा।

जिनके दो बच्चे है अगर उनके घर तीसरा होता है (और उन्हे खुशी होती है) तो उसके लिए सोहर लिखवाने पर दस प्रतिशत अतिरिक्त लगेगा। अगर मर्सिया लिखवाना हो तो उसमे दस प्रतिशत की विशेष रियायत मिलेगी (क्योंकि

मुझे भी दुखी होना पडेगा।)

सेहरे की दर वरपक्ष की माली हैसियत पर निर्भर करेगी।

विशेष आर्डर करने से भी सप्लाई किया जा सकता है।

रचनाओ की मरम्मत पर साहित्यकारों को विशेष छट दी जाएगी। (बशर्ते कि वे अपनी रचनाए जबरदस्ती न सुनाए।)

नया फी ड था काफी स्कोप था इसीलिए मैने दुकान की धुआधार पब्लिसिटी करवाई क्याकि जब तक लोगो को जानकारी न हो जाती चलती फिरती दुकान का चलना मुश्किल था। सब्र का फल मीठा होता है। मुझे भी इसका मीठा ही फल मिला।

शुरुआत मे कुछ दिनो तक जब मै गली गली रद्दावालो की तरह आवाज लगाता घूमता तो लोग मुझे यू देखते जैसे कि दिन मे उल्लू देख रहे हो। कुछ लोग तो मेरे ऊपर हसते और कुछ लोग रद्दीवाला समझकर बुला लेते। लेकिन जब मैं कहता कि मैं रद्दीवाला नही हू तो वे मुझे दुतकार देते।

लेकिन मै भी हार मानने वाला नही था। सोचा कि दुकान चलते चलते ही चलेगी और डटकर मेहनत करता। अब तो बैठकर ही आर्डर आने लगे। शादियो के मौसम में तो मैं भी शादी की घोडी या बैंड की तरह बुक होने लगा। एक एक रात मे आठ आठ सेहरे पढता। सेहरा वही होता बस वरपक्ष और कन्यापक्ष के नाम बदल देता।

लेकिन जब कोई दुकान ज्यादा चल निकलती है तो दुकानदार का दिमाग खराब हो जाता है। वह इधर उधर की मिलावट करता है। मै भी यही करने लगा। पद्य के साथ गद्य मिलाने लगा और कविता के साथ शायरी। लेकिन एक दिन मेरे साथ भी वही हुआ जो एक मिलावट करने वाले व्यापारी के साथ होता है। उस घटना ने मेरे जीवन को ही बदल दिया और फिर मैं जिस जगह था वही आ गया।

उस दिन मेरे पास बहुत से आर्डर थे। दस शादियो पर सेहरे पढने थे। मैने उस दिन एक विशेष सेहरा लिखा था— भैसे पर लदकर आया मेरे यार का सेहरा। लेकिन उस दिन श्रीमतीजी से किसी बात पर बहस हो गई और सब कुछ उलट गया।

दूल्हा घोडे पर सवार था। मैने जेब से कागज निकाला और पढना शुरू कर दिया— बिना सोचे समझे। थोडी देर तक बारातियो मे काना फूसी होती रही। मैने देखा कि कुछ लोग मुझे घूर रहे हैं लेकिन मैने उनकी तरफ ध्यान नही दिया।।

तभी एक आदमी मेरे पास आया। उसने मेरी कमीज का कालर पकडकर झकझोरते हुए कहा ऐ शायर के बच्चे! यह क्या पढ रहा है

यह क्या कर रहे हो? झटककर मेने कहा मे सेहरा पढ रहा हू।

हम बेवकूफ समझते हो? पढ रहे हो मर्सिया ओर कह रहे हो सेहरा। खुशी के मौके पर गम बिखेर रहे हो? तब तक बहुत से बाराती और घराती मेरे इर्द गिर्द जमा हो गए थे।

म चौंका। कागज की ओर देखा। सचमुच वह मर्सिया था। सही आर्डर पर गलत माल जब मे आ गया था। मैंने कहा आप गलत समझ रहे है। शादी भी आदमी के लिए मौत होती है इसीलिए मै मर्सिया पढ़ बेठा।

मेरी बात सुनकर लोगो ने कहा मारो मारो मै मौके को देखकर भागने की कोशिश करने लगा लेकिन भाग न सका। वहा मेरी जो जमकर धुनाई हुई उसकी तारीफ क्या करू? अगर थोडी देर और उसी तरह पिटाई होती रहती तो शायद वही मर्सिया मेरे भी काम आ जाता।

घर लोटा तो श्रीमतीजी मेरी हालत देखकर गश खाते खाते बोलीं क्या एक्सीडेट हो गया?

बस एक्सीडेट ही समझो। जरा आफ द टैक हो गया था।

मैंने कराहते हुए कहा। अपनी बेवकूफी की बात बताकर मै श्रीमतीजी की नजरो मे और अधिक गिरना नही चाहता था। उनकी नजरा मे वैसे भी मेरी कोई इज्जत नही है।

लेकिन साहब! जो होना था हो गया। सेहरे की जगह मर्सिया या मर्सिया की जगह सेहरा पढ़ने पर और क्या होता है? आफ द ट्रेक होने पर जो हालत होती है उसे तो आपने देख लिया न मैं तो बस यही दुआ करता हू कि मेरे साथ जो कुछ हुआ वह खुदा दुश्मनो के साथ भी न करे।

छापे का महत्त्व

हर चीज के होने का अपना महत्त्व हाता हे। उसका महत्त्व तभी पता चलता है जब वह होता है। बहुत सी बाते ऐसी होती है जो हो जाती हैं खबर बन जाती है तब हमे उनकी महत्ता का पता चलता है। हम सोचते है कि काश यह बात हमारे साथ भी हो जाती। लेकिन ऐसी बातें उन्ही के साथ होती हैं जिनकी किस्मत मे लिखा होता है। अपनी किस्मत का पन्ना तो खाली लगता है।

खैर रोना तो चलता रहेगा अब मै मुद्दे पर आ जाता हू। एक चीज होती हे छापा। म साड़ी के छापे या प्रिट की बात नही कर रहा हू। यह बड़े बडे लोगो के घरो के लिए होता है। कुछ घर छापे के कारण बडे हो जाते है और कुछ घर बड़े होते हैं इसलिए छापा पडता है। छापे से किसी के घर की असलियत का पता चलता है। पता चलता है कि वह वास्तव मे कितना बडा था। किस किस तरकीब से धन बटोरकर वह घर बडा हुआ। कितने वर्षों मे वह धन बटोरा गया। इस तरह की जानकारी से नई राह मिलती है। नई प्रेरणा मिलती है बशर्ते कोई प्रेरित होने वाला हो।

पिछले दिनो एक छापे की खबर पढी। करोड़ो की अचल सपत्ति करोड़ो की नकदी करोड़ो की जमाराशि करोडो की बेनामी सपत्ति का पता चला। यह सब पढकर जाने कितने सीनों पर साप लोट गया। पूरे मुल्क मे नाम हो गया। मा बाप का कितना योग्य सपूत है मामूली सी नौकरी में इतना कुछ कर लिया जरूर बहुत हुनरमद आदमी होगा। उससे कुछ नुस्खे सीखने की तमन्ना हर किसी के मन मे होती है। इतनी कम उम्र में उसने जो कर लिया उसका हजारवा हिस्सा भी हम तीस वर्ष की नौकरी के बाद नही कर पाए। इतना ही नहीं पडोसी भी हमे या हमारे बारे मे नही जानते। इसी को कहते है तकदीर का सिकदर। हम तो जो चाहते हे वह नही हाता आर जा नही चाहते वह होता है। चलिए उसी की बात करते ह जो हो रहा हे।

आप लोगो का एक घटना स पता चल जाएगा कि छापे का महत्त्व कितना

अधिक होता है। मुझे पता चला है कि एक बार एक व्यापारी के घर छापा डालने कुछ लोग पहुचे। घरवाले बहुत खुश हुए कि अब उनकी किस्मत भी चमक जाएगी। लेकिन उस घर से नकदी के रूप मे केवल पचास लाख रुपये निकले। इतनी कम रकम देखकर घर के बडे बूढे बहुत दु खी हो गए— पीढियो स हमारे यहा सोने चादी का कारोबार हो रहा है और रुपये निकले केवल पचास लाख खबर छपेगी लोग पढेगे तो क्या कहेगे?

घरवालो ने छापा मारने वालो से कहा आप लोग तब तक ठडा गरम पीजिए कुछ खाइए और हमे थोडा सा समय और दीजिए।

छापा डालने वाले मान गए। एक घटे बाद घर के बुजुर्ग लौटे ओर अधिकारियो के सामने साढे चार करोड रुपये नकद लाकर रख दिए।

अधिकारी हैरान हो एक दूसरे का मुह ताकने लगे। उन्हे कुछ समझ नही आ रहा था कि क्या हो रहा है? वे कुछ बोलते कि घर के एक बूढे आदमी ने कहा देखिए साहब हमारी इज्जत आप लोगो के हाथ है। उसे बचा लीजिए। हमारे घर से मि ी नकदी पाच करोड रुपये दिखा दीजिए।

अधिकारीगण असमजस मे पड गए। एक ने कहा यह तो सरासर गलत होगा। आपके घर से निकले है पचास लाख रुपये फिर हम उसे पाच करोड कैसे दिखा दे?

नही। हम लोगो की इज्जत मिट्टी मे मिल जाएगी। लोग कहेगे कि पीढियो से जिसके यहा सोने चादी का काम हो रहा हो वह इतना कगाल कि पचास लाख रुपये ही छापे मे मिले। इससे अच्छे तो वे है जिन्होने कल अपना धधा शुरू किया और आज करोडो मे खेल रहे है। एक व्यक्ति ने अधिकारियो को समझाते हुए कहा।

दूसरे व्यक्ति ने कहा पाच करोड रुपये दिखाए जाएगे तो हमारी कुछ इज्जत रह जाएगी। करोडपतियों मे गिनती तो हो जाएगी। इसलिए हम लोगो की विनती स्वीकार कर लीजिए। बडी मेहरबानी होगी।

देखा न आपने! कुछ लोग अपनी इज्जत छापे से बढ़ाने के लिए क्या क्या करते है—कर सकते है। यानी छापे से भी समाज मे आजकल प्रतिष्ठा बढ़ती है। अगर आप भी अपनी प्रतिष्ठा ढाना चाहते है तो कुछ ऐसा कीजिए जिससे छापा पडे। लोग आपके बारे मे जाने। हुनर की तारीफ करे। हमारी किस्मत मे तो केवल यही लिखा है कि ऐसी खबरे पढकर मन ही मन तरसते रहे ओर अगले भाग्यवान के नाम का इतजार करते रहे। हो सकता है कल लोग आपका नाम भजें।

अपने नेता के खिलाफ

नता और गिरगिट मे फर्क सिर्फ इतना ही होता है कि गिरगिट जानवर होता है और नेता आदमीनुमा जानवर। दोनो का स्वभाव लकिन एक जैसा होता है। रग बदलने मे दोना माहिर। नता कभी कभी गिरगिट से भी बाजो मार ले जाता है। सही मायने मे जा हर पन रग न बदले वह नेता ही नही कहा जा सकता।

एक एसा ही नता मेरे गाव मे भी है जिसे लोग सभापति कहत हे। वह लागा की जमीन फसल आदि इधर से उधर करवाता है और लडाई झगड करवाता हे। इसी क बल पर वह अपनी कुरसी की रक्षा करता है।

इस बार जब म सभापतिजी स मिला ता वह मुझे ऐसे घूरने लगे जैसे कि खा जाएगे। जब मने उनसे पूछा ता वे गुर्राकर बोले तुम फासिस्टो के एजेट हा।

वह कैसे?

कहन लगे पिछली बार तुमने मुझे बेवकूफ बनाया था। तुमने मुझसे यह कहा था कि ज पी बहुत अच्छे आदमी हैं वे भ्रष्टाचार बेरोजगारी और भुखमरी के खिलाफ आदोलन कर रहे हे।

यह आज भी सही हे। मन उन्हे समझाने की कोशिश की उनका आदोलन इसीलिए हे कि लोगो की कठिनाइया दूर हो सके।

नही तुम गलत कह रहे हो? उनका आदोलन सरकार क खिलाफ हे तुम्हारे जाने के बाद मै घूम घूमकर जे पी की तारीफ करने लगा। मैने सोचा कि जो आदमी आम आदमी का भला चाहता ह उसकी तारीफ ओर उसका प्रचार होना ही चाहिए। सभापतिजी बोले।

म उनकी बात बहुत ही ध्यान स सुन रहा था। मन कहा फिर अचानक बात क्या हो गई जो आप ज पी से नाराज हो गए?

नाराज हान वाली बात ही है। खैर तो यह हुई कि मैंन अपन जिला कमटी क चेयरमन की बात तुरत मान ला वरना अनथ हा जाता। चेयरमन साहब आए

तो गाववालो के सामने भाषण देने लगे। अत मे मे जब बोलने के लिए उठा तो मने जे पी की धुआधार तारीफ शुरू कर दी। इस बीच चेयरमैन साहब मेरी ओर इस तरह देख रहे थे जैसे मै कोई बहुत बडी गलती कर रहा होऊ

सभापतिजी। आप इसे गलत समझते है या नही?

मेरे प्रश्न के उत्तर मे उन्होने कहा अपने पास समझ नाम की चीज नही है। हमारे नेता जो कहे वह सही है।

जे पी भी तो आपके ही नेता हैं।

कतई नही हमारे नेता से हमारा मतलब है हमारी पार्टी से। इसीलिए तो मै जे पी के खिलाफ हो गया हू सभा खत्म हुई तो चेयरमैन साहब ने मुझे अलग से बुलाया और कहने लगे कि तुम्हारा दिमाग तो नही खराब हो गया है? तुम ज पी की तारीफ कर रहे है अरे। जे पी का आदोलन तो हमारे खिलाफ है हमारी कुरसी के खिलाफ है। उससे हमारी कुरसी को खतरा है। समझे कि नही उनकी बातो पर जब मैंने ठडे दिमाग से सोचा तो मुझे लगा कि जे पी गलत हैं उनका आदोलन गलत है।

सभापतिजी का बाते सुनने के बाद मेरी भी आखे पूरी तरह खुल गईं। सच्चाई को मैं समझ गया कि कोई भी नेता चाहे वह अपनी पार्टी का ही क्यो न हो अगर कुरसी के खिलाफ बोलता है तो वह गलत है।

एक दिन पति का

साल म तीन सौ चोंसठ दिन पत्नी के होते है और सिर्फ एक दिन पति का। और वह एक दिन भी ऐसे आता है जैसे आया ही न हो

मै अपने अनुभव के आधार पर एक ऐसी दास्तान सुनाने जा रहा हू, जिससे शादीशुदा लोगो को सोचने का मौका मिलेगा और जो शादी करने वाले हे उनका मार्ग निर्देशन होगा।

उस दिन मेरी आखा मे भोर के सपने तैर रहे थे। अचानक कोई मेरे बाल सहलाने लगा। बहुत सुखद अनुभव था। लगा कि कोई सपना देख रहा हू। लेकिन मन सिहर उठा कि कही मेम साहब ने मुझे जगाने का कोई नया तरीका न ईजाद कर लिया हो। पहले बाल सहलाए फिर जोर से खीच ले ओर कहे उठते हो या नही?

लेकिन ऐसा कुछ नही हुआ। धीरे धीरे आखे खोली तो मेम साहब मुसकरा रही थी। उन्होने घडी मरे सामने रख दा देखिए सात बज गए है। कब तक सोते रहेगे?

मै ाखे मल मलकर देखने लगा कि मेरे सामने वही बैठी हे जिसके साथ सात फेरे लिए थे या कोई और? लेकिन मेरी धर्मपत्नी (अधर्मपत्नी मेरी कोई नही हे) ही सामने थी जो सुबह सुबह जुबान की झाड़ से मेरी तबीयत साफ किया करती थी।

विश्वास नही हो रहा था लेकिन करना पडा। मन ही मन सोचा कि हो सकता हे पत्नी ने अपने रुख मे परिवर्तन कर लिया हो या फिर उसे गौतम बुद्ध की तरह आ मज्ञान हो गया हो।

बहरहाल मैं बहुत खुश था। अपने आप पर गर्व करने की तबीयत हो रही थी और चाहता था अपने हाथो से ही अपनी पीठ भी थपथपा दू। परतु यह इरादा मैंने पास्टपोन कर दिया। सोचा कही बाद मे पछताना न पडे।

आप ही बताइए कि जो पत्नी उठने के बाद क्रोध पुराण पढना शुरू कर

देती हो वह अगर इतनी मीठी मीठी बाते करे तो आश्चर्यमिश्रित खुशी होगी कि नही?

आपको हो या न हो लेकिन मुझे तो हुई।

खेर जैसे तैसे उठकर हाथ मुह धोया। चाय पीने लगा। वह रोज की तरह ही थी लेकिन चुस्किया लेने मे मुझे ज्यादा मजा आ रहा था। चाय की हर चुस्की पर पत्नी मुसकराहट का एक बिस्कुट मेरी ओर फेक देती और मै निहाल हो जाता। सच पूछिए तो शरमा जाता।

बाथरूम मे गया तो वहा सारी चीजे पहले से ही सजी सजाई थीं। जिनके लिए मुझे रोज दस बार चिल्लाना पडता था उनके लिए उस दिन मुझे चू भी करने का मौका नही मिला।

मे अपने को बड़ा भाग्यवान पति समझने लगा। मेरी पत्नी साक्षात् देवी लग रही थी—पुरातन भारतीय सस्कृति का प्रतीक।

आफिस जाने के लिए तैयार हुआ तो पत्नी ने पहले लच बाक्स पकडाया फिर अपने उसी कीमती धोती के आचल से जिसे उसने मुझसे कई बार डाट डपटकर खरीदवाया था (लेकिन थोडी देर के लिए कहना पडेगा कि मैने बडे प्यार से उसे भेट किया था) मेरे जूते की धूल उतारी।

आपको विश्वास नही होगा नेकिन ऐसा हुआ था। फिर चलते समय वह मुझे दस रुपये का नोट देने लर्गी।

मैने कहा पाच रुपये दो।

ले जाइए न क्या फर्क पडता है। जैसे पाच वैसे ही दस।

कई बार मना किया लेकिन दस रुपये का नोट साहब जबरदस्ती मेरी जेब मे रख दिया गया।

दरवाजे पर खड़ी हाकर उसने बच्चे के बहाने खुद टाटा किया ओर बोली देर से न आइएगा। मुझे अच्छा नही लगता।

तबीयत तो हो रन्ी थी कि आफिस ही न जाऊ। लेकिन नौकरी तो नौकरी है। सोचा—यह खुशी तो अब हमेशा के लिए मिल गई फिर क्या चिता है?

मन मे पत्नी की लिफ्ट का नाजायज फायदा उठाने का निश्चय घर से निकलते ही कर चुका था। खुशी मे मै यह भी भूल गया था कि मुझे समय से घर पहुचना चाहिए। घर पहुचते पहुचते एक घंटे की देर हो गई। लेकिन आश्चर्य पत्नी ने कुछ भी नही कहा। बडे प्रेम से बोली चाय तो आपने पी नही होगी अभी मैं बना देती हू।

मैने पत्नी को तकलीफ देना उचित नही समझा। सो मना कर दिया।

इतनी विनम्रता जिदगी मे पहली बार देखी थी। मैं तरह तरह के खयाली पुलाव बनाने लगा।

तभी पत्नी ने आकर कहा देखिए जी। आज आप आफिस से देर से क्यो आए और सुबह जो रुपया दिया था इसके बारे मे कल पूछगी। आज तो मेरा करवा चौथ का व्रत है। आज के लिए आप हमारे लिए परमेश्वर है। हिसाब तो आपसे मै कल लूगी। अभी तो चाद निकनने वाला है मै पूजा करने जा रही हू।

मेरे पैरों के तले से जमीन खिसकने लगी। सोचने लगा—अगर आज चाद हडताल कर देता तो कितना अच्छा होता

किस्सा एक बुद्धिजीवी का

एक है बुद्धिजीवी। नाम है बुद्ध प्रसाद और काम है साहित्य का कल्याण करना। आप यह साहित्य का दुर्भाग्य माने या सौभाग्य लेकिन हिंदी साहित्य उनका चिर ऋणी रहेगा।

बहुत दिनो तक बेकार रहने के बाद उन्होने साहित्यकार बनने का फैसला किया था। और करते भी क्या साहित्य और राजनीति दोनो मे जिसका मन आता है मुह मार लेता है क्योकि इनके लिए सरकारी स्तर पर किसी मानदड की स्थापना नही हुई है।

शुरू मे उन्होने सपादको को पत्र लिखना शुरू किया। अगुली पकड़ते पकडते उनका इरादा गरदन पकडने का हुआ सो उन्होने एक कहानी लिख भेजी और सपादक ने स्थानाभाव के कारण सखेद वापस की स्लिप लगाकर उसे वापस लौटा दिया। कहानी तो उन्होने जाने कहा रख दी लेकिन सपादक की चिट हमेशा जेब मे रखते थे। जो भी मिलता उसी को दिखाते और कहते— देखो सपादक तो छापना चाहता था लेकिन उसके पास जगह नही थी। तभी तो बेचारे को कहानी लौटाते वक्त दु ख हुआ वरना आज के जमाने मे कौन दूसरे के दु ख मे दु खी होता है।

ऐसे लेखक की तड़प कोई मेरे जैसा समझदार आदमी ही समझ सकता है। ऐसे लोग क्या समझेगे जो हर हफ्ते छपते हैं।

उनके दर्द को समझने के बावजूद मैं उनसे केवल सहानुभूति ही रख सकता हू। यही क्या कम है आजकल तो सहानुभूति भी बहुत महगे भाव बिकने लगी है। विश्वास न हो तो किसी से पूछकर देख लीजिए कि क्या आपके पास थोड़ी सी सहानुभूति है?

सहानुभूति थी तो थोड़ी सी लेकिन एक साह~ अभी ले गए हैं।

अक्ल कहा से लाएगे यही सोचकर मैं कुछ नही कहता।

बहस करने की उनकी क्षमता भी गजब की है। काफ्का कामू या सार्त्र

से नीचे कभी बात ही नही करते और मजाक भी करेगे तो ऐसे जैसे किसी विदेशी लेखक को कोट कर रहे हे।

इसलिए कोई भी उनके मजाक पर नही हसता।

अब देखिए नीली छतरी वाले का कमाल। उन्होने एक पत्रिका निकाल दी और बन बैठे सपादक। अब तो कहना ही क्या था। हम जैसो पर से तो उनकी नजर ही फिसल जाती थी। ठहरती थी उन पर जो उनके आगे पीछे अपनी अप्रकाशित रचनाओ का पुलिदा लेकर घूमा करते थे।

साहित्य की गगा अब उनके आफिस से गुजरने लगी।

बहरहाल कही न कही कोई चूक हो गई। देने वाले ने तो पत्रिका निकलवा दी लेकिन बजट का सोर्स अपने पास रख लिया। फिर वही हुआ जो हर नई पत्रिका के साथ होता है। बुरे दिन आने वाले थे।

एक दिन वह बुद्धिजीवी एक चक्कर मे पड गया और उसे पुलिस ने पकड लिया।

पूछताछ के दौरान उन्होंने बताया मै एक बुद्धिजीवी हू। मेरा बहुत मान सम्मान है। और तो और मे एक पत्रिका का सपादक भी हू।

पुलिस वाले थोडा नरम पड़ गए। उन लोगो ने कहा आप एक जिम्मेदार नागरिक होकर गैर जिम्मेदारी का काम क्यो करते है? अच्छा आप किसी अधिकारी को जानते है जो आपकी जमानत दे सके?

बुद्धिजीवी ने हा मे सिर हिलाया। उसने एक बहुत ही ऊचे अधिकारी का नाम बताया तो पुलिस और भी ठडी पड गई।

अच्छा तो आप उनसे फोन पर कहलवा दीजिए कि वे आपको जानते हैं।

बुद्धिजीवी ने डायरी से फोन नबर निकाला और फोन करने लगा।

हैलो हैलो

उधर से हुई हैलो

मै बोल रहा हू।

आप कौन बोल रहे हैं?

क्या आप मुझे नहीं जानते?

क्या? नही जानते? अरे आप वही है न जिन्होंने अपने उपन्यास की दो प्रतिया समीक्षा के लिए पत्रिका मे भेजी है।

तो मै अगने अक म उस उपन्यास की समीक्षा लिख रहा हू।

क्षमा कीजिएगा मे भूल गया अरे मै तो आपको जानता हू अच्छी तरह से जानता हू। आप कहा से बोल रहे हैं?

बुद्धिजीवी ने सारा किस्सा बयान कर दिया।

तो अधिकारी भागे भागे आए और बुद्धिजीवी को छुड़ा ले गए। उस दिन उसे अपने घर खाना भी खिलाया। आखिर उन्हे अपने उपन्यास की समीक्षा तो करवानी ही थी

अब सास रोककर इतजार कीजिए कि कब वह उपन्यास महान् घोषित होगा। लेकिन इसके साथ एक शर्त और है—यदि पत्रिका छपी तब

महिला क्रिकेट का आखोदेखा हाल

यह गृहवाणी है। अब हम आपको मुहल्ले के तिकोना पार्क मे लिए चलते है जहा महिलाओ का क्रिकेट मैच अब से कुछ देर बाद होने वाला है ओवर टु तिकोना पार्क

मे तिकोना पार्क से बोलते हुए श्रोताओ का अभिवादन करता हू तथा उन्हे नए वर्ष की शुभकामनाए देता हू। अभी मैच शुरू होने मे कुछ देर है इसलिए तब तक मै आपको इस मैच की कुछ विशेषताए बताए देता हू।

इस मैच मे खिलाड़ियो की सख्या अनिश्चित है। कोई भी महिला चाहे वह दर्शक ही क्यो न हो पिच पर पहुचकर बल्लेबाजी कर सकती है और अपने हाथ दिखा सकती है। इस मैच मे अपायर ने सीटी बजाकर फैसला देने का निर्णय किया है क्योकि वह किसी महिला पर उगली नही उठाना चाहता। सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि पुरुषो के लिए विशेष दीर्घा बनाई गई है और उनकी सुरक्षा तथा सुविधा का विशेष प्रबध किया गया है।

अच्छा तो अब हम आपको पिच पर लिए चलते है क्योकि फीि्डग की व्यवस्था बडी ही दिलचस्प है। चार महिलाए इस समय पिच पर गप्पें मारने मे मशगूल है। बाउड्री पर खड़ी यह महिलाए किसी फि्मी पत्रिका मे एक नौजवान हीरा की रगीन तसवीर देखकर आहे भर रही हैं। गली मे आठ महिलाए खडी हैं और गलियो म बीती अपनी जिदगी के बारे म बतिया रही हैं। यह तो रही फीि्डग की सजावट लेकिन बल्लबाज और गेदबाज का अभी तक पता नही है। दर्शक दीर्घा से सीटिया बज रही ह। कुछ लोग केले और मूगफली के छिलके मैदान मे फेक रहे हैं।

अपायर बचारा बार बार सीटी बजाकर अनुशासन बनाए रखने का प्रयास कर रहा है लेकिन कोई उसकी सीटी पर ध्यान नही दे रहा है। देखिए एक कुत्ता कही से मैदान मे घुस आया है। सभी महिलाए जान बचाकर भाग रही हैं जो हिम्मती है वे ऊन के गोले से कुत्ते को धमका रही है। पुरुष दीर्घा मे उछलकूद

ढ ग ू
गया है। वातावरण पुन क्रिकेटमय हो गया है। लगता है मैच शुरू होने वाला है क्योकि एक महिला पिच पर बेलन लिए खडी है। अपायर से उसकी कुछ बातचीत हो रही है। अपायर उसे बल्ला दे रहा है लेकिन वह बेलन से ही शायद खेलने की जिद कर रही है क्योकि ुसका हाथ बेलन पर ज्यादा सधा हुआ है। हारकर अपायर लौट जाता है और वह महिला बेलन लिए गेदबाज का इतजार करने लगती है

अभी थोडी देर पहले इस मैच की सयोजिका आई थी। उन्होने कुछ रोचक और महत्त्वपूर्ण जानकारिया दी जो मैं आपको बताए दे रहा हू। कम से कम कुछ बोरियत तो कम होगी। उन्होने बताया कि इस मैच मे हर महिला को सिर्फ एक ओवर ही खेलने का मौका दिया जाएगा क्योकि खेलने वालो की सख्या बहुत अधिक है। सयोजिका ने यह भी बताया कि इस समय जो महिला बल्लेबाजी करने जा रही है उसी का पति अपायर भी है—यानी पत्नी खेल रही है और पति उसके भाग्य का निर्णायक है। बडी मजेदार स्थिति है इस मैदान पर। बस जो देर है वह खेल शुरू होने मे ही है

जिन लोगो ने ापना सेट देर से आन किया हो उन्हे मै बता देना चाहता हू कि मैच अभी शुरू नहीं हुआ है लेकिन शुरू होने के बाद ख म कब होगा कहा नही जा सकता। इसलिए श्रोताओं से निवेदन है कि वे राशन पानी साथ लेकर सेट के पास बैठे क्योकि मैच का हर पल रोमाचक होगा

अपायर ने जोर से सीटी बजाई है जिससे लगता है कि मैच शुरू होने जा रहा है। बल्लेबाज गेदबाज और फी डर सभी तैयार हो चुके हैं। गेदबाज अपने बालिग मार्क से चलकर पहले ओवर की पहली गेद फेकती है। गेंद अपायर के पास टप्पा खाकर सीधे बाउड्री पर पहुच गई। शोर सुनकर बाउड्री पर खड़ी महिलाए गेद की ओर देख रही हैं। कुछ देर की आपसी बहस के बाद एक महिला ने गेद उठा ली है और अब वह धीरे धीरे विकेटकीपर की ओर आ रही है। विकेटकीपर को उसने गेद दे दी है जिसने बालर को अपने पास बुलाकर गेद उसके हवाले किया। पहले ओवर की एक गेद फेकी जा चुकी है लेकिन अभी तक एक भी रन नही बना है। स्कोरबोर्ड शून्य पडा है।

इस ओवर की दूसरी गेद फेकने के लिए गेदबाज अपने बॉलिग मार्क की ओर रवाना हो चुकी है। वह राउड द विकेट गेद फेकने जा रही है उसने गेद फेकी। बहुत अच्छी गेंद यह पैरतोड़ (लेगब्रेक) गेद थी जो बल्लेबाज के पैर

पर जाकर लगी है। बल्लेबाज हाय हाय कर लगड़ा रही है। अपायर भागकर उसके पास जा रहा है। अब वह अपनी पत्नी के पैर सहला रहा है। खेल थोड़ी दर के लिए रुक गया है। बडा ही मनोरम दृश्य उपस्थित हो गया है। पत्नीभक्ति का इससे अच्छा सजीव नमूना इतिहास मे ढूढे नही मिल सकता

अपायर और खिलाडी फिर अपनी अपनी जगह पर पहुच गए हैं। ओवर की तीसरी गेद फेकी जाने वाली है। तीसरी गेद फेकी गई। वह बल्लेबाज के बेलन के भीतरी किनारे को छती हुई दस मीटर दूर खड़ी फी डर की शाल मे गिर पडती है। सभी फी डरो की ओर से कैच की अपील होती है तथा अपायर सीटी बजाकर बल्लेबाज को आउट घोषित करता है

बल्लेबाज अपायर के निर्णय पर प्रोटेस्ट करती है। महिलाए दो गुटो मे बट गई हैं—एक गुट अपायर के निर्णय को सही और दूसरा गलत बता रहा है। तू तू मै मे शुरू हो चुकी है। एक दूसरे का इतिहास अब दोहराया जा रहा है। दर्शक बढावा दे रहे है। अपायर की सिट्टी पिट्टी गुम हो चुकी है। उसने सीटी बजाकर बेकार मे ही मुसीबत मोल ले ली है।

अचानक फी ड मे भगदड मच गई है। समझ मे नही आ रहा है कि क्या हो रहा है। अब मुझे दिखाई दे रहा है कि बल्लेबाज बेलन लेकर अपायर को खदेड रही है और अपायर सीटिया बजाता हुआ भाग रहा है। दर्शक तालिया बजा रहे हैं। कुछ महिलाए भी अपायर के पीछे भाग रही हैं लेकिन अपायर उनकी पकड से दूर निकल गया है। उसका कही अता पता नही है। महिलाए भी अब फी ड से धीरे धीरे बाहर जा रही हे। दर्शक भी जा रहे है। वे बहुत खुश है कि उन्हे इतना अच्छा खेल देखने को मिला

श्रोताओ अब मैदान पूरी तरह से खाली हो चुका है। एक रोचक और रोमाचक मैच बीच में ही स्थगित हो गया हमें दु ख है कि एक ओवर का भी आखोदेखा हाल आपको नही सुना सके। लेकिन हमे सबसे ज्यादा चिता उस अपायर की है जिसने अपनी बल्लेबाज पत्नी को आउट दिया है आइए हम प्रार्थना करे कि उस पर कोई विपत्ति न आए क्योकि घर के भीतर उसकी जो दुर्गति होने वाली है उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। आखोंदेखा हाल तो मै सुनाने से रहा

अच्छा तो इन शब्दों के साथ हम आपको गृहवाणी स्टूडियो वापस लिए चलते हैं कि आशा है निकट भविष्य म ही इसी तरह के किसी और रोचक मैच का हाल सुनाने के लिए हम फिर हाजिर होगे

हुइ ह अ मू कु फ कु द स भाग गया है। वातावरण पुन क्रिकेटमय हा गया है। लगता है मैच शुरू होने वाला है क्योकि एक महिला पिच पर बेलन लिए खडी है। अपायर से उसकी कुछ बातचीत हो रही है। अपायर उसे बल्ला दे रहा है लेकिन वह बेलन से ही शायद खेलने की जिद कर रही है क्योकि उसका हाथ बेलन पर ज्यादा सधा हुआ है। हारकर अपायर लौट जाता है और वह महिला बेलन लिए गेदबाज का इतजार करने लगती है

अभी थोडी देर पहले इस मैच की सयोजिका आई थी। उन्होने कुछ रोचक और महत्त्वपूर्ण जानकारिया दी जो मैं आपको बताए दे रहा हू। कम से कम कुछ बोरियत तो कम होगी। उन्होने बताया कि इस मैच मे हर महिला को सिर्फ एक ओवर ही खेलने का मौका दिया जाएगा क्योकि खेलने वालो की सख्या बहुत अधिक है। सयोजिका ने यह भी बताया कि इस समय जो महिला बल्लेबाजी करने जा रही है उसी का पति अपायर भी है—यानी पत्नी खेल रही है और पति उसके भाग्य का निर्णायक है। बडी मजेदार स्थिति है इस मैदान पर। बस जो देर है वह खेल शुरू होने मे ही है।

जिन लोगो ने अपना सेट देर से आन किया हो उन्हें मै बता देना चाहता हू कि मैच अभी शुरू नही हुआ है लेकिन शुरू होने के बाद ख म कब होगा कहा नही जा सकता। इसलिए श्रोताओ से निवेदन है कि वे राशन पानी साथ लेकर सेट के पास बैठे क्योकि मैच का हर पल रोमाचक होगा

अपायर ने जोर से सीटी बजाई है जिससे लगता है कि मैच शुरू होने जा रहा है। बल्लेबाज गेदबाज और फी डर सभी तैयार हो चुके हैं। गेदबाज अपने बॉलिग मार्क से चलकर पहले ओवर की पहली गेद फेकती है। गेद अपायर के पास टप्पा खाकर सीधे बाउड्री पर पहुच गई। शोर सुनकर बाउड्री पर खडी महिलाए गेद की ओर देख रही है। कुछ देर की आपसी बहस के बाद एक महिला ने गद उठा ली है और अब वह धीरे धीरे विकेटकीपर की ओर आ रही है। विकेटकीपर को उसने गेद दे दी है जिसने बालर को अपने पास बुलाकर गेद उसके हवाले किया। पहले ओवर की एक गेद फेकी जा चुकी है लेकिन अभी तक एक भी रन नही बना है। स्कोरबोर्ड शून्य पडा है।

इस ओवर की दूसरी गेद फेकने के लिए गेंदबाज अपने बॉलिग मार्क की ओर रवाना हो चुकी है। वह राउड द विकेट गेद फेकने जा रही है उसने गेद फेंकी। बहुत अच्छी गेद यह पैरतोड (लेगब्रेक) गेद थी जो बल्लेबाज के पैर

पर जाकर लगी है। बल्लेबाज हाय हाय कर लगडा रही है। अपायर भागकर उसके पास जा रहा है। अब वह अपनी पत्नी के पेर सहला रहा हे। खेल थोडी देर के लिए रुक गया है। बडा ही मनोरम दृश्य उपस्थित हो गया है। पत्नीभक्ति का इससे अच्छा सजीव नमूना इतिहास मे ढूढे नही मिल सकता

अपायर और खिलाडी फिर अपनी अपनी जगह पर पहुच गए है। ओवर की तीसरी गद फेकी जाने वाली है। तीसरी गेद फेकी गई। वह बल्लेबाज के बेलन के भीतरी किनारे को छूती हुई दस मीटर दूर खड़ी फी डर की शाल मे गिर पडती है। सभी फी डरो की ओर से कैच की अपील होती है तथा अपायर सीटी बजाकर बल्लेबाज को आउट घोषित करता है

बल्लेबाज अपायर के निर्णय पर प्रोटेस्ट करती है। महिलाए दो गुटो मे बट गई हैं—एक गुट अपायर के निर्णय को सही और दूसरा गलत बता रहा है। तू तू मैं मै शुरू हो चुकी है। एक दूसरे का इतिहास अब दोहराया जा रहा है। दर्शक बढावा दे रहे हे। अपायर की सिट्टी पिट्टी गुम हा चुकी है। उसने सीटी बजाकर बेकार मे ही मुसीबत मोल ले ली है।

अचानक फी ड मे भगदड मच गई है। समझ मे नही आ रहा है कि क्या हो रहा है। अब मुझे दिखाई दे रहा है कि बल्लेबाज बेलन लेकर अपायर को खदेड रही है और अपायर सीटिया बजाता हुआ भाग रहा है। दर्शक तालिया बजा रहे है। कुछ महिलाए भी अपायर के पीछे भाग रही हैं लेकिन अपायर उनकी पकड से दूर निकल गया है। उसका कही अता पता नही है। महिलाए भी अब फी ड से धीरे धीरे बाहर जा रही है। दर्शक भी जा रहे हैं। वे बहुत खुश है कि उन्हे इतना अच्छा खेल देखने को मिला।

श्रोताओ अब मैदान पूरी तरह से खाली हो चुका है। एक रोचक और रोमाचक मैच बीच मे ही स्थगित हो गया हमे दु ख है कि एक ओवर का भी आखोदेखा हाल आपको नही सुना सके। लेकिन हमें सबसे ज्यादा चिता उस अपायर की है जिसने अपनी बल्लेबाज पत्नी को आउट दिया है। आइए हम प्रार्थना करे कि उस पर कोई विपत्ति न आए क्योकि घर के भीतर उसकी जो दुर्गति होने वाली है उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। आखोंदेखा हाल तो मै सुनाने से रहा

अच्छा तो इन शब्दो के साथ हम आपको गृहवाणी स्टूडियो वापस लिए चलते है कि आशा है निकट भविष्य मे ही इसी तरह के किसी और रोचक मैच का हाल सुनाने के लिए हम फिर हाजिर होंगे

एक जिम्मेदार आदमी

ठाकुर साहब बिस्तर पर पड़े अपनी आखिरी सासे गिन रहे थे आसपास तमाम लोग खडे थे। कुछ गाव के थे कुछ रिश्तेदार। ठाकुर साहब की अपनी कोई ओलाद नही थी। पत्नी पहले ही मर चुकी थी। उनकी बहन का एक लडका था जिसे वे बहुत स्नेह करते थे और उसी का अपनी सारी जायदाद सौपना चाहते थे।

जब भी वे आखे खोलते लोग सोचत यह शायद अतिम बार हो। लेकिन वे भीड मे कुछ तलाशते और आखे फिर बद कर लेते। लोग सास रोके बडी बेसब्री ने ठाकुर के अत की प्रतीक्षा कर रहे थे।

तभी एक युवक आया। हाफता हुआ पसीने मे डूबा। वह चीख मारकर ठाकुर के पैरो पर गिर पडा मामाजी

और थोड़ी देर के लिए सभी लोग सिसकने लगे।

ठाकुर साहब ने आखे खोली आ गए बेटा। मैं तो समझ रहा था कि तुम्हे देखे बिना ही मर जाऊगा।

आप कैसी बाते कर रहे है नवयुवक ने कहा।

बेटा मेरे पास आओ। तुमसे कुछ बाते करनी हैं।

नवयुवक उनके पास जाकर बैठ गया।

वे धीरे से बोले देखो अब चला चली की बेला है। मुझे अपना सब किया धरा याद आ रहा है। लग रहा है कि शरीर मे कोई गरम गरम सलाखें चुभो रहा है।

आप इन बातो को छोडिए और यह याद कीजिए कि कही सोना चादी या रुपये तो छिपाकर नही रखे है नही तो आप चले जाएगे और वह धन किसी के काम नही आएगा। अच्छी तरह दिमाग पर जोर देकर सोच लीजिए।

बेटा

फिर भी हो सकता है कि नवयुवक ने जासूस के से लहजे मे कहा।

ठाकुर साहब को खासी आई। वे कुछ रुककर बोले बेटा मैं यही नही

समझ पा रहा हू कि यह सब कौन सभालेगा।

क्या? नवयुवक उत्सुक हो गया।

यह मकान?

मैं सभालूगा।

यह खेती बारी?

मै सभालूगा।

यह इतनी बडी जायदाद?

मै सभालूगा।

और

आप चिता न कीजिए मै सब सभाल लूगा।

नही बेटा। मेरे ऊपर आठ दस हजार का कर्जा है उसका क्या होगा?

नवयुवक ने चट आसपास खडे लोगो की ओर देखा और कहा इतनी सारी जिम्मेदारिया मैं एक साथ कैसे सभाल सकता हू? आखिरी बात के लिए आप लोगो मे कोई हा क्यो नहीं बोलता?

ठाकुर साहब की आखे बद हो चुकी थी।

वह नवयुवक रो रोकर कह रहा था हाय सब कुछ तो मै सभाल लूगा लेकिन आठ दस हजार कर्ज का क्या होगा? उसे कौन भरेगा?

कुरुक्षेत्र से गुजरते हुए

धृतराष्ट ने भराई हुई आवाज मे कहा   हे सजय कुरुक्षेत्र मे अब क्या हो रहा है?

महाराज! मेरी दिव्यदृष्टि अब समाप्त हो गई और कुछ भी नही दिखाई दे रहा है। सजय ने हाथ जोडकर कहा।

सजय क्या यह दिव्यदृष्टि तुम्हारे पास मेरे प्रिय दुर्योधन की मृत्यु का समाचार सुनान के लिए ही थी? धृतराष्ट झल्ला उठते है।

नही महाराज महर्षि वेदव्यास ने कुरुक्षेत्र के ऊपर स्थित सेटेलाइट से एक विशेष चेनल केवल अठारह दिन के लिए मुझे दिया था। अब उसका अनुबध समाप्त हो गया।

क्या? यह तुमने मुझे उस समय क्यो नही बताया? मैं भी उनके पैरो पर गिरकर एक चैनल अपने लिए ले लेता।

महाराज! वेदव्यासजी ने मना कर दिया था कि मैं यह किसी को न बताऊ।

क्यो सजय क्यो? उन्होने ऐसा क्यों किया

सजय बोला   महाराज मैं इस बारे मे कुछ नही कह सकता।

तुमने यह सत्य अपने राजा से छिपाया। सजय! इस अपराध के लिए मैं तुम्हे कभी क्षमा नही कर सकता।

महाराज! आप जो चाहे दड दे लेकिन मुझे सत्य कहने के लिए विवश मत कीजिए? सजय उसी तरह हाथ जोडे खडा रहा।

तुम तो हमेशा सत्य ही बोलते रहे सजय! अब इसे क्यो छिपा रहे हो?

महर्षि ने कहा था कि यह रहस्य अगर तुम किसी से बताओगे तो दिव्यदृष्टि समाप्त हो जाएगी और सेटेलाइट चैनल स्वत कट आफ हो जाएगा।

अच्छा सजय! यह बताओ कि क्या इस युद्ध के लिए इतिहास मुझे भी

दोषी ठहराएगा?

इतिहासकार भी तो इतिहास को अपनी सुविधानुसार तोड मरोडकर पेश करते हैं न?

महाराज यह मे कैसे कह सकता हू। यह तो इतिहास लिखने वाले ही बता सकते ह। लेकिन मैं एक सेवक के नाते कह सकता हू कि आप इस युद्ध को शुरू मे ही रोक सकते थ।

मुझ दृष्टिहीन के हाथ मे था ही क्या

आपके पास हस्तिनापुर का मकुट था और आपके आदश के बाद किसी को कुछ विपरीत करने का साहस नही होता।

लेकिन मै किसी भी मूल्य पर अपने को महाभारत के लिए दोषी नही सिद्ध करने दूगा।

म क्या कह सकता हू, महाराज?

सजय तुम सत्य कह सकते हो लेकिन कहना नही चाहते।

नही महाराज। ऐसा मत कहिए मैं आपका सेवक हू।

फिर दोनो चुप हो गए।

थोडी देर बाद धृतराष्ट्र ने कहा सजय मे दृष्टिहीन हू। मैं कुछ नही देख सकता। ऐसे व्यक्ति को केवल वही बाते प्रिय लगती हैं जो उसके प्रिय की होती हैं या उसके लिए प्रिय होती हैं।

लेकिन महाराज आप हस्तिनापुर के राजा भी हैं। राजा को केवल अपने लिए नही जनहित मे सोचना चाहिए।

म भी एक मनुष्य ही तो हू, सजय मानव स्वभाव की कमजोरी मुझमे भी तो आ सकती है

वह सही है महाराज लेकिन आपको लोग अनिर्णय के लिए दोषी ठहराएगे। दोष किसी का भी हो लेकिन दोषी राजा ही माना जाएगा।

सजय। अब तुम भी मुझे विदुर की भाति राजधर्म समझा रहे हो

नही महाराज मै केवल वस्तुस्थिति स्पष्ट कर रहा हू।

सजय मै सिद्ध कर सकता हू कि महाभारत कराने में मेरा हाथ नहीं था।

वह कैसे महाराज?

सुनो मैं तो दृष्टिहीन हू, लेकिन तातश्री कुलगुरु कृपाचार्य और गुरु द्राणाचार्य—सभी तो उस सभा मे थे जिसमे कुलवधू द्रौपदी का अपमान हुआ था। मै तो कुछ देख नही रहा था लेकिन ये लोग तो देख रहे थे। इन लोगो ने कुछ किया क्यो नही?

महाराज राजसभा मे राजाज्ञा के बिना कोई नही बोल सकता। और फिर द्यूतक्रीडा तो आपकी ही अनुमति से हुई। शेष घटनाए तो बाद मे हुई।

सुनो सजय अगर तातश्री कुलगुर कृपाचार्य गुरु द्रोणाचार्य आदि खडे हो जाते तो क्या मेरा दुर्योधन उनकी बात काट देता?

मै इस बारे मे कुछ नही कह सकता लेकिन जब राजा सिहासन पर बैठा हो तो किसी को बोलने का साहस नही हो सकता

तुम्हारे कहने का तात्पर्य यह है कि मेरी ही भूल के कारण इतना बडा युद्ध हुआ। लेकिन मै स्वय को दोषी नही मानता। तुमने यह कहावत सुनी होगी कि आखोदेखी बात सच और कानोसुनी बात झूठी होती है।

हा महाराज

तो मने कुछ देखा ही नही। जो हुआ उसके बारे मे केवल दूसरो से सुना।

किंतु आपके बारे मे यह बात लागू नही हाती क्योंकि आपको अपनो ने ही सुनाया था।

नही सजय मैने तो अपने बचाव का रास्ता ढढ लिया है। मेने कुछ भी नही देखा। औरो की तरह केवल सुना है। अब मै यह कह सकता हू कि महाभारत के पीछे उनका ह'थ था जो दख सकते थे और दृष्टि होते हुए भी दृष्टिहीन हो गए जबकि मै तो सचमुच दृष्टिहीन हू राजसभा मे बैठे लोगो मे राजा का विरोध करने का सा‾स भी हाना चाहिए क्यो सजय?

और सजय के मुख से एक भी शब्द नही निकला





राजेन्द्र श्रीवास्तव

जन्म सन् 1942 की क्राति के दौरान। जिला बस्ती (उत्तर प्रदेश) के एक सुनसान इलाके के मात्र चार घरावाले गाव मे।

शिक्षा गोरखपुर और वाराणसी से क्रमश अर्थशास्त्र और समाजकार्य मे स्नातकोत्तर उपाधि।

कर्मक्षेत्र शिक्षा प्राप्त करने के उपरात दिल्ली महानगर की भीड़ भाड़ मे। कुछ मित्रो के माध्यम से 1965 मे सरिता मुक्ता (दिल्ली प्रेस) मे नौकरी मिल गई। 1976 से समाचार सवाद समिति मे कार्य किया। 1978 मे समाचार सवाद समिति भग हो जाने पर समाचार भारती मे पत्रकारिता करते रहे। अतत 1982 से यू एन आई की हिदी सवाद समिति यूनीवार्ता से जुड़ गए।

प्रकाशित कृतिया

अब फाइले नही रुकती दास्ताने दफ्तर
● एक और स्वर्ण जयती (तीनों व्यग्य सग्रह)।

सप्रति यूनीवार्ता में मुख्य समाचार सपादक के पद पर कार्यरत।